मासिक पत्रिका

वर्ष-1, अंक-7 अप्रैल 2004

मूल्य 10/-

सिंधू महक




"tell us what's
sexy!"
IN TOWN
HER"n"HIS
HER"n"HIS
71, Jyoti Shopping Center, M.P. Nagar, Zone-1, Bhopal. Tel. : 2591155, 3090883 (S) Mob. : 3132767


extreme
concepts
At
Her Collection
8, Judge Colony, Idgah Hills, Bhopal. Ph. : 3136234, 3090883
Her Collection

मासिक पत्रिका

सिंधू महक

वर्ष-1 अंक-7 अप्रैल-2004

जगदीश कुमार रायचंदानी
प्रबंध निदेशक

❖

धर्मप्रकाश तेजा
सम्पादक

❖

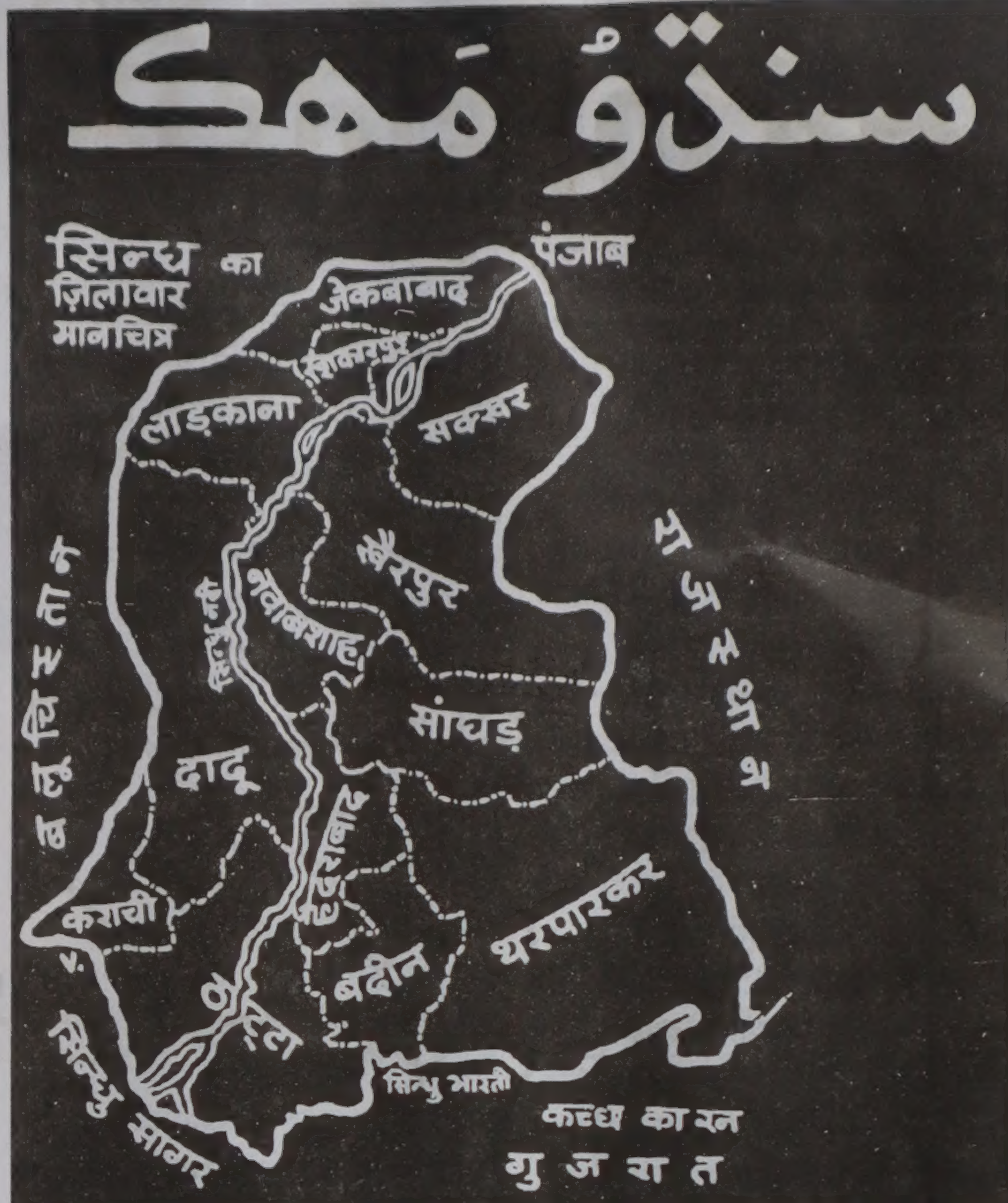
कमलेश रायचंदानी
बसंत चेलानी
(सलाहकार)
राकेश वरंदानी
(सहयोगी)

❖

रेखांकन-साज सज्जा
लेक सिटी ग्राफिक्स, भोपाल

❖

कार्यालय
न्यू-बी-4 (द लॉयन सिटी परिसर),
संत लीलाशाह मार्ग, बैरागढ़, भोपाल
फोन : 5244892
मोबाईल : 9826313045



- समाज के समाचार पत्र-पत्रिकाओं को खरीदकर पढ़ना एवं सहयोग देना आप सभी का कर्तव्य है। पाठकों का थोड़ा-थोड़ा सहयोग भी पत्र-पत्रिकाओं के लिये उनके प्रकाशन की निरंतरता को बनाये रखने में अत्यधिक सहयोगी सिद्ध होता है।
- अत: सम्माननीय बंधुओं से आग्रह है कि अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनकर सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही अपने उद्योग/संस्थान/या व्यक्तिगत विज्ञापन देकर अपने व्यवसाय को गति प्रदान करें, थोड़ा-थोड़ा प्रचार भी आपके व्यवसाय को अत्यधिक लाभ प्रदान कर सकता है।

-सम्पादक

❖ **एक पल का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता है।**

❖ **ईश्वर के अतिरिक्त सब कुछ नश्वर है।**

-विशनदास चेलानी (कटनी)

स्वात्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक-धर्मप्रकाश तेजा द्वारा प्रगति ऑफसेट प्रिंटर्स, जेल रोड, जहांगीराबाद, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक-धर्मप्रकाश तेजा फोन : 5244892 मोबा. : 9826313045 विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल होगा)

भाग-6

सिंध का इतिहास

• लेखक-मोहन गेहाणी

• अनुवादक-खीमन यू. मूलाणी

(गतांक से आगे)

अध्याय -24

कल्होड़ों का शासन
(सन 1700 से सन 1784 ई. तक)

कल्होड़ा जाति के लोग अपने वंश का संबंध इस्लाम के पेगम्बर चाचा अब्बास से स्थापित करते हैं। इसलिये इन्हें अब्बासी भी कहा जाता है। सैयद होने के कारण उनके चेले भी रहे हैं। रिचर्ड बर्टन ने अपनी पुस्तक ''सिंध'' में लिखा है कि कल्होड़ा जाति के लोग नव मुस्लिम राजपूत चन्ना जाति के है। यह संभव है कि शताब्दियों की गुलामी और हीन भावना को छिपाने के लिये उन्होंने अपने को अरबों से संबंधित कर दिया हो, जैसे शिवाजी ने सिंहासन पर बैठते समय ब्राह्मणों को इनाम और उपहार देकर अपने को क्षत्रिय घोषित करवाया था। परन्तु यह वास्तविकता है कि ये लोग कई वर्षों से सिंध में रह रहे थे। और उनका बुजुर्ग कलूर नामक गांव में आकर बसा था। जिससे वे कल्होड़ा कहलाये।

मुगलों के समय में उनकी यजमानी तथा जमींदारी चलती थी। ये लोग धीरे-धीरे शक्तिशाली होते गये और सन् 1701 ई. में दिल्ली दरबार ने मियां यार मोहम्मद को ''खुदा यार खान'' की उपाधि प्रदान कर सिंध का सूबेदार नियुक्त किया था। उनकी राजधानी खुदाबाद थी। बखर और ठट्टा के नवाबों में इतनी शक्ति और हिम्मत नहीं थी कि वे उन्हें अपने अधीन कर सकें। शाह इनायत जिस युद्ध में शहीद हुआ, उसमें ठट्टा के नवाबों के साथ कल्होड़ा लोगों ने भी भाग लिया था। इस प्रकार उन्हें दुबे नामक क्षेत्र जागीर में मिला। उन्होंन प्रथम 9 वर्ष तक गृह युद्धों और हत्याअ‍ का सामना करते बिताये। बाद के 7-8 वर्ष आराम से देश की व्यवस्था सुधारने का प्रयत्न करते हुए बिताये। वह सन् 1718 ई. में मर गया। बाद में मियां नूह मोहम्मद खान सन् 1719 ई में शासक बना। जैसे कि प्राय: होता आया है, उसे भी पहले भाईयों के साथ युद्ध करने पड़े। सन 1740 ई. में नादिर शाह ने सिंध पर आक्रमण किया। नूर मोहम्मद अपनी राजधानी छोड़कर अमरकोट की ओर चला गया। और उसने आदेश दिया कि जो वस्तु जहां पड़ी हो वहीं जलाकर खजाने को भूमि में गढ़ा दिया जावे। परन्तु





नादिर शाह को यह बात पहले ही मालूम हो गयी। और कल्होड़ों की युक्ति सफल नहीं हुई। अंत में नादिर शाह को एक करोड़ नकद और हीरे जवाहर देकर उन्हें अपनी जान छुड़ानी पड़ी और बीस लाख रुपये वार्षिक कर अलग। कहते हैं कि नादिरशाह एक लाख सेना के साथ ठटटा नगर में रुका, फिर भी ठट्टा नगर में आटे की कमी नहीं हुई। नादिरशाह के आक्रमण ने सिंध को धन लेने के अलावा जो हानि पहुंचाई वह यह थी कि उसने सिंध को तीन भागों में विभक्त कर दिया। सिबी और कच्छ का इलाका कलात के शासक को दिया। शिकारपुर का क्षेत्र सादिक मोहम्मद खान दाउद पोटा को और शेष सिंध का क्षेत्र मियां नूर मोहम्मद कल्होड़ा को सौंपा। इस प्रकार भविष्य के युद्धों का बीज बोया गया इसके अलावा मियां नूर मोहम्मद कल्होड़ा के एक पुत्र को दो हजार सिपाहियों के साथ हमेशा नादिरशाह के साथ रहने की। शर्त स्वीकार की गयी। परन्तु बाद में उसके तीनों पुत्रों को वहीं रहना पड़ा।

नादिरशाह की मृत्यु के बाद अहमद शाह अब्दाली ने फिर आक्रमण कर दिया। और नूर मोहम्मद को विवश किया कि जो वार्षिक धन नादिर शाह को देता था, वह उसे भी दे। इस प्रकार एक और विदेशियों के आक्रमण और लूट पाट चली तो दूसरी ओर गृह युद्धों के कारण सिंध की स्थिति कमजोर होती चली गई।

इस सिलसिले में एक रोचक किस्सा प्रसिद्ध है। मियां नूर मोहम्मद कल्होड़ा ने दीवान गिद्रूमल को विशेष प्रतिनिधि बनाकर अहमद शाह अब्दाली के पास भेजा। वह बहुमूल्य उपहारों के साथ सिंध की मिट्टी के बोरे भी भरवाकर ले गया। जब अब्दाली ने उससे पूछा कि इसमें क्या है, तो दीवान ने उत्तर दिया। कि इसमें अमूल्य उपहार है। सिंध की इस मिट्टी में कई दर्वेशों की खाक मिली हुई है।

मियां नूर मोहम्द ने अपनी संतान के लिये एक वसीयत तैयार की थी। आज भी यह एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। उसका एक अंश निम्नानुसार है। राजनीति से पलायन करने का अर्थ होगा। रियासत की कमजोरी। क्योंकि रियासत की सफलता के लिये राजनीति आवश्यक है। न्याय संबंधी प्रत्येक बात में अपने को और दूसरों को एक ही दृष्टि से देखना चाहिए। अच्छे समय में परलोक की चिंता तथा बुराई के समय में अच्छाई की चिंता करनी चाहिए। आप लोगों का भलाई पूर्णतया चरित्र और प्रेम में है। पहले आपकी गर्दन पर गरीबों निराश्रितों, मोहताजों तथा जरुरत मंदो का हक और भार है। आप लोगों को दिन रात देश की व्यवस्था और प्रगति का ध्यान रखना चाहिए। आपको चाहिए कि प्रत्येक वस्तु को लाभदायक और अच्छा समझो और मानव को मानव समझो। मियां नूर मोहम्मद कल्होड़ा का सन 1755 ई. में देहांत हुआ।

मियां नूर मोहम्मद कल्होड़ा के बाद सन 1757 ई. तक मोहम्मद मुराद याब खान ने शासन किया। उसका शासन लगभग तीन वर्ष तक रहा। इस दौरान वह आंतरिक षड़यंत्रों से निपट पाया वह अत्याचारी था। उसे बंदी बनाया गया। उसके बाद मियां गुलाम शाह कल्होड़ा सिंहासन पर बैठा, जिसने सन 1772 ई. तक शासन किया।

मियां गुलाम शाह के संबंध में एक कथा प्रचलित है कि एक माई गुला नामक तवायफ ने शाह अब्दुल लतीफ के पास आकर कलाम सिंधी गीत का एक प्रकार) गाया और उसे प्रसन्न कर दिया। उसने शाह अब्दुल लतीफ से प्रार्थना की कि मुझे इस पेशे से मुक्ति मिले ऐसी दुआ करो। यह बात सुनकर दर्वेश शाह अब्दुल लतीफ ने कहा- ''गुलां तू एक फूल को जन्म देगी।'' उसके बाद मियां गुलाम शाह का जन्म हुआ और भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।

मियां गुलाम शाह ने मोहम्मदाबाद नामक एक नया नगर बसाया। उसने कई अमीरों के षड़यंत्रों को विफल किया

और उन्हें अपने अधीन किया। उस समय सिंध के शासकों को शासन करने के लिये अफगानों से शासना देश लेना पड़ता था। प्रारंभ में गुलाम शाह कल्होड़ा को इस प्रकार का शासनादेश नहीं मिल सका। इस कारण भी वह परेशान रहा। इस कारण कभी कई सरदारों ने उसके विरुद्ध षड़्यंत्र कर विरोध करना प्रारंभ कर दिया। अपने सरदारों से निपटने के पश्चात गुलाम शाह ने क ल्होड़ा ने कच्छ के कुछ भाग को सिंध सम्मिलित करने के लिये कच्छ के शासक से युद्ध की। युद्ध में निर्णय नहीं हो सकता। अंत में कच्छ के शासक ने अपने परिवार की एक लड़की की शादी गुलाम शाह कल्होड़ा से करवाई इस प्रकार आपस में समझौता हुआ।



अंग्रेजों ने सिंध में अपना पहला संस्थान सन 1613 ई. में स्थापित किया और वह 1662 ई. में बंद हो गया। सन 1758 ई. में राबर्ट सिम्पसन के प्रयत्न से गुलाम शाह कल्होड़ा ने फिर सिंध में ईस्ट इंडिया कंपनी की शाखा खोलने की अनुमति प्रदान की। परन्तु जब मियां गुलाम शाह को अंग्रेजों की सहायता की आवश्यकता हुई, तो उन्होंने आनाकानी की। उसके बाद गुलाम शाह के आदेशानुसार ठट्टा नगर का अमीर गुलाब राय अंग्रेजों के लिये विभिन्न प्रकार की रुकावटें खड़ी करने लगा। गुलाम शाह की इच्छा थी कि अंग्रेज लोग यहां से चले जाएं, क्योंकि वे वफादार नहीं है। गुलाम शाह के समय में हैदराबाद नगर बसाया गया। श्री भेरूमल महरचंद ने इस संबंध में निम्नानुसार विवरण दिया है।

"हैदराबाद जो पहले नेरुन कोट कहलाता था।" मियां गुलाम शाह कल्होड़ा की इच्छा हुई। कि इस पुराने किले के स्थान पर नया किला बनवा कर नया शहर बसाया जावे और उसे राजधानी बनाया जावे। यह किला नेरुन नामक एक हिन्दू राजा ने बनवाया था, जो अरबों के आक्रमण के समय उजड़ गया था। गुलाम शाह ने नया किला बनाने का काम दीवान गिदूमल को सौंपा और इस कार्य के लिये उसे धन की दो नाव भरवाकर दी गई। दीवान गिदूमल ने पहले आधुनिक कोटिड़ी नगर की ओर जाकर, सिंधू नदी के तट पर एक गांव बसाया। वहां उसने अपने आदमियों को बसाया। उसका नाम गिदूमल का टंडा गांव रखा गया। गिदूमल ने दो किले बनवाये। एक कच्ची ईंटों का और दूसरा पक्की ईंटों का पक्की ईंटों वाला किला सन 1768 ई. में बनकर तैयार हुआ। इस प्रकार हैदराबाद राजधानी बनी। उसके बाद वहां जनसंख्या बढ़ने लगी।"

गुलाम शाह कलहोड़ा के शासनकाल में व्यापार में काफी वृद्धि हुई। वह अच्छा शासक सिद्ध हुआ। जिसने युद्धों के बावजूद भी अमन चैन कायम करने का प्रयत्न किया गया। गुलाम शाह ने कितनी शादियां की, यह जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। उसके दो बेटे मियां सरफराज खान और मियां मोहम्मद खान थे। बाद में ये दोनों सिंध के शासक बने। अलबत्ता मियां मोहम्मद खान केवल कुछ दिन के लिये शासक बना।

मियां सरफराज खान ने सन 1772 ई. से सन् 1776 ई. तक शासन किया। इसके शासन काल में कल्होड़ा वंश के शासन के पतन का बीजा रोपण हुआ। दरबारी षड़यत्र कर एक अमीर राजा लेखी ने मियां सरफराज खान के कान सरदार मीर बहराम के विरूद्ध भरे। मियांकान का कच्चा था। दीवान गिदूमल ने उसे बहुत समझाया और उसे राजा लेखी की चाल से सावधान रहने की सलाह दी, परन्तु मिया सरफराज खान राजा लेखी के जाल में फंस चुका था। अंत में एक दिन जैसे ही मीर बहराम और उसका बेटा दरबार में दाखिल हो रहे थे, तो उनकी हत्या कर दी गई। फिर तो उसकी जाति के अन्य सरदार भड़क उठे।

प्रारंभ से ही इस बलोच जाति के सरदार कल्होड़ा वंश के शासन के स्तम्भ माने जाते



थे। मीर बहराम की अकारण की गयी हत्या के कारण इन लोगों ने तत्कालीन राजधानी खुदाबाद पर आक्रमण कर दिया और बाद से हैदराबाद से भी मियां सरफराज खान को भगा दिया। इस स्थिति में अन्य सभी अमीरों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। और वे बलोच सरदार मीर फतह अली खान से जा मिले।

इस प्रकार सन् 1776 ई. में मियां सरफ़राज़ खान के स्थान पर मियां मोहम्मद को राजगद्दी पर बिठाया गया। राजा लेखी ने उसे एक द्वीप पर गिरफ्तार किया। जिसकी जानकारी किसी को नहीं मिली। बाद में उसके भाई गुलाम नबी को सन 1776 ई. में कल्होड़ा वंश के सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। अंत में जब बलोच सरदारों से युद्ध करते करते गुलाम नबी थक गया और उनसे शांति स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की, तभी राजा लेखी ने उसकी हत्या कर दी।

कहते हैं कि मियां सरफराज का बहुत अच्छा व्यक्तित्व था। वह बुद्धिमान व्यक्ति था, जिसे ज्ञान प्राप्त करने तथा शैरों शायरी का शौक था। उसके शासनकाल में कई शायर और विद्वान सिंध में आये। परन्तु उसने राजा लेखी के षड़यंत्र में फंसकर, बलोच सरदारों की हत्याएं करवाने का कुकृत्य कर कल्होड़ा वंश को पतन के कगार पर ल खड़ा किया।

इसी काल में सिंध के तीन महान शायर शाह, सचल, सामी भी पैदा हुए, जिन्होंने सिंध का भाग्य सदा के लिये बदल दिया, जिसका वर्णन आगे किया जावेगा। कल्होड़ा वंश का अंतिम शासक मियां अब्दुल नबी था जिसने सन 1774 ई. में सन 1799 ई. तक शासन किया।

उसके शासनकाल में गृहयुद्ध और विदेशी आक्रमण होते रहे और सिंध को शांति से बैठने का समय ही नहीं मिला। जनता का खून बहता रहा।

अध्याय-25

मीर(टाल्पुर) वंश का सिंध पर शासन

बलोचों को पराया समझाना गलत है। क्योंकि सदियों से यह होता रहा कि ये लोग सर्दियों में पहाड़ों पर बर्फ गिरने और शीत लहर के कारण सिंध की हरी-भरी भूमि पर आते रहे। यह सिलसिला आज तक चल रहा है। पर्वतीय क्षेत्र के निवासी होने के कारण बलोच (बरोच) लोग बहादुर हैं। इन लोगों ने सिंधी सेना में सिपाही के तौर पर कार्य कर अपनी वीरता के कई प्रमाण दिये। अंत में कलहोड़ों के शासन काल में तो ये लोग ही शक्ति के प्रतीक माने जाते थे। बहराम खान और उसके बेटे की हत्या कर क़ल्होड़ों ने अपने शासन को ही गंवा दिया।

टालपुर, मीर लोगों का मशहूर कबीला है, और उसमें भी उन की कई शाखाएं है। हैदराबाद में मीरों का बुजुर्ग मीर बहराम खान ही था, जिसकी पुत्र सहित हत्या कर दी गयी थी। मीर सूबेदार के चार पुत्र थे। मीर फतह अली खान और मीर करम अली खान, मीर गुलाम अली खान और मीर मुराद अली खान। मीर फतह अली खान ने अंत में कल्होड़ों से शासन छीन कर मीर वंश के शासन की नींव डाली। उन्हें फातहे-सिंध भी कहा जाता था। इसने सिंध को सात भागों में विभक्त किया। तीन भाग अपने तीन भाईयों के

लिये रखे, दो भाग अपने साथी मीर सहराब खान और एक भाग मीर ठहार खान को दिये। एक भाग पर वह स्वयं शासन करने लगा। उसकी राजधानी हैदराबाद थी। मीर सोहराब खान की राजधानी खैरपुर थी और मीर ठहार खान ने मीर पुर को राजधानी बनाया।

हैदराबाद के मीर, चारों भाई, इकट्ठा शासन करते थे। इसलिये शासकों को ''मीरों की चैयारी'' कहा जाता था। एक लिहाज से चारों भाईयों के स्वतंत्र साम्राज्य थे। परन्तु यदि कोई पराया बुरी आंख से देखता था, तो ये चारों भाई इकट्ठे हो जाते थे। इन लोगों ने कलात के खान से कराची बंदरगाह लिया। शिकारपुर को अफगानों से लिया। लखपत बंदरगाह को भुज के राजा से वापिस लिया। और अमरकोट जोधपुर के राजा से लिया। और इन सभी भागों को सिंध में मिला दिया। ये लोग जब देखते थे कि अफगानी लापरवाह और कमजोर हो गये हैं। तो उन्हें वार्षिक कर देने में आनाकानी करते थे। यदि वे लोग आक्रमण करते थे, तो उन्हें धन और उपहार देकर खुश करते थे। मीर फतह अली खान ने 18 वर्ष तक शासन किया। उसकी सन 1802 ई. में मृत्यु हुई। उसके बाद उसके भाई मीर गुलाम अली खान ने बागडोर संभाली। वह भी 9 वर्ष तक शासक रहा। किसी गलत फहमी के कारण मीरपुर खास के मीर ठहार खान से उसे युद्ध करना पड़ा, जब वह युद्ध में घायल हुआ, तो उसका इलाज करके उसे पुनः राजगद्दी पर बिठाया गया। आंतरिक फूट का इस प्रकार बहादुरी से मुकाबला किया गया।

अंग्रेजों ने कल्होड़ों के शासनकाल में सिंध में अपने संस्थान स्थापित किये थे, और अफगान शासकों की आपत्तियों के कारण वे संस्थान बंद किये। सन् 1803 ई. में मीरों ने पुनः अंग्रेजों से संधि



की और अंग्रेजों ने सिंध में अपने संस्थान खोले। उसके बाद जब अंग्रेजों ने देखा कि सिंध को छोड़कर पूरे भारत में उनका शासन है तो सिंध जैसे संपन्न देश को जीतने की लालच वे छोड़ न सके। वे मीरों से संधियां करते रहे और सिंध के गले में फांसी का फंदा कसते रहे। सन् 1803 ई. के बाद उन्होंने दूसरी संधि सन् 1821 ई. में की। तीसरी संधि सन 1832 ई. में तथा अंतिम संधि सन 1842 ई में की। ये लोग प्रत्येक संधि करते समय मीरों को यह विश्वास दिलाते थे कि वे उनकी सुरक्षा और स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिये कृत संकल्प है और ये संधियां दो बराबर हैसियत रखने वाली सरकारों के बीच है।

अंग्रेजों ने चतुराई से एक चाल चली। उन्होंने महाराजा रंजीत सिंह को भड़काया कि वह सिंध के मीरों पर नजर रखे। फिर उन्होंने ऐसे हालात उत्पन्न किये कि स्वयं मीरों ने उन्हें अपना शुभ चिंतक समझकर महाराजा रंजीत सिंह से सुरक्षा प्रदान करने हेतु निवेदन किया, और अंग्रेजों ने भी उन पर अहसान कर रंजीतसिंह को सिंध पर लालची निगाहें रखने से रोका।

शाह शुजा अलमलिक अफगानिस्तान से युद्ध करके आया और शिकारपुर में रहने लगा। मीरों ने उसकी सहायता करने में आनाकानी की। अंग्रेजों ने यह अच्छा अवसर हाथ से गंवाना नहीं चाहा, क्योंकि उनकी आंखे सदैव काबुल और कंधार पर गढ़ी रहती थी। उन्होंने मीरों को डरा धमका कर, अपनी सेना सिंध के रास्ते अफगानिस्तान ले जाने का आदेश प्राप्त कर लिया, और इस प्रकार काबुल और कंधार पर आक्रमण किया। इसका परिणाम यह निकला कि अंग्रेजों को सिंध के सभी रास्तों, पानी और थल की जानकारी मिल गई।

ठीक इसी समय सिंध के मीरों के बीच आपस में यह स्पर्धा हो गई थी कि देखें अंग्रेजों की कौन ज्यादा चापलूसी करता है। अंग्रेजों के सामने अपने को सच्चा साबित करने के लिये आपसी मनमुटाव तथा एक दूसरे के विरुद्ध षड़यंत्र रचना ही उनका मुख्य कार्य बन गया था। ऐसी स्थिति में सिंध का गुलाम बनना अवश्यंभावी था।



'मियाणी' नामक स्थान पर बलोचो का अंग्रेजों से युद्ध हुआ। बलोच लोग बहुत वीरता से लड़े। परन्तु आपसी फूट के कारण अंग्रेज जीत गये। दूसरे ही दिन मीरों ने चार्ल्स नेपियर को मुलाकात के लिये प्रार्थना की उन्हें उत्तर तो संतोषजनक मिला, परन्तु जब वे मुलाकात करने गये तो फरेब से सबको गिरफ्तार कर लिया गया। इस प्रकार बिना किसी विरोध के अंग्रेजी सेना हैदराबाद में प्रविष्ठ हुयी, और सरलता से मीरों का खजाना लूट लिया गया।

मीर सूबेदार, जो अन्य मीरों के साथ सम्मिलित नहीं हुआ, अंग्रेजों का पिच्छ लागू बना। वह दूसरे दिन तैयार होकर हैदराबाद के दरबार में आया और अंग्रेजों का स्वागत करने के लिये इंतजार करने लगा। जब अंग्रेज लोग पधारे तो उसने उसकी खूब चापलूसी की, परन्तु अंग्रेजों ने उसे भी गिरफ्तार कर लिया। जिसका उसे स्वप्न में भी विश्वास नहीं था। अंग्रेजों ने उस से जो वायदा किया था कि उसे सिंध शासक बनाया जावेगा। वह इस प्रकार पूरा हुआ।

मीरों को गिरफ्तार करके पहले बम्बई और फिर कलकत्ता ले जाया गया। इंग्लैंड में मीरों पर मुकदमा चला। ऐसी स्थितियों में मुकदमे, की जो परिणिति होती है, वही हुई।

अंग्रेजों के साथ हुए दुबे के युद्ध में सिंध को एक महान सेनापति शीदी होशू अथवा होश मोहम्मद का जिक्र करने के सिवाय यह वर्णन अधूरा रहेगा। कहते हैं कि होश मोहम्मद हैदराबाद के शासक मीर सूबेदार खान का गुलाम था। वह अपनी निडरता और वीरता के कारनामों के कारण मीरों के सेनापति के पद पर पहुंचा। उसने दुबे की युद्ध में अपना जौहर दिखाया। उसने शत्रु

हंसना-शरीर की खुराक है

-दौलतराम साधवानी



एक बार रेल गाड़ी में सफर करते हुए घड़ी की चैन खोलने की कोशिश कर रहा था। पर चैन नहीं खुल रही थी। पास में बैठा हुआ एक पहलवान यह देख रहा था। मुझसे घड़ी लेकर उसने फटाफट चैने खोल दी और घड़ी देते हुए कहने लगा। ''सिंधी सांई रोटी खाया करो, दाल चावल खाने से ताकत नहीं आती।''

तभी मैंने विचार किया कि इसे सबक सिखाऊं।

जब रेल गाड़ी तेज रफ्तार से चल रही थी, तो मैं ट्रेन की जंजीर खीचने लगा यह देख पहलवान बुदबुदाया- इससे घड़ी की चैन तो खुल नहीं सकी चला है ट्रेन की जंजीर खींचने। और झट से वह अपनी सीट से उठकर आया। मुझे दूर करके गाड़ी की चैन उसने खींच ली। गाड़ी के पहिये पटरी पर घिसटने की आवाज करते हुए रुक गये। थोड़ी देर में ई गार्ड, टी.सी. और दो पुलिस वाले दौड़ते हुए आये और पूछने लगे चैन किस ने खींची है?

तभी पहलवान सीना ठोककर कहने लगा-मैंने खींची है। तभी टी.सी. ने कहा- बिना मतलब के जंजीर खींची है। निकालो 250/- रुपया जुर्माना। पहलवान ने हैरान और परेशान होकर 250/- रुपये निकाल कर दिये। तभी मैंने ''सिंधी सांई।'' ने कहा- पहलवान जी दाल चावल खाया करो तभी तुम्हें अकल आयेगी। रोटी खाने से सिर्फ ताकत आती है।

एक मुसाफिर बस में चढ़ आया और बैठी हुई सवारी को कहा उठो यह सीट मेरी है। इस पर मैं रुमाल रखकर गया था, बैठी हुई सवारी ने कहा- क्यों भाई, सीट पर रुमाल रखने से सीट तुम्हारी हो गई। कल को ताजमहल पर रुमाल रखने से ताजमहल तुम्हारा हो जायेगा क्या?

सेना को लोहे के चन्ने चबवाये। उसने जब ललकारा कि मरूंगा परन्तु सिंध नहीं दूंगा। (मरसूं, सिंधन डेसू) तो अंग्रेजों के दिल दहल गये। अंत में वह लड़ते लड़ते अपनी मातृभूमि सिंध पर न्यौछावर हो गय।।

अंग्रेज उसकी वीरता से इतने प्रभावित हुए कि उसे राजकीय सम्मान के साथ हैदराबाद के किले में दफनाया गया और एक तोप की सलामी दी गयी। चार्ल्स नेपियर ने लिखा है कि मरने के बाद भी उसकी तलवार उसके हाथ में मजबूत पकड़ी हुई थी। जिन लोगों ने आंखों देखा हाल लिखा है उनका कथन है कि उसका सिर तो धड़ से अलग हो गया था परन्तु उसकी तलवार काफी देर तक चलती रही।

मियाणी और दुबे की युद्धों के बाद खैरपुर के मीर जो अंग्रेजों के मित्र थे, उनको भारत के अन्य राजाओं के समान नाम मात्र का शासन करने का अधिकार दिया गया और सिंध को बंबई का भाग बना दिया गया।

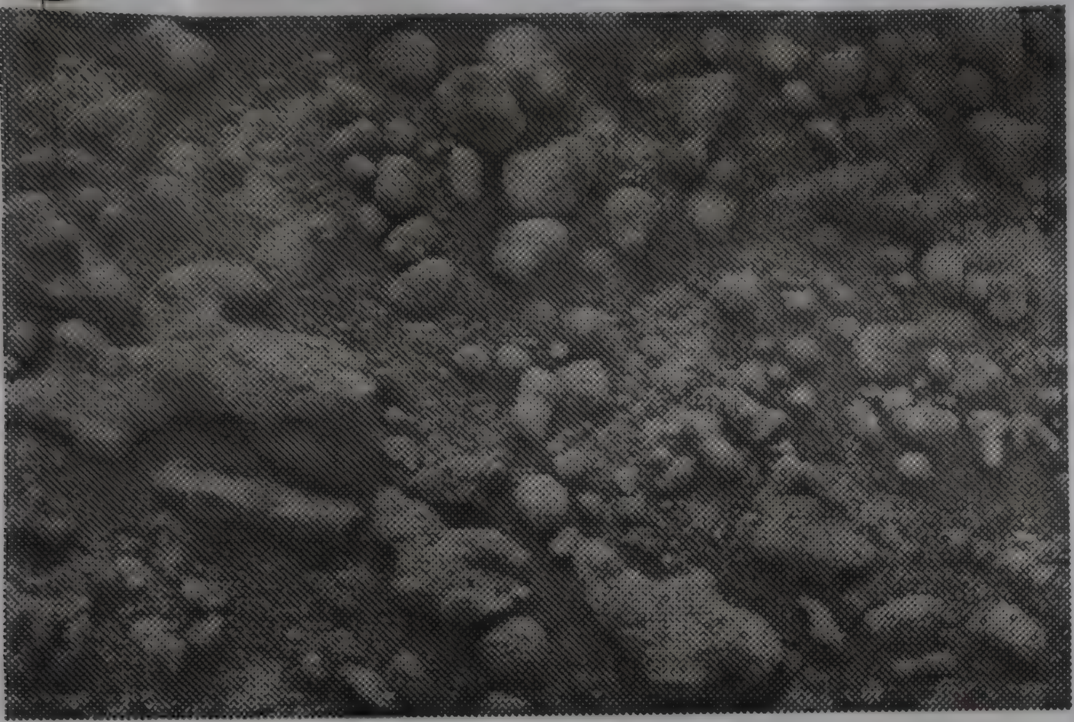
कल्होड़ा और मीरों के शासनकाल में हिन्दुओं को बहुत ऊंचे पद मिले हुए थे। मीरों का कारोबार फारसी भाषा में चलता था और कई हिन्दुओं ने फारसी भाषा में निपुणता प्राप्त की थी। उस समय एक नई कहावत ने जन्म लिया कि 'फारसी घोड़े चाढ़सी।' अर्थात् फारसी घोड़े पर चढ़वाती है। उस काल में वित्त विभाग पूर्णतः हिन्दुओं के हाथ में था। कर्नल पाटिजर के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए मीर मुराद अली खान ने निम्नलिखित मत प्रकट का उत्तर देते हुए मीर मुराद अली खान ने निम्नलिखित मत प्रकट किया था।

''हम बलोच लोग हिसाब किताब नहीं जानते और न ही खाता बही रखने में सक्षम हैं। हम लोगों को व्यापार की जानकारी भी नहीं है। हम लोग केवल इतना समझ सकते हैं कि



दो और दो चार होते हैं। हम लोग हिन्दुओं पर पूर्ण विश्वास करते हैं। हम लोग जो चीज चाहते हैं। वह ये लोग हमें घर बैठे पहुंचा देते हैं।

मीरों के दरबार में हिन्दुओं को राजनैतिक लिहाज से भी ऊंचे पद सौंपे गये थे। दीवान गिदूमल को मीरों ने कंधार और काबुल का प्रतिनिधि नियुक्त किया था। उसके भाई जसपतराय को भी प्रतिनिधि नियुक्त किया गया था। प्रतापराय शहजादा सूबेदार खां का मुंशी था। मुंशी मुश्ताक राममीर गुलामअली खान का विशेष परामर्शदाता था। दीवान गोपालदास, मीर करम अली की ओर से कच्छ का राजदूत नियुक्त किया गया था। मुंशी खुशीराम, मीर मुराद अलीखान का सलाहकार था। दीवान चोइथराम मुंशी उत्तमचंद, किशनदास, कानसिंह, सुजानसिंह, मूलराम ,चंदासिंह भी उच्च पदों पर आसीन थे। सेठ नाऊंमल कराची का [illegible]टम किलीयर नियुक्त था। उसे कर वसूल करने का ठेका मिला हुआ था। उसके संबंध में आगे विवरण प्रस्तुत किया जावेगा। मुगल बादशाह अकबर के आचरण से प्रभावित होकर मीरों और कल्होड़ों ने भी हिन्दू कन्याओं से विवाह किये। सर्राफे का व्यापार हिन्दुओं के हाथ में था। सिंधी हिन्दुओं की हुंडियां , मुलतानी हुंडी के नाम से पूरे भारत और मध्य एशिया के कई देशों में प्रसिद्ध थी। मीरों के शासनकाल में साहित्य और शायरी ने उन्नति की थी। ज्यादातर शायरी फारसी भाषा में की जाती थी। परन्तु शाह लतीफ सचल, सामी (जिनके संबंध में एक अलग अध्याय में पूर्ण विवरण दिया गया है।) और बाद में कई सूफी शायरों ने सिंधी भाषा में शायरी कर सिंधी साहित्य को मालामाल करना प्रारंभ किया । इस काल में प्रसिद्ध सिंधी शायर थे। सिद्धीक, फकीर, हफीज फतह फकीर, सैय्यद खैर शाह, खलीफा गुल मोहम्मद दीवान दलपतराय, अली गोहर शाह, हमल फ़कीर लग़ारी और कई अन्य जिन्होंने सिंधी सूफी कलाम को मालामाल किया।



अध्याय -26

(मुगल कल्होड़ा और मीरों के शासन काल में आम लोगों का जीवन)

एक अंग्रेज विद्वान मिस्टर एच. टी. सोरले ने एक पुस्तक लिखी है। ''शाह लतीफ ऑफ भिट्ट-हिज पोइटरी-लाईफ एंड टाईम्स'' इस पुस्तक में उसने शाह लतीफ के जीवन काल में अलग-अलग पहलुओं का सामाजिक राजनैतिक एवं वित्तीय स्थिति एवं आम लोगों के जीवन, रहन सहन पर प्रकाश डाला है। आम लोगों का जीवन, अंग्रेजों के शासनकाल में भी लगभग उसी प्रकार चलता रहा और आज भी इस में कोई अंतर नहीं आया है।

मिस्टर सोरले ने अपनी तहकीकात के लिये ईस्ट इंडिया कंपनी के दफ्तरों के दस्तावेज़ अलग-अलग रिपोटों के हवाले और उस काल में यूरोपीय यात्रियों ने जो आंखों देखे हाल लिखे हैं, उनके आधार पर पूर्ण विवरण तैयार किये हैं।

उस काल के व्यापार के संबंध में निम्नानुसार वर्णन किया गया है। लाहौर और ठटठा के मध्य व्यापार प्राय: सिंधू नदी के माध्यम से चलता था। लगभग सभी कपास की मंडियां सिंधू नदी के किनारे के पास में थी। बखर, रोहिड़ी , दरबेला, गंबट, कंडियार, सेवहण, सनृ, नसरपुर और ठटठा में कपास की मंडियां थी। नदी के आवागमन के अलावा ठटठा से अहमदाबाद पाली और जैसलमेर के बीच बाकायदा काफिले चलते थे। बुखारा अेफगानिस्तान और ईरान की ओर भी काफिले जाते थे। प्रत्येक काफिले में कई सौ ऊंट होते थे। आतंरिक व्यापार के लिये पीरों की दरगाहों के मेले, तीज त्यौहारों के मेले अच्छे साधन माने जाते थे। वहां बाजार सजते थे। काफी खरीदी होती थी। लाड़ी नामक बंदरगाह पर दो-तीन सौ टनों वाले जलयान लंगर लगा सकते थे। लाड़ी बंदरगाह के बादशाह का महत्व बढ़ा। और अंत में मीरों के शासन काल में ''कलात'' के मीर से छीनकर कराची बंदरगाह को सिंध से मिलाया गया तो कराची बंदरगाह का महत्व संपूर्ण भारत में बढ़ गया। प्रारंभ में कराची की जनसंख्या मात्र तेरह हजार थी, जिसमें हिन्दुओं की संख्या अधिक थी।

प्रत्येक बंदरगाह पर कर वसूली का प्रबंध शासन की ओर से किया जाता था। वहां नाके स्थापित किये गये थे। परन्तु नाकों का पूर्ण कार्य हिन्दुओं को सौंपा जाता था। ये लोग सरकार के एर्जेन्ट के तौर पर कार्य सम्हालते थे। और काफी धन कमाते थे। ये लोग कभी भी धनवान होने का दिखावा नहीं करते थे। उन्हें डर लगता था कि कहीं मीर लोगों की कुदृष्टि के शिकार न बन जायें। और वे उनकी संपत्ति कुर्क न कर लें। इसलिये ये लोग सादा जीवन बिताते थे। परन्तु कहा यह जाता था कि उस समय भी कई एजेन्ट पंद्रह से तीस लाख तक के आसामी थे। उस समय भी ये लोग खरीदी हेतु ऋण देते थे। इस संबंध में भम्भोमल और नवल दास के नाम ईस्ट इंडिया कंपनी के अभिलेखों में मिलते हैं। जिन्होंने सिंध, मुलतान, लाहौर में व्यापार करने हेतु कंपनी को वित्तीय सहायता दी थी। आमतौर पर व्यापार करने का ढंग यह होता था कि हिन्दू लोग कंपनी के एजेन्ट बनकर कार्य करते थे और जमीदारों एवं कारीगरों को पहले ही

बयाने की राशि दे देते थे। वे उन्हें दूसरे प्रकार, भी धन की सहायता देकर पूरी मौसम की उपज खरीदते थे ,और कंपनी के कर्मचारियों की उपस्थिति में चीजें तैयार करवाकर उन्हें देते थे। ईस प्रकार सिंध का गृह उद्योग काफी प्रगति कर गया। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान फौजदार और सूबेदार को भी आय का हिस्सा मिलता था ताकि वे लोग भी कारीगरों को ईमानदारी काम करने के निर्देश देते रहें। इसी काल में विदेशों से काफी सोना सिंध में आता रहा। उस समय सिंध निम्नलिखित प्रमुख प्रमुख उद्योग थे। कपड़ा बनाना, शोरा, नील और चर्म उद्योग।

कपड़ा बनना:-ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एजेन्ट लिखता है कि कपड़ा रोहिड़ी और सक्खर में अच्छा बनता था। वहां के कारीगर परिश्रमी और शांत स्वभाव के थे। ठटटा में किसी ज़माने में अस्सी हजार जुलाहे, लुंगिया बनाते थे। एक यात्री मानुसी लिखते हैं कि "Thata abonnds in very fine white cloth also in coarse cloth & printed cloth of two kinds, and has much leather which is exported to Arabia & Persia" एक अन्य व्यक्ति मिस्टर विथिंग्टन ने लिखा है-Concern Seinde, nocity is by general Leport of greater trade in indies than thatta....."

शोरा :- दूसरा प्रमुख व्यापार होता था शोरे का। इसमें से बारूद बनता था, इसलिये सिन्ध सरकार इस व्यापार पर विशेष ध्यान देती थी कम्पनी एक



वर्ष में लगभग दस हजार मन शोरा खरीदती थी। गुलाम शाह कल्होड़ा ने अपने शासनकाल में केवल अंग्रेजों को इसके निर्माण की अनुमति प्रदान की

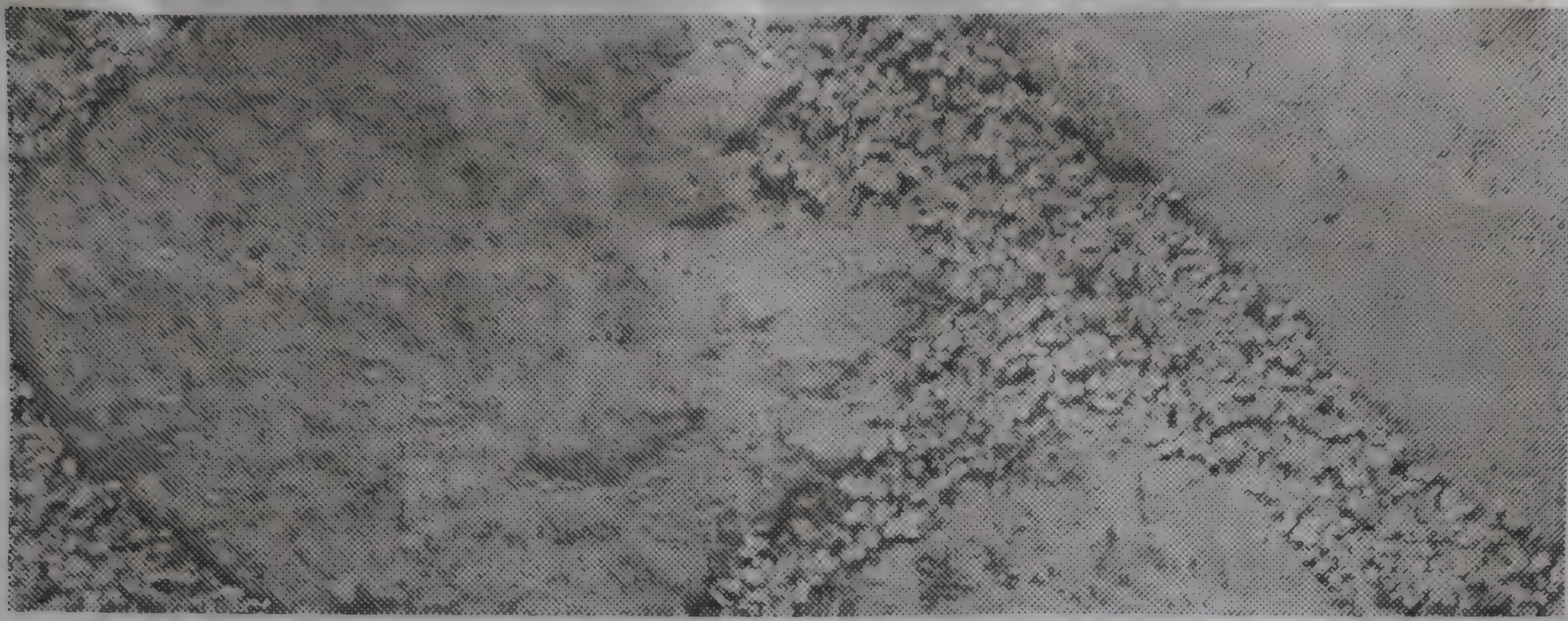
इस पूरी प्रक्रिया के दौरान फौजदार और सूबेदार को भी आय का हिस्सा मिलता था ताकि वे लोग भी कारीगरों को ईमानदारी काम करने के निर्देश देते रहें। इसी काल में विदेशों से काफी सोना सिंध में आता रहा। उस समय सिंध निम्नलिखित प्रमुख प्रमुख उद्योग थे। कपड़ा बनाना, शोरा, नील और चर्म उद्योग।

थी। उस समय युद्ध के लिये बारूद बनाने हेतु यह शोरा अत्यंत आवश्यक माना जाता था।

नील :- कम्पनी वाले सिंध से बहुत बड़ी मात्रा में नील खरीदते थे। नील, बूबक, सेवहण और सन में पैदा होती थी, परन्तु सिन्ध नील के व्यापार में गुजरात के सामने टिक नहीं सकी। इसलिये यह व्यापार ज्यादा नहीं चला।

चर्म उद्योग: सिंध में चौपाया माल बड़ी संख्या में होने के कारण चर्म उद्योग ने बहुत प्रगति की। उस समय सिंध में घोड़ों के जीन तथा चमड़े के थैले बनते थे। कहते हैं कि चमड़े के थैले इतने बड़े बनते थे। कि लगभग 320 पाऊंड घी साल भर रखा जा सके। तो भी वह खराब न हो। उस समय एक यात्री मिस्टर लिस चोटिन ने लिखा है-"The people of Sind make excellant and fair leather and cunningly wronght with silk of all colours, both flowers and. Personages, this leather in india is much, esteemed to up on beds and tables instead of carpets."

एक अन्य व्यक्ति ने लिखा है कि सिंध का चमड़ा टिकाऊ और नर्म है। यह यूरोप के चमड़े से प्रतिस्पर्द्धा



में खड़ा हो सकता है।

मतस्य उद्योग:- सिंधू नदी और उसकी नहरों एवं तालाबों के तटों के अलावा समुद्री किनारे वाले स्थानों पर रहने वाले लोग मछली पकड़ने का धंधा करते थे। मतस्य उद्योग भी काफी ऊंचाइयां छू रहा था। मछली का तेल नौकाएं बनाने के काम के उपयोग में आता था और मछली सुखाकर विदेशों में भेजी जाती थी। यूरोप के यात्री मिस्टर हेमलटन लिखते हैं कि सिंध की मछलियां बीस पाऊंड (दस किलो) से भी भारी होती थी। ठटटा के बाजार में तो जिंदा मछलियां भी बिकती थी। मछली के अलावा जल पक्षियों का भी शिकार किया जाता था। मछली के साथ-साथ ये पक्षी भी सिंधी लोग खाते थे। सरकार की ओर से मछली मारने वालों से कर वसूल किया जाता था।

सिंध में ऊंट बहुत अधिक संख्या में होते थे। सिंध के लोग ऊंट के बालों से बहुत ही काम वाली वस्तुएं बनाते थे। इन वस्तुओं का भी बहुत व्यापार होता था। सिंध विशेषकर कृषि प्रधान एवं पशुधन वाला देश है, इसलिये घी और मक्खन का व्यापार भी बड़े पैमाने पर होता था। कंपनी के अधिकारी की रपट में उल्लेख है कि- ''सिन्ध के निवासी कृषि तथा शिल्प में निपुण है। सिन्ध के व्यापारी होशियार तथा चतुर हैं।'' हालांकि सरकार करों की बहुत अधिक राशि वसूल करती है, फिर भी ये लोग अपने को सुरक्षित समझते है.... सिंधी लोग कानून की इज्जत करने वाले हैं.... सिंध की जीवन रेखा सिंधू नदी है। इसलिये कम या अधिक

सिंध की जीवन रेखा सिंधू नदी है। इसलिये कम या अधिक वर्षा होने से सिंध में अकाल की स्थिति उत्पन्न नहीं होती। अलबत्ता सिंधू नदी के प्रवाह में फेरबदल और बाढ इत्यादि के कारण कठिनाइयां उत्पन्न होती रहती है।

वर्षा होने से सिंध में अकाल की स्थिति उत्पन्न नहीं होती। अलबत्ता सिंधू नदी के प्रवाह में फेरबदल और बाढ़ इत्यादि के कारण कठिनाइयां उत्पन्न होती रहती है। परन्तु सिंधु नदी सदैव अपने निवासियों का पालन पोषण कर सकती है। सिंध के प्रत्येक निवासी को पेट पालने के लिये थोड़े से ही परिश्रम के पश्चात धन की प्राप्ति हो जाती है। जिन यूरोप वासियों के सिर पर भारत वासियों को सुधारने का भूत सवार था, उन्होंने अलबत्ता भारत और सिंध के हालात को भयानक बताया, परन्तु तत्कालीन हालात की यदि यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति की पूर्व स्थिति से तुलना की जावे, तो यहां की स्थिति बहुत अच्छी थी।

रहन सहन:- आम तौर पर सिंधी लोग, सिंधु नदी के दोनों किनारों पर घास फूस की झोपड़ियों में रहते थे। व्यापारियों और जमीदारों के घर मिट्टी के बने होते थे। अमीर और शासक तथा अन्य धनवान बड़ी हवेलियां और बंगले बनवाते थे। जिनके आसपास बड़े बगीचे फव्वारे, झरने, तरह-तरह के फूल, संगमरमर के फर्श और रास्ते होते थे। परन्तु ज्यादातर सिंधी मिट्टी के घरों और घासफूस की झोपड़ियों में रहते थे। गांव-जमींदार की हवेली के आसपास रहते थे और वहां दुकानें भी होती थी। कई पक्की ईंटों वाले घरों को, हवादार बनाने के लिये छत में ढका हुआ खाली स्थान छोड़ा जाता था, जिसे मंच कहते थे। घर लकड़ी और गारे से बनाये जाते थे। (क्रमश.....)

कहानी

नया दौर

• श्रीमती कमला बुटाणी
• अनुवाद-डी. पी. तेजा

''अमां बधाई हो, घर में लक्ष्मी आई है''

नर्स के यह शब्द कानों में जैसे जहर घोल गये। चांदी सा बदन काला पड़ने लगा। वह दोनों हाथ सिर पर रखकर रोने लगी। हाय पहली ही बेटी हुई, कुल तो तैरेगा ही नहीं।

चांदी, चांदी के सिक्कों की जो पोटली बांधकर लाई थी, उसकी गठान वह खोल नहीं सकी।



डाक्टर, नर्स या नौकरों को नजराना लड़की पैदा होने पर नहीं, सिर्फ बेटा पैदा होने पर ही मिलता है।

राधा ने देखा कि सास का मुंह सूजा हुआ है। मुंह पर जो मुस्कराहट (रौनक) डिलेवरी से पूर्व थी, वह गायब हो गयी है। तीन दिन तो वह अस्पताल में चुप रही, पर जैसे ही वह घर वैसे ही सारी कड़वाहट उसने चंद्रू पर आकर निकाली।

छठी नामकरण के दिन चंद्रू ने दोस्तों को पार्टी देने की पेशकश की तो उसकी माँ चांदी जैसे फूट पड़ी कि बड़ा कोई तीर मारा है जो दावतें करेगा। अरे देते कोई पुत्र (लड़का) तो मैं ही शहनाईयां बजवाती।

चन्द्रू, फिर भी अमां (मां) यह किसी के बस की बात है जो बेटा ही पैदा करता करता बेटी नहीं।

चांदी- मैंने तो पंडितों से जाप कराये थे, उन्होंने कहा था बेटा ही पैदा होगा। इसके ही कर्म खराब होंगे। लक्ष्ण तो सभी बेटे के थे।

चंद्रू - अम्मां आजकल लड़के-लड़कियां बराबर हैं।

लड़कियां मां बाप की अधिक सेवा करती है तथा दुख सुख में सदैव साथ देती हैं, देखो न आपकी भी तो तीन बेटिया हैं वे आपको कितनी ना मीठी (प्यारी) है। चांदी अपनी पुत्रियों का ज़िक्र आते ही चुप हो गई। पर बहू को न तो उसने शुद्ध घी खिलाया, न लड्डू, और ना ही दिल से कोई सेवा ही की। ग्यारहवें दिन ही नहलाकर रसोई घर उसके सुपुर्द कर दिया।

राधा ग्रेजुएट थी और स्टेनों टाईपिस्ट भी। कुंवारेपन के समय तो वह नौकरी (सर्विस) भी करती थी पर शादी के बाद छोड़नी पड़ी।

राधा को मायके की याद आ गई। उसकी आंखों से आसुओं की धाराएं बहने लगी।

उसके मायके घर में तो सभी फारवर्ड थे। उ सकी मां पोते पोतियों में फर्क नहीं समझती थी, उन्हें बराबर समझती थी। बहुओं को भी ऐसे चाहती थी जैसे बेटियां हों।

चंद्रू अपनी मां का इकलौता लाड़ला बेटा था। अगर दो तीन भाई होते तो चांदी शायद अलग-अलग बेटों के पास जाकर बारी-बारी से रहती। पर अब राधा के लिये तो और कोई चारा ही नहीं था। दूसरा उसकी सास सारा दिन बहू की कमियां ही निकालती रहती थी और घंटों पड़ौसियों के पास जाकर बातें किया करती थी। डिलेवरी के बाद राधा को आराम भी नहीं मिला था जिस पर वह और अधिक कमजोर हो गई और उसे बुखार आने लगा। चंद्रू राधा की बीमारी की दवा तो कर सकता था पर उसके मन की बीमारी का क्या करता?

वक्त गुजरता गया। सोनू भी आकर तीन वर्षों की हुई। अब वह स्कूल भी जाने लगी तो चांदी को पोते की चाह हुई। राधा फिर उम्मीद से हुई, पर शर्म के मारे तीन चार माह उसने किसी को कुछ नहीं बताया। जब चंद्रू को पता चला तो उसने राधा की सोनोग्राफी करवाई, जैसे मां के कहे अनुसार बेटा ही हो सके। सोनोग्राफी के समय भी राधा के साथ चांदी को ही भेजा गया। सोनोग्राफी में लड़की के ही लक्षण दिखने में आए उस वक्त चांदी के तो (दो भी गये और छ:भी)। वह डाक्टर को कहन लगी कि इसका कोई इलाज करो, क्योंकि हमें दूसरी लड़की नहीं चाहिए। डाक्टर ने समझाया, पहली बात तो अब देर हो चुकी अबार्शन करने में जान का खतरा है। दूसरा बेटा होने में मर्द का ही दारोमदार होता है। साइंसदानों ने यह साबित किया है। इसलिये औरत का इसमें कोई भी दोष नहीं है।

घर पर आकर चांदी चंद्रू के साथ बहस करने में आ पड़ी।

चंद्रू ने कहा अम्मां आप लड़कियों ने नाराज क्यों होती है? लड़की तो मुझे होगी ना? आपके ऊपर क्या भार पड़ेगा? फिर आप भी तो किसी की बेटी है न। अगर आपके मां बाप भी आपसे नफरत

करते तो आप पर क्या असर होता? दूसरा आपने भी तीन बेटियां पैदा की हैं क्या वे आपको कड़वी हैं। ऊपर की सभी दलीलों से चांदी सहमत तो थी पर फिर भी पोते के बिना उसका मन नहीं मान रहा था।

रुपा के पैदा होते ही चंद्रू को प्रमोशन मिल गया। चंद्रू को विश्वास हो गया कि बराबर लड़कियां लक्ष्मी का रुप होती हैं। खुशी में उसने मां को कहा, देखा माँ मुझे रूपा के पैदा होने के बाद कितना फायदा हुआ है। पांच सौ रुपये हर महीने का फायदा। कहते हैं कि ईश्वर जन्म से पहले ही उसके भाग्य का इंतजाम कर देता है। यह भी अपना भाग्य अपने साथ लेकर आई है। सच है कि जिसे भी वह सांस देता है। उसे ग्रास भी देता है। इसी तरह दोनों बच्चियों का लालन पालन चंद्रू बहुत ही अच्छे ढंग से और प्यार से करता रहा। बेटों की उसे कोई तमन्ना ही न रही बच्चियां सिर्फ दादी मां के प्यार के लिये ही तरसी हुई थी, फिर भी अपनी दादी मां का दिल जीतने की कोशिश करती रहती थी।

दोनों बच्चियां अच्छे स्कूलों में पढ़कर बहुत होशियार और लायक साबित हुईं।

वक्त गुजरते देर नहीं लगती। सोना और रूपा आज छोटी कल बड़ी हो गई।

सोना सिविल सर्जन बन गई और रुपा कलेक्टर। एक दिन आधी रात को जब दादी मां बाथरुम गयीं तो वहां फर्श पर पानी होने की वजह से उनका पैर फिसल गया वह सीधा फर्श पर जाकर गिरी। और उसके मुंह से चीख निकल गई। "अरे मर गई, अरे जुल्म हो गया।"

सोना और रुपा तो दादी मां के कमरे में ही सोती थी, सो एकदम जाग गई। दादी को गिरा हुआ देखकर घबरा गई। उसे उठाकर लाकर पलंग पर लिटाया, पर दादी की कराहटें ऊपर नीचे हो रहीं थी।

सोना ने जांच करके देखा तो समझ गई कि अम्मां की टांग की हड्डी टूट गई है। बस फिर तो उसने डाक्टरी पैंतरे मारना शुरू कर दिये। जल्दी अस्पताल से एम्बूलेंस बुलवाकर उसमें दादी मां को अस्पताल ले गये डाक्टरों ने एक्सरे कर पट्टा चढ़ा दिया। दो तीन बाद ले आये।

इस बीच में अमां को पता पड़ा कि सोना उसकी पोती बड़ी डाक्टर है और उसके कारण ही अस्पताल में सभी डाक्टर उसे अम्मां करके बुलाते थे और बार-बार उसे देखने आते थे, प्रेम से बातें करते, नर्से भी समय समय पर दवाएं देकर हाल चाल मालूम करती थी।

घर में भी सोना दादी मां की तीमारदारी बहुत ही अपनेपन से करती थी अपने हाथों से दवा और गोलियां देना दर्द बढ़ने पर इंजेक्शन लगाना, रात को नींद नहीं आने पर दवा देने का काम अपने हाथों से करती थी। और दादी मां से हर समय पूछती रहती थी। अम्मां कोई तकलीफ तो नहीं है। शाम के समय अस्पताल से लौटने पर मौसंबी का जूस निकलवाकर लाती थी और दादी मां को अपने हाथों से आकर पिलाती थी।

तब दादी मां को अहसास हुआ कि पोता भी शायद मेरी इतनी देखभाल आकर नहीं कर पाता, और ना ही इतनी सेवा करता, जितनी पोती कर रही है।

अब दादी और पोती का प्यार देखने लायक था, दादी थोड़ी सी थोड़ी चीज भी सोना और रूपा को अपने हाथों से खिलाती थी और प्रसन्न हो जाती थी। रुपा के कलेक्टर बनने पर उसे शाही बंगला मिला। कार और नौकर चाकर मिले। अब सभी बड़े बंगले में शिफ्ट हो गये।

दादी के लिये नर्स भी रखी गयी थी, पर रात के वक्त सोना ही दादी की ज्यादा देखभाल करती थी। उसकी रात की नींद तक खराब होती थी पर कहते हैं प्रेम में सब जायज है।

डेढ़ महीने के बाद दादी का पट्टा खुला। सोना बच्चों की तरह दादी को आहिस्ता-आहिस्ता पैदल चलवाती थी। इस काम में वह बिल्कुल खफा नहीं होती थी, और एक दिन ऐसा आया कि दादी जैसी पहले थी वैसी तंदुरुस्त फिर हो गई।

अब दादी और पोती का प्यार देखने लायक था, दादी थोड़ी सी थोड़ी चीज भी सोना और रूपा को अपने हाथों से खिलाती थी और प्रसन्न हो जाती थी। रुपा के कलेक्टर बनने पर उसे शाही बंगला मिला। कार और नौकर चाकर मिले। अब सभी बड़े बंगले में शिफ्ट हो गये। सैकड़ों लोग रोज़ रुपा के पास कोई न कई फरियाद लेकर आते थे। दादी उन लोगों की सिफारिश करती थी। रूपा भी दादी मां की इज्जत रखती थी, और जितना हो सकता था गरीबों की मदद और दुखियों के दुख दूर करती थी, उन्हें न्याय दिलाती थी, उस पर उसे दुआं मिलती थी।

पोतियों को खुशी थी कि उन्होंने अपनी दादी मां का दिल जीतकर उसका प्यार हासिल कर लिया था।

अब तो बहुत रिश्ते लड़कियों के लिये आने लगे पर लड़के दादी मां पहले देखती थी। और कहती "वह बंदर करेगा मेरी सोनू से शादी? अरे शक्ल देखी है आइने में?"

"अरे वह तो रुपा की जूती की भी बराबरी भी नहीं कर सकता।" अब पोतियां उसे पोतों से भी ज्यादा मीठी और प्यारी थी। एक दिन सोना ने दादी मां को छेड़ते हुए कहा अमां अब बताओ हम क्या पोतों से कम है?

दादी ने दोनों पोतियों को गले लगाते और उन्हें चूमते हुए कहा नहीं बेटे तुम दोनों तो मेरे खरे बेटे हो। आज दादी पुरानी रिवायतों को भुलाकर नये दौर में शामिल हो गई थी।

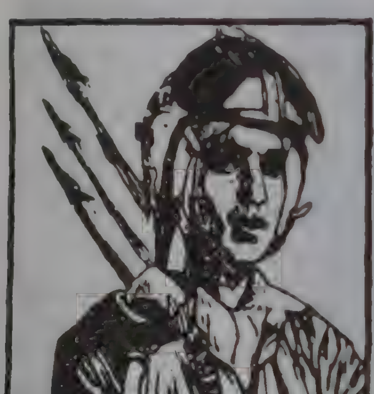
सिन्धुजनों ने रणभूमि में भी अपना युद्ध-कौशल दर्शाया है

वासुदेव सिन्धु-भारती

युगों- युगों से साहस के पर्याय सिन्धी समुदाय में ऐसे वीर-जवाहर जन्म लेते रहे हैं, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता सुरक्षा, सम्प्रभुता, एकता एवं अखंडता हेतु अविस्मरणीय बलिदान देकर भारत माता के दूध की लाज रखी है।

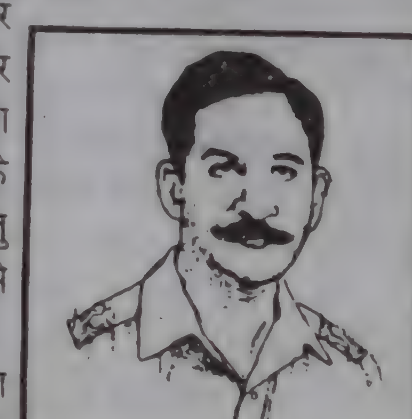
सिन्धु सम्राट दाहरसेन की दिलेरी किस से छिपी है। वे अरब आक्रमणकारियों के मस्तक काटते हुए, मातृभूमि की रक्षा करते वीरगति को प्राप्त हो गए। आज भी हम महाबली अमर उडेंरोलाल(झूलेलाल) की हम पूजा-अर्चना करते हैं, जिन्होंने मिरखशाह नामक ज़ालिम और कट्टरपंथी शासक के दमन चक्र अमानवीय अत्याचारों एवं धर्म विरोधी आचारण का अंत किया। किशोर क्रांतिकारी अमर शहीद हेमू कालाणी का नाम तो हमारे हृदय-पटल पर अंकित है जो भारत की आज़ादी के लिए हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गया।




फ्लाइंग ऑफिसर प्रेम रामचंदाणी

सन् 1965 में पड़ौसी देश पाकिस्तान ने नापाक इरादे से वीरभूमि भारत पर हमला बोल दिया। 24 वर्षीय युवा फ्लाइंग ऑफिसर प्रेम रामचंदाणी के हृदय में प्रतिशोध का मानो ज्वालामुखी फूट पड़ा। बस, केवल आदेश की देर थी। वे बांके बहादुर आकाश में उड़े और पाकिस्तान के फौजी अडडों को भारी क्षति पहुचांई। ज़मीन से दुश्मन लगातार उनके विमान पर गोलियां बरसाता रहा, किंतु साहसी रामचंदाणी ने इस प्रकार उड़ाने भरीं कि पाकिस्तानियों के सभी निशाने चूक गए। हमारे दिलेर ने लगातार दस बार बमबारी करके शत्रु के हौसले पस्त कर दिए। इस पर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ। जब उन्होंने 11 वीं बार हमला किया तो वे गोलियों की बौछार से बच न सके। बुरी तरह से घायल होने के बावजूद भी उनका हौसला बुलंद रहा और वे अपने विमान को भारतीय क्षेत्र में ले आए तथा अमृतसर के पास ही हवाई छत्री द्वारा नीचे कूद पड़े। उनको घायल अवस्था में फौजी अस्पताल में भर्ती किया गया। भरसक प्रयत्न करने के पश्चात भी डाक्टर उन्हें नहीं बचा पाए और 26 सितम्बर, 1965 को वे वीरगति को प्राप्त हो गए। भारतीय वायु सेना के इतिहास में उनका नाम और बलिदान अमर रहेगा।

इसी युद्ध में सिन्धी सपूत ब्रिगेडियर राम धरमदास हीरा ने भी पाकिस्तानियों के दांत खटटे कर दिए। सियालकोट क्षेत्र में दुश्मन हमला करें उससे पूर्व ही वे इस क्षेत्र की सप्लाई लाईन को ध्वस्त करने में जुट गए। इस बात की भनक पड़ते ही दुश्मन ने पूरी तैयारी के साथ हमला बोल दिया। ब्रिगेडियर हीरा ने अपने दूरदर्शितापूर्ण नेतृत्व में ऐसा कमाल कर दिखाया कि पाकिस्तानियों के होश उड़ गए। भारतीय जवान अपने ब्रिगेडिर की बेमिसाल बहादुरी से प्रभावित होकर शत्रु पर तूफान की तरह टूट पड़े और उन्हें छठी का दूध याद दिला दिया। भारत सरकार ने उनके अनुपम पराक्रम प्रदर्शन हेतु परम विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित किया।


मेजर रमेश बदलाणी

यह किसी ने सोचा भी न था कि जयपुर के महाराजा कालेज का एक छात्र मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहूति देगा? वे थे मेजर रमेश बदलाणी। हाल ही में उनकी सगाई हुई थी तथा विवाह के लिए 21 नवम्बर, 1971 का दिन तय हुआ था कि अचानक ही 4 नवम्बर 1971 को उन्हें तार द्वारा तत्काल ही मोर्चे पर उपस्थित होने का आदेश मिला,

क्योंकि सीमा पर पाकिस्तान की सैनिक गतिविधियां तेज हो गई थीं।

3 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। मेजर रमेश बदलाणी अपने सैनिकों के साथ शत्रु पर टूट पड़े। वे पाकिस्तानी चौकियों को मस्त हाथी की तरह रौंदते हुए शत्रु के क्षेत्र में आगे बढ़ने लगे। उनका साहस चरम सीमा पर था। शत्रु के हौसंले पस्त हो गए। अवसर पाकर पाकिस्तानी सैनिकों ने गोलियों की अंधाधुंध बौछार से मेजर बदलाणी का सीना छलनी कर दिया। उसके बावजूद भी वे अपनी सेना को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे और फिर धीरे-धीरे धरती पर लेट गए। 5 दिसम्बर,1971 को भारत मां के साहसी सपूत शहीद हो गए। उनका बलिदान रंग लाया और अंत में शत्रु की शर्मनाक पराजय हुई। यह पराजय पाकिस्तान को वर्षो तक याद रहेगी।

उक्त युद्ध के समय प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी कैप्टन मुरलीधर कोराणी एम.डी.कोराणी छम्ब क्षेत्र में तैनात थे। उन्होंने अपने चंद जांबाज़ जवानों के सहयोग से दुश्मन के आक्रमण का मुंह तोड़ जवाब देते हुए, उनके हथियार और बारूद से लदे 100 वाहनों को जला दिया। साथ-साथ 200 पाकिस्तानी फौजियों का काम तमाम करके दुश्मन को जान व माल की भारी क्षति पहुंचाई। इस भीषण युद्ध में हो रही भारी गोलीबारी के समय, एक गोली उनके पैर में आकर लगी और वे घायल हो गए। उसके उपरांत भी उनका हौसला बुलंद रहा और जंग जारी रही।

3 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। मेजर रमेश बदलाणी अपने सैनिकों के साथ शत्रु पर टूट पड़े। वे पाकिस्तानी चौकियों को मस्त हाथी की तरह रौंदते हुए शत्रु के क्षेत्र में आगे बढ़ने लगे। उनका साहस चरम सीमा पर था। शत्रु के हौसंले पस्त हो गए।

सन् 1973 में वे सेना से सेवानिवृत होकर भारतीय प्रशासनिक सेवा में आ गए और राजस्थान राज्य के कई महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होकर अपनी विलक्षण योग्यता का परिचय दिया।

इस प्रकार भारत पाक युद्धों के दौरान अनेक सिन्धु-सूरमाओं ने रणभूमि में अपने अदम्य साहस, अनुपम पराक्रम तथा अद्वितीय युद्ध-कौशल का प्रदर्शन कर शत्रुओं को धूल चटा दी और राष्ट्र के युद्धाकाश में कीर्तिमान के कई सितारे जड़ दिए। युद्ध में हमारे कई रणबांकुरे देश की रक्षा करते हुए शहीद हो गए।

ऐसे सिंधी जांबाज़ों की लम्बी सूची है, जिन्हें भारत सरकान ने श्रेष्ठछ शौर्य-प्रदर्शन हेतु पदकों एवं अंलकरणों द्वारा सम्मानित किया है। उनमें से कुछ उपलब्ध नाम इस प्रकार हैं:-

वीर चक्र

लेफ्टिनेंट भरतलाल गोपालदास मसंद,
फ्लाइट लेफ्टिनेंट चेरी हासानंद राणी,
फ्लाइंग ऑफिसर किशन लखीमल मलकाणी,
फ्लाइंग ऑफिसर हरीश मसंद।

परम विशिष्ट सेवा मेडल
ब्रिगेडियर राम धरमदास हीरा।

अति विशिष्ट सेवा मेडल
ब्रिगेडियर चन्द्र आडवाणी।

विशिष्ट सेवा मेडल
लेफ्टिनेंट कर्नल अशोक गुलाणी,
लेफ्टिनेंट कर्नल कृष्ण थधाणी,
नौ सेना कमांडर गुलाब थधाणी,
मेजर ललित चन्द्र ईदनाणी,
स्क्वाड्रन लीडर गोपाल हिंगोराणी।

सेना मेडल

नौसेना कमांडर गुलाब हीरांनदाणी
लेफ्टिनेंट कर्नल माधव महबूबाणी,
लेफ्टिनेंट कर्नल गुलाब वाधवाणी,
मेजर सुरेन्द्र जेतली,
मेजर नरेन्द्र जेतली,
मेजर ओम प्रकाश कालरा,
मेजर सुभाषा चन्द्र वीरवाणी,
मेजर चन्द्र नंदवाणी
मेजर प्रीतम छबलाणी,
मेजर राजकुमार कालरा,
मेजर आनंद महताणी,
मेजर अर्जुन भावनाणी,
मेजर रमेश बदलाणी,
कैप्टन अर्जुन कनल,
कैप्टन साहिब छुगाणी,
कैप्टन गुरूप्रसाद गिदवाणी,
केप्टनन रघुवीर वीरवाणी,
फ्लाइट लेफ्टिनेंट रमेश चंदनाणी।

भारत के सजग प्रहरी

12 मई, 1930 को सिन्ध (तत्कालीन भारत) की

पावन धरती पर जन्में, भारतीय नौसेना के सर्वोच्च पद पर आसीन रहे, पूर्व नौसेना अध्यक्ष एडमिरल राधाकृष्ण हरीराम टहिलियाणी (आर.एच.टहिलियाणी) द्वारा राष्ट्र हेतु समर्पित उत्कृष्ट सेवाओं को कैसे भुलाया जा सकता है। भारत पाक युद्धों में उन्होंने शीर्ष भूमिका निभाई हैं।

विदेश में प्रारम्भिक सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने 1 सितम्बर 1950 को 20 वर्ष की आयु में भारतीय नौसेना में प्रवेश किया। दिसम्बर, 1977 में वे रियर एडमिरल बनाए गए। फरवरी 1982 में उन्हें दक्षिणी नौसैनिक कमान का फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग इन-चीफ एवं मार्च, 1983 में पश्चिमी नौसैनिक कमान का एफ.ओ.सी. इन-सी बनाया गया। उन की विलक्षण प्रतिभा, दूरदर्शित अपूर्व कुशलता एवं विशिष्ट योग्यता ने उन्हें मई, 1984 में सह नौसेना अध्यक्ष के पद पर पहुंचा दिया। यह आश्चर्य का विषय है कि छह मास की अल्प अवधि में ही 30 नवम्बर 1984 को वे भारतीय नौसेना के सर्वोच्च नौसेना अध्यक्ष के पद पर पदस्थापित किए गए।

उनके स्वर्णकार में कई सुधार हुए और नौसेना चहुंमुखी विकास तथा प्रगति की ओर अग्रसर हुई। इससे पूर्व में सन् 1975 में अति विशिष्ट सेवा मेडल तथा सन् 1984 में परम विशिष्ट सेवा मेडल द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। पूर्व में वे जग प्रसिद्ध विमान वाहन विक्रांत पर लड़ाई विमान चालक भी बने। राष्ट्रीय रक्षा कालेज, नई दिल्ली द्वारा भी उन्हें उपाधि प्राप्त हुई। अमरीका के नौसैनिक युद्ध कालेज से वे स्नातक बने।

नौसेना अध्यक्ष के पद से सेवा निवृत होने के पश्चात उन्हें सिक्किम राज्य का राज्यपाल मनोनीत किया गया। अब वे इस सम्मानीय पद से सेवा निवृत होकर सामाजिक गतिविधियों से जुड़ गए हैं।

सेना के अतिरिक्त कई सिन्धी पुलिस अधिकारियों ने भी अपने अदम्य साहस और उत्कृष्ट योग्यता के कारण इनाम-इकरार और पदक प्राप्त किए हैं। उन में से कुछ शख्सियतें इस प्रकार हैं,जिन्हें राष्ट्रपति पुलिस पदक से नवाज़ा गया है:- उप महानिदेशक जे.के.बालाणी,पुलिस अधीक्षक पदम डी.शर्मा, पुलिस उपअधीक्षक एम.टी.महताणी सी.बी.आई. कानूनी सलाहकार के.एच.कर्मचंदाणी सी.बी.आई. कानूनी सलाहकार के एच. कर्मचंदाणी,उत्कृष्ट सेवाओं हेतु सहायक कस्टम कलेक्टर टी.एम.गेहाणी आदि।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी सिन्धुजनों ने सक्रिय भाग लिया, ब्रिटिश शासन से लोहा लिया, लाठियां और गोलियां खाई, जेलों में सज़ाएं भुगतीं, वरिष्ट नेताओं को भरसक आर्थिक सहायता भी दी।

इनके अलावा ऐसे सैकड़ों प्रतिभाशाली महानुभाव हैं, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपना कौशल दिखा कर पुरस्कार पदक, अंलकरण- उपाधियां एवं सम्मान आदि प्राप्त किए हैं, किन्तु वांछनीय साधनों के अभाव में सम्बंधित आंकड़ों का संकलन सम्भव नही हो पाया है। उपरोक्त ब्यौरा लगभग 15-25 वर्ष पूर्व का है। तब से लेकर आज तक अनेक प्रतिभाएं पुरस्कृत एवं सम्मानित हुई होंगी। उन आंकड़ों का संग्रह अभी शेष है।

सिन्धुजनों के लिए बहुधा यही कहा जाता है कि वे केवल वाणिज्य-व्यवसाय में ही प्रवीण है और युद्ध आदि से उनक कोई सम्बन्ध नहीं है। इतिहास के अतीत के पृष्ठ पटल कर देखिए, आपको ज्ञात हो जाएगा कि अनगिनत बर्बर विदेशी आतताईयों एवं आक्रांताओं ने सम्पन्न तथा समृद्धशाली सिन्धु देश पर अपना आधिपत्य जमाने हेतु क्या कुछ नहीं किया। उसे रौंदा,लूटा और सीना छलनी कर दिया। सिन्धुवंशी मरते दम तक मुकाबला करते रहे। उनका यह संघर्ष सदियों तक जारी रहा। अत: लम्बी अवधि तक युद्धरत होने के कारण उन्हें जंगजू कौम बनना पड़ा।

शताब्दियों पूर्व असीरिया की महारानी सेमीरामिस ने अपनी विशाल सेना के साथ सिन्ध पर धावा बोल दिया। सिन्धजनों ने जान लड़ा दी, किंतु विशाल सेना के कारण उसे परास्त करने में उन्हें सफसता नहीं मिली। वह नगरों को ध्वंस करती हुई आगे बढ़ी। इसी बीच सिन्धु सेना का पुनर्गठन हुआ और वह अपनी पूरी शक्ति के साथ दुश्मन पर टूट पड़ी। कहते हैं कि महारानी युद्ध में बुरी तरह से घायल होकर भाग खड़ी हुई और मकरान के निकट भूख-प्यास के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

यूनानी शहंशाह सिंकदर जब स्वदेश लौटते समय सिन्धु नदी पार करने लगा तो उसकी विशाल सेना ने सिन्ध में भयानक रक्तपात किया और कई लोग मारे गए। सिन्धु सेनानी उसका वीरता पूर्वक सामना करते रहे। अचानक एक सिन्धु सेनानी का बाण सिंकदर के सीने को भेद गया। तत्पश्चात वह अविलम्ब वापस यूनान लौटने के लिए विवश हो गया और काबुल पहुंचते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।

इस प्रकार ईरानी,यूनानी, शक, हूण, सासंनी अरब, अफगानी तथा अन्य कई ज़ालिम जातियां आई और चली

गई या अपना वजूद खो कर यहीं लुप्त हो गई, किन्तु सिन्धी कौम आज भी जिन्दा हैं। संसार का कोई भी सामंतेश्वर स्वाभिमानी एवं साहसी सिन्धुवंशियों के अस्तित्व को नहीं मिटा पाया। किसी शायद ने सही कहा है- **कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा।**

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी सिन्धुजनों ने सक्रिय भाग लिया, ब्रिटिश शासन से लोहा लिया, लाठियां और गोलियां खाई, जेलों में सज़ाएं भुगतीं, वरिष्ट नेताओं को भरसक आर्थिक सहायता भी दी।

कारगिल युद्ध के समय भी सिन्धु समुदाय के प्रत्येक वर्ग ने देश की सुरक्षा और स्वाभिमान को कायम रखने के लिए अपना सम्पूर्ण सहयोग दिया, हर सम्भव आर्थिक सहायता कर सरकार ओर सेना का मनोबल ऊंचा रखा, उनका हौसला बुलंद किया। यह कैसी विडम्बना है कि जिस कौम ने शताब्दियों से अपनी मातृभूमि की रक्षा करते अनगिनत बलिदान दिए, पुरस्कार स्वरूप उसे भारत पाक विभाजन के समय, अपनी ही जननी जन्म-भूमि सिन्ध से निष्कासित कर, जड़ों से ही उखाड़ दिया गया।

सिन्धुजनों का यह चुनौतीपूर्ण और संघर्षमय जीवन और कब तक जारी रहेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। वे समय के कुठाराघातों, विकट परिस्थियों और और घोर आपदाओं से जूझते हुए, अपना आत्मसम्मान, अस्तित्व और पहचान कायम रखते हुए, भारत की सम्प्रभुता, सुरक्षा प्रगति और चहुँमुखी विकास हेतु सक्रिय सहयोग करके अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य निभा रहे हैं।

प्रेरणादायी प्रसंग

जुलाहा

किसी नगर में एक जुलाहा रहता था वह स्वभाव का बड़ा अच्छा था, सभी से मीठे वचन बोलता था और कभी किसी से नाराज नहीं होता था, लोग उसे संत कहा करते थे।

एक दिन कुछ शरारती लड़के उस के यहां पहुंचे। वे उसकी परीक्षा लेकर यह जानना चाहते थे कि उसे गुस्सा क्यों नहीं आता। उन में से एक बहुत धनी आदमी का लड़का था उसे अपने पैसे का घमण्ड था।

उन लड़कों के देखते ही जुलाहे ने बड़े प्यार से कहा आओ बेटा "तुम लोगों को क्या चाहिए? सामने रखी साड़ी की तरफ इशारा करके एक लड़के ने कहा, "मुझे वह साड़ी चाहिए", उसका क्या लोगे?

जुलाहे ने कहा 2 रूपए।

उस लड़के ने साड़ी हाथ में ले ली और उसके 2 टुकड़े करके पूछा इसका क्या दाम होगा?

8 आना जुलाहे ने बिना किसी प्रकार की नाराजगी के कहा।

युवक तो उसको चिढ़ाना चाहता था। वह साड़ी के टूकड़े पर टुकड़े करता गया पर जुलाहे ने उसको न रोका, न डांटा और न हीं अपने माथे पर शिकन तक आने दी।

जब साड़ी के बहुत से टुकड़े हो गए तो लड़का हंसते हुए बोला, ये टुकड़े मेरे किस काम के मैं इन्हें नहीं खरीदूंगा।

जुलाहे ने बिना किसी तेजी के कहा, तुम ठीक कहते हो बेटे, ये टुकड़े अब तुम्हारे क्या किसी के भी काम नहीं आ सकते।

लड़के को उसकी इस बात पर कुछ शर्म महसूस हुई, उसने कहा, यह लो, मैं तुम्हें साड़ी के दाम देता हूं।

जुलाहे ने रूपये नहीं लिये बोला, मैं इन टुकड़ों को जोड़कर काम में ले आऊंगा। जब ये तुम्हारे काम नहीं आ सकते तो मैं इन के दाम कैसे ले सकता हूं। लड़के के ऊपर तो अपने धन का नशा चढ़ा था, अतः बोला, मेरे पास बहुत रूपए हैं पर तुम गरीब हो मैंने तुम्हारी चीज़ खराब कर दी उसका घाटा मुझे पूरा करना चाहिए।

जुलाहे ने धीमी आवाज में कहा क्या तुम इस घाटे को पूरा कर सकते हो?

क्या तुम समझते हो कि रूपए से यह घाटा पूरा हो जाएगा? देखो किसानों की मेहनत से कपास पैदा हुई, उसकी रूई से मेरी स्त्री ने सूत काता मैंने उस सूत को रंगा फिर उससे साड़ी बुनी। हमारी मेहनत तब कारगार होती जब कोई इस साड़ी को पहनता। तुमने तो इसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इतने लोगों की मेहनत बेकार गई, रूपए से इस घाटे को कैसे पूरा कर सकते हो?

जुलाहे की आवाज़ में तनिक भी आवेश न था। वह तो उसे ऐसे समझा रहा था, जैसे कोई बाप बेटे को समझा रहा हो, लड़का पानी-पानी हो गया। उसकी आंखें भर आई, वह जुलाहे के पैरों में गिर गया। जुलाहे ने उसे उठाकर छाती से लगाते हुए कहा, बेटा, अगर मैं लालच करके दो रूपये ले लेता तो तुम्हारी जिंदगी का वहीं हाल हुआ होता जो इस साड़ी का हुआ है, अब तुम समझ गए, तुम आगे ऐसी गलती कभी नहीं कर सकते। एक साड़ी खराब हुई, दूसरी तैयार हो सकती है, लेकिन जिंदगी बिगड़ गई तो दूसरी कहां से लाओगे? लड़का और उसके साथी यह सुन बहुत शर्मिंदा हुए फिर सिर नीचा करके चले गए।

जानते हैं यह कौन थे? यह थे दक्षिण के "महान संत तिरूवल्लुवर" जिनका लिखा "कुरल" आज दो हज़ार वर्ष बाद भी बड़ी श्रद्धा से पढ़ा जाता है।

अधूरा सुहाग

-उधाराम के. होतचंदानी



श्री उधाराम के. होतचन्दानी का जन्म 5 अप्रैल 1946 को हैदराबाद सिन्ध अब पाकिस्तान में हुआ था। 1947 में भारत विभाजन के बाद अपने परिवार के सदस्यों के साथ विभिन्न शहरों से होते हुए हैदराबाद (अब आन्ध्रप्रदेश की राजधानी)में आकर बस गये। इनकी शुरू से अंत तक शिक्षा हैदराबाद में हुई। इन्होंने उस्मानिया युनिवर्सिटी हैदराबाद से स्नातक की डिग्री बी.कॉम अग्रेंजी माध्यम से सन् 1972 में प्राप्त की। बचपन से ही लेखन और नाटकों में काम करने की रूची रही। स्कूल तथा कालेज में प्रकाशित पत्रिकाओं में अक्सर रचनाएं प्रकाशित होती रहती थी। और समय समय पर नाटकों में भी भाग लेते रहे।

इन्होंने दो वर्ष तक आर्टिलरी सेंटर मिलट्री हैदराबाद में अध्यापक का कार्य किया। बाद में यह नौकरी छोड़ भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार के कार्यालय में विभिन्न पदों पर कार्य करते रहे।

केन्द्रीय सरकार का कार्यालय होने के कारण विभिन्न शहरों में इनका तबदला होता रहा। लगभग भारत के सभी बड़े शहरों का भ्रमण कर चुके हैं। इन्हें लेखन भ्रमण तथा नाटक में भाग लेने में रूची है। अप्रैल 1999 में सेवानिवृत होकर अब बैरागढ़ में बस गये है।

वर्तमान में भारतीय सिंधु सभा एवं सन शाईन ट्रस्ट में कमेटी मेम्बर के पदों पर निस्वार्थ भावना से सेवा कर रहे हैं, इनका उदेदश्य है कि जब तक शरीर में जान है तब तक समाज की सेवा में समर्पित रहे।

उनका लिखित यह पहला सामाजिक उपन्यास है जो कड़ियों में सिन्धु महक पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है।

-सम्पादक

पात्र-परिचय

किशन- जमींदार का बेटा
लक्ष्मी- किशन की मां
लता- किशन की पत्नी
शंकर- रामप्रसाद का बेटा
कमला- हरिप्रसाद की बेटी, लता की सहेली तथा शंकर की मंगेतर
आशा- मकान मालिक की बेटी
रामू- रामप्रसाद का नौकर
चम्पा- जमींदार की नौकरानी



कहते हैं कि जब हुस्न आता है तो नजाकत आ ही जाती है वह खूबसूरत थी, इतनी कि देखने वाले दंग रह जाए उभरता हुआ यौवन किसी को भी उसकी ओर देखने के लिये मजबूर कर सकता था। जिधर से वह गुजरती लोग काम छोड़कर उसकी ओर देखने लगते। वह छलकता हुआ ऐसा सागर थी जिसको हर कोई पीने की कोशिश करता, क्योंकि वह किसी अप्सरा से कम नहीं थी। उसको देखकर लोग कहते थे कि भगवान ने जरूर उसे फुरसत में बनाया होगा। यह है लता, जिसको देखकर लोग तड़प जाते थे, मगर हाय रे किस्मत, इतनी खूबसूरत लड़की होते हुए भी उसमें घमंड बिल्कुल नहीं था और न ही नजाकत थी। वह बिल्कुल शांत स्वभाव की थी। उसको दुनिया की कोई फिक्र नहीं, लोग उसके बारे में क्या-क्या कहते हैं इस पर कभी ध्यान जब भी वह अकेली होती उसके सामने नाटक की तरह दृष्य बदलने लगता। उसको अब भी याद है पिछले वर्ष, उसके पिता का लंबी बीमारी के कारण देहान्त हो गया था। उसकी मां ने बड़ी मुश्किल हालत में पति का क्रियाकर्म किया, क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। बीमारी के कारण घर में तंगी हो गयी थी। लोग उसके घर सहानुभूति दिखाने आते मगर कोई भी दिल से उनकी मदद नहीं करता। जो जमीन उनके पास थी वह भी जमींदार ने झूठी लिखा पढ़ी करके छीन ली और कहा कि तुम्हारे पिता ने दो हजार रुपये कर्ज लिये थे, उसके बदले में यह जमीन ले रहा हूं। जब भी तुम्हारे पास लौटाने के लिये रकम होगी। अपनी जमीन

वापस ले लेना। असल में उसके पिता ने पिछले साल बीज के लिये दो सौ रुपये उधार लिये थे लेकिन जमींदार ने उसको दो हजार बना दिया।

जब जमींदार जमीन अपने कब्जे में कर रहा था तो मां ने जमींदार के पांव पकड़कर कहा था..... हमारे लिये यही एक सहारा है, हमसे वह भी ले लोगे तो हम किसके सहारे जीवन गुजारेंगे। थोड़ा-थोड़ा कर कर्जा उतार देंगे। मगर जमीदार को उन पर कोई दया नहीं आयी और वह चला गया। मां बहुत रोयी, मां को देखकर लता भी रोने लगी। अब सचमुच उसकी आंखों में आंसू आ गये।

लता-लता की आवाज सुनकर वह भूतकाल से वर्तमान में आ गयी। देखा कि उसकी बचपन की सहेली कमला उसके सामने खड़ी है। अचानक देखकर, उसे ताज्जुब (आश्चर्य) हुआ। जल्दी से मुंह फेरकर अपने आंसू पोंछने लगी मगर कमला ने वह सब देख लिया।

पगली रो रही है। जिंदगी में दुःख सुख आता ही रहता है। रात के बाद दिन जरूर आता है मगर आदमी रात के अंधेरे में घबरा जाये तो उसके लिये सुबह का कोई महत्व नहीं होता। कहते हैं जिंदगी में गम भी साथ लगे रहते हैं, कोई गम में हंसता है, कोई गम में रोता है। इसलिये क्यों न गम को हंसकर टाल दिया जाए।

तुम तो किस्मत वाली हो कि मां का साथ अभी तुम्हारे साथ है। घबराने की क्या बात है? मुझे देखो-मां के प्यार के लिये तरस रही हूं, फिर भी खुश हूं- कमला ने कहा।

अरे मैं भी क्या बातें ले बैठी। जिस काम से आयी थी वह तो भूल ही गई।

ऐसा क्या काम था जो भूल गई- लता ने पूछा।

तुझे याद नहीं, आज मेला देखने जाना है। महाकाली की पूजा होगी। कुछ लोग कह रहे हैं कि एक नौटंकी भी आयी है जो अच्छे -अच्छे नाटक दिखा रही है।

मैं मां को पूछकर चलूंगी। लता ने कहा।

मां जो उस समय काम करके



घर में दाखिल हुई थी, उसने लता की बात सुन ली और कहा कहां जाना है? जो मां से पूछने की ज़रूरत आ पड़ी है।

हम मेला देखने जा रही हैं, मगर लता तुम्हें पूछे बिना कहीं पर भी चलने को तैयार नहीं है- कमला ने कहा।

बेटी, तुम दोनों स्यानी हो गयी हो, अब मेला देखने के दिन नहीं हैं। मैं तो सोच रही हूं लता के हाथ जल्दी से पीले कर दूं, मगर मुझ गरीब की बेटी को कौन सहारा देगा/भगवान ही मदद करेगा।

मां, तुम भी क्या बातें ले बैंठी/हर काम अपने समय पर होता है/खैर अब इजाजत दे दो...... कमला ने कहा।

अच्छी बात है मगर जल्दी लौट आना, जमाना खराब है- मां ने कहा।

कमला- लता से यह कह कर चली गई कि जल्दी से तैयार हो जाओ, मैं भी तैयार होकर आती हूं।

उसके जाने के बाद लता ने मां ने कहा- नाराज तो नहीं हो मां, मैं जाना नहीं चाहती थी मगर कमला जबरदस्ती कर रही है। अगर तुम्हारा दिल नहीं है तो नहीं जाऊंगी।

ऐसी बात नहीं है बेटी, मैं तो इसलिये कह रही थी कि हम लोग गरीब है। खेल तमाशों में हमको क्या दिलचस्पी। कमला बड़े बाप की बेटी है। उनको ये सब शोभा देता है। वैसे कमला बहुत अच्छी लड़की है तुम्हारे साथ बचपन से खेल रही है, इसलिये इसलिये मैंने मान लिया अब तुम जल्दी से तैयार हो जाओ वह आती ही होगी।

लता जल्दी-जल्दी तैयार होने लगी मगर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या पहने और क्या न पहनें क्योंकि उसके पास अधिक कपड़े तो थे नहीं, फिर भी उसकी नजर में जो अच्छा दिखा, वह पहन लिया। इन सादे कपड़ों में भी वह पूनम के चांद की तरह दिखाई दे रही थी।

कमला ने जब लता को देखा तो देखती रह गई। ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई अप्सरा बिना श्रृंगार के देवलोक से जमीन पर उत्तर आयी हो। कमला ने कहा तुमको देखकर किसी की भी नीयत डांवाडोल हो सकती है। अगर मैं लड़का होता तो तुमसे ही शादी करता। यह कहकर उसने जल्दी से लता का चुम्बन ले लिया।

धत बड़ी शरारती है तू/इसलिये

तेरे साथ नहीं चल रही थी। मुझे मालूम है आज तेरा शंकर नहीं, इसलिये वह कमी मुझसे निकाल रही है। शंकर का नाम सुनकर कमला के गालों में लाली आ गयी मगर उसने स्थिति को सम्भालते हुए कहा- बहुत बातें बनाने लगी हो। अब चलो बहुत देर हो गयी है मेले तक पहुंचते-पहुंचते आधा घंटा लगा जायेगा। रास्ते भर एक दूसरे से हंसी मजाक करते हुए दोनों मेले जा पहुंची।

कमला धनवान बाप की लाड़ली बेटी थी। लता से उम्र में चार साल बड़ी थी। इस समय उसकी उम्र 22 की है। वह लता को अपने से छोटा या गरीब नहीं समझती थी। उसमें घमंड बिल्कुल नहीं था। वह लता से छोटी बहन की तरह प्यार करती। इसलिये लता की मां ने कमला के सादे स्वभाव और प्यार की वजह से अपनी बेटी को उसके साथ जाने दिया।

जब दोनों मेले में पहुंची देखा बहुत भीड़ है, वे भी इधर-उधर घूमने लगी। ऐसा लगता था कि दोनों सगी बहनें है। दोनों का हंस-हंसकर बातें करना हाथ में हाथ डालकर चलना किसी को भी अंदाजा नहीं हो सकता था कि एक अमीर घर की दूसरी गरीब घर की है।

दोनों मिलकर झूले में बैठी। इधर-उधर खाया-पिया और नाटक देखा। नाटक में दिखाया गया कि राजा हरिशचंद्र ने सत्य और मान मर्यादा के लिये सब कुछ दे दिया। अंत तक अपने वचन पर कायम रहे। यह नाटक गांव वालों को बहुत पसंद आया। लोगों के दिल पर ऐसा असर हुआ कि कहने लगे हम भी राजा हरिशचंद्र की तरह अपनी मान मर्यादा के लिये ऐसा ही करेंगे।

काश वे ऐसा कर सकते! क्योंकि अब तो पहले जैसा जमाना नहीं रहा। लोगों में प्रेम सहयोग एवं एकता नहीं रही। न वो राजा रहे ही वैसी प्रजा। उस जमाने में लोगों के चेहरों पर मुस्कुराहट होती थी, मगर आजकल हर एक के चेहरे पर कुछ न कुछ गम नजर आता है। कहीं सूखा पड़ रहा तो कहीं अधिक वर्षा के कारण बाढ़ आई हुई है। कहीं गांवों के लोग जमींदारों के जुल्मों से तंग आ गये हैं। वर्तमान में तो देश के कुछ नेता, दीमक की तरह इस देश को खोखला कर रहे हैं। चारों और भ्रष्टाचार है। ऐसी हालतों में सत्यवादी हरिशचंद्र के मर्यादाओं की तरह चलना मुश्किल ही नहीं असंभव है।

लता और कमला ने भी नाटक देखा। उनके दिमाग पर भी कुछ -कुछ असर हुआ। कुछ देर रात तक तो वे नाटक के बारे में बातें करती रही, फिर इधर-उधर घूमकर उन्होंने अपना मन खेल तमाशों में लगा दिया। अंत में जाते समय कमला ने लता के मना करने पर भी उसके लिये हाथी दांत का एक हार ले लिया।

मेरे मना करने पर भी तुमने इतना कीमती हार क्यों लिया। तुम हमेशा कुछ न कुछ मेरे लिये लेती रहती हो। मैंने अभी तक तुम्हें कुछ भी नहीं दिया। सोचती हूं, जरूर पिछले जन्म में कोई अच्छा काम किया था जिसके फलस्वरूप इस जन्म में तुम जैसी मेहरबान सहेली मिली है।

अरे, पगली हो गयी है क्या? जन्म जन्मांतर की बातें ले बैठी है, मैं तो तुम्हें अपनी बहन समझती हूं ये हार मेरी निशानी समझकर रख ले। अगले साल फिर मिलकर मेला देखना का भाग्य में है या नहीं, इंकार मत करना। कमला का स्नेह देखकर लता ने हार पहन लिया। इस तरह की कई बातें करते-करते घर की ओर चल पड़ीं। लता को उसके घर छोड़कर कमला अपने घर की ओर चल पड़ी, जो उसके घर से कुछ ही दूरी पर था।

घर पहुंचते ही उसने देखा कि पिताजी उसके इंतजार में टहल रहे हैं। कमला को देखते ही हरिप्रसाद ने कहा- बेटी आ गयी तुम। इतनी देर तक तुम्हें बाहर नहीं रहना चाहिए। जमाना बहुत खराब है।

मैं, लता के साथ मेला देखने गयी थी। मेला देखते-देखते समय का पता ही नहीं चला, थोड़ी देर हो गयी माफ करना पिताजी आगे से आपको ऐसी शिकायत का अवसर नहीं दूगीं।

शाबाश बेटी, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। तुम हमेशा इस घर की मान मर्यादा का ख्याल रखोगी। लता के साथ जाने से हरिप्रसाद को कोई शिकायत नहीं थी, क्योंकि वह जानते थे कि, लता गरीब मां बाप की बेटी है जिसका बाप पिछले वर्ष गुजर गया था, मां मेहनत मजदूरी कर खुद और बेटी का पालन पोषण करती है बहुत शरीफ लोग हैं।

कुछ देर खामोश रहने के बाद हरिप्रसाद की नजर अपने हाथों पर गयी तो उनका ध्यान उस तार की ओर गया जो कुछ देर पहले आया था। उन्होंने वह तार अपनी बेटी को दिया।

कमला ने वह कागज तो ले लिया मगर कुछ परेशान होने लगी। मालूम नहीं क्या है। एक नजर पिता की ओर डालकर जल्दी से उसको खोलकर पढ़ा। पढ़ते ही उसके होश

लता और कमला ने भी नाटक देखा। उनके दिमाग पर भी कुछ -कुछ असर हुआ। कुछ देर रात तक तो वे नाटक के बारे में बातें करती रही, फिर इधर-उधर घूमकर उन्होंने अपना मन खेल तमाशों में लगा दिया। अंत में जाते समय कमला ने लता के मना करने पर भी उसके लिये हाथी दांत का एक हार ले लिया।

उड़ गये। उसने सोचा भी नहीं था कि इतना जल्दी ऐसा होगा। उसमें लिखा था कि शंकर कल आ रहा है। उसके अरमान जाग उठे उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। पिताजी कहकर गले से लग गयी। हरिप्रसाद बेटी की हालत देखकर मुस्कराने लगी।

हरिप्रसाद ने बेटी के सर हाथ फेर कर कहां हां बेटी कल शंकर आ रहा है पूरे दो साल बाद अब उसने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है। सोचता हूं कि जल्दी से तुम्हारे हाथ पीले कर दूं और अपना बुढ़ापा किसी तीर्थ स्थान पर जाकर गुजार लूं।

शादी की बात सुनते ही वह पिताजी से अलग हो गयी और शर्माती हुई अपने कमरे की ओर भाग गयी।

शंकर, हरिप्रसाद के दोस्त रामप्रसाद का बेटा था। रामप्रसाद हरिप्रसाद से उम्र में बड़ा था और धन में भी कुछ अधिक था। दोनों का घर नजदीक ही था। रामप्रसाद अक्सर अयाशी में दिन रात गुजारता रहता था। कभी किसी को परवाह नहीं करता थ। हरिप्रसाद से कभी-कभी मिलता रहता था। जब भी मिलते हरिप्रसाद उसे समझाने की कोशिश करता मगर वह कभी किसी की नहीं सुनता हमेशा अपनी मस्ती में रहता।

एक दिन रामप्रसाद शराब के नशे में मस्त होकर मुजरा सुन रहा था, गाना समाप्त होने पर कुछ गुंडों ने नाचने वाली से छेड़छाड़ की। इस बात पर रामप्रसाद को गुस्सा आ गया और वह गुंडों से लड़ने लगा। इसी लड़ाई में एक गुंडे का खून हो गया। छुरा (चाकू) रामप्रसाद को मारने के लिये चलाया गया, मगर अचानक उसका साथी बीच में आ गया। छुरा उसके दिल में लगा और वह वहीं पर ढेर हो गया। मुजरा देखने वाले खून -खून चिल्लाते हुए भागने लगे। जिसने खून किया था। वह तो पहले ही भाग गया। राम प्रसाद घबरा गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? उसके सामने एक लाश पड़ी हुई थी। इतने में पुलिस आ गयी उन्होंने इसे खूनी समझकर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस वाले पूछताछ करने लगे जो भी लोग वहां पर थे किसी ने भी सच नहीं कहा क्योंकि उनको डर था अगर कुछ कहा तो कहीं का गुंडा उनका भी खून न कर दें। जब अधिक जानकारी नहीं मिली तो इंस्पेक्टर, रामप्रसाद को अपने साथ पुलिस स्टेशन ले गया।

उसके सामने एक लाश पड़ी हुई थी। इतने में पुलिस आ गयी उन्होंने इसे खूनी समझकर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस वाले पूछताछ करने लगे जो भी लोग वहां पर थे किसी ने भी सच नहीं कहा क्योंकि उनको डर था अगर कुछ कहा तो कहीं का गुंडा उनका भी खून न कर दें।

जब हरिप्रसाद को यहा किस्सा मालूम हुआ तो पड़ोसी के नाते उनको दया आ गयी। जल्दी से पुलिस स्टेशन गये और रामप्रसाद को जमानत पर छुड़ाकर अपने घर की ओर ले आए। मगर वह तो इनके घर आने के लिये संकोच कर रहा था तथा अपने-आप शर्मिंदा हो रहा था।

घबराओ मत, मेरे साथ घर चलकर आराम से बैठो। जलपान करो और फिर मुझे घटना के बारे में सबकुछ सच-सच बताओ। घर पहुंचने पर हरिप्रसाद ने बेटी को आवाज दी- कमला।

जी पिताजी!

देखो बेटी, चाचा जी आये हैं इनके लिये नाश्ते वगैरह का इंतजाम करो।

क्यों तकलीफ करते हो, मुझे भूख नहीं है इसमें तकलीफ की क्या बात है। पहले कुछ खा लो फिर आराम से बैठकर सब सुनाया। जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ।

थोड़ी देर बाद कमला नाश्ता बनाकर ले आई। हरिप्रसाद के दबाव व स्नेह के कारण उसने नाश्ता किया। इसी दौरान उसने शुरू से अंत तक हर बात सही सही बता दी उसने बताया कि किस तरह कालू गुंडा आया लड़ाई हुई, किसी का खून हो गया। वह कैसे शिकंजे में आ गया और पुलिस पकड़कर ले गई।

मुझ पर आपने बड़ी मेहरबानी की जो जमानत पर छुड़ा लाये वरना जेल में दम तोड़ देता। कहा रामप्रसाद ने, मुझे मेरे कर्मो का फल मिल गया। अगर पहले ही तुम्हारी बातें मान लेता तो आज यह दिन न देखना पड़ता। इस अपमान के बाद जीना भी बेकार है। उसे अपनी करनी पर पश्चाताप हो रहा था।

ऐसा क्यों कहते हो? भगवान ने चाहा तो तुम फिर से इस गांव मे सम्मान के साथ रह सकोगे। सुबह का भूला अगर शाम को घर वापस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते।

अच्छा अब चलता हूं, मेरा बेटा न जाने किस हाल में होगा? आपका बहुत-बहुत धन्यवाद जो इस घड़ी में मेरा साथ दिया।

रामप्रसाद जैसे ही घर पहुंचे नौकर ने देख लिया। मालिक को देखते ही उसके आंखों में आंसू आ गये।

रामू क्यों रो रहा है मेरा बेटा तो ठीक है न? छोटे मालिक तो ठीक है मगर उन्होंने दो दिनों से कुछ भी नहीं खाया है। आपके जाने के बाद रो-रोकर बुरा हाल बना दिया है। वैसे शंकर 25 वर्ष का नवयुवक था मगर आजकल के लड़कों की तरह नहीं था वह सीधा सादा गांव का रहने वाला था मैट्रिक पास करने के बाद उसने शहर

में आगे पढ़ने के लिये पिता से आज्ञा मांगी, मगर पिता के मना करने पर ज्यादा जिद नहीं की। ज्यादातर अपने कमरे में कुछ न कुछ पढ़ता ही रहता। जब उसे पिता के गिरफ्तार होने की बात मालूम हुई तो उसके दिल को बहुत धक्का लगा, उसे बहुत दुःख हुआ इसी गम के कारण उसने न खाया न ही कुछ पिया अपने कमरे में पड़ा रोता रहता।

रामप्रसाद जल्दी-जल्दी अपने बेटे के कमरे में गये पिता को देखते ही शंकर ने उनके चरण स्पर्श किये।

बेटा, खुश रहो, भगवान मेरी उम्र भी तुमको दे, रामू कह रहा था कि तुमने दो दिन से कुछ नहीं खाया है। जल्दी उठो, हाथ मुंह धोकर खाना खा लो। इस तरह घबरा जाओगे तो जिंदगी कैसी कटेगी। भगवान को शायद यही मंजूर था।

पिता के कहने पर शंकर ने हाथ मुंह धोकर थोड़ा सा खाना खा लिया।

दूसरे दिन से रामप्रसाद के जीवन में परिवर्तन आ गया, उसने शराब न पीने की ठान ली, मुजरा वगैरह भी देखना छोड़ दिया। गिरफ्तारी के कारण दिल पर जो सदमा लगा वो अंदर ही अंदर उसे खाने लगा। वह कुछ बीमार रहने लगा, हरप्रसाद से भी अक्सर मिलता रहता, उसको मालूम था हरिप्रसाद कभी, किसी को भी गलत राय नहीं देता है। उसके जैसा दयालु और रहमदिल आदमी उनको अभी तक नहीं मिला था। दिन-ब-दिन रामप्रसाद की हालत बिगड़ती गई, और इसी तरह तड़पते -तपड़ते छः महीने गुजर गये।

एक दिन अचानक दिल का दौड़ा पड़ा और बेहोश हो गये। शंकर ने देखा तो परेशान हो गया उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह घबरा गया। जल्दी से वह हरिप्रसाद के घर की तरफ भागा। शंकर को हांफते देखकर हरिप्रसाद परेशान हो गये।

क्या बात है? उन्होंने खाना खाते-खाते पूछा इतने घबराये हुए क्यों हो।

चाचा जी जल्दी चलिए। पिताजी को न जाने क्या हो गया है कुछ बोलते ही नहीं, हरिप्रसाद ने आधे में खाना छोड़ दिया और चप्पल पहनकर शंकर के साथ चल पड़े।

इतनी देर में रामू ने मालिक के मुंह पर पानी के छींटे मारे जिससे उनको कुछ होश आने लगा। हरिप्रसाद जब शंकर के साथ वहां पहुंचे तो देखा रामप्रसाद को धीरे-धीरे होश आ रहा है। जल्दी से होश में आने के लिये कोयले की सिगड़ी जलाकर उसके पास रख दी और उनके हाथों व पैरों को रगड़ने लगे। इस प्रकार प्रयत्न करने के बाद रामप्रसाद को होश आया। अपने पड़ोसी हरिप्रसाद को अपने पास देखकर उनकी आंखों में आँसू आ गये।

मैंने हमेशा गलत रास्ता अपनाया दिन रात पीता रहा अपने बेटा का भी कभी ख्याल नहीं किया। समय-समय पर तुम्हारे समझाने पर भी कभी ध्यान नहीं दिया मुझे माफ कर दो भैय्या रामप्रसाद ने धीरे से कहा, इसमें माफी मांगने की क्या जरूरत है, जो हो गया उसे भूल जाओ। भगवान सब ठीक कर देगा। ईश्वर ने चाहा तो तुम जल्दी अच्छे हो जाओगे और फिर से अपना कारोबार संभालने लगोगे।

नहीं-नहीं अब मेरा समय आ गया है, हमेशा बुरी संगत में रहा। जिसका नतीजा यह हुआ कि मुझे जेल जाना पड़ा। अय्याशी के नशे में सब भूल गया और आज लोग मुझे नफरत से देखते हैं। काश, मैं पहले ही संभल गया होता तो आज यह हालत न होती। अब तो बस मरने से पहले एक ही ख्याल है, मेरे बेटे को कौन संभालेगा। इतनी जायदाद का वारिस होते हुए भी वह अकेला रह जायेगा।

पिताजी, आप ऐसा क्यों कहते हैं? भगवान आपको जल्दी अच्छा (स्वस्थ) कर देंगे। आपकी सेवा करना ही मेरा फर्ज है।

नहीं बेटा, जिदंगी में कई उतार चढ़ाव आते रहते हैं। इस जमाने में अकेला चलना बहुत मुश्किल है, तुमको जिंदगी का कोई अनुभव नहीं है। इसलिये सोच रहा हूं, तुम्हारा भविष्य में क्या होगा?

इतने में नौकर हकीम को लेकर आ गया।

हकीम ने रामप्रसाद की आंखें व जबान देखी फिर नाड़ी देखकर सोचने लगा, कुछ पते निकले पीसकर पानी के साथ पिला दिया। हकीम ने जाते-जाते हरिप्रसाद को अलग ले जाकर कहा इनका अंतिम समय आ गया है। नाड़ी की गति धीमी चल रही है। इनकी अंतिम इच्छा मालूम करो। उस इच्छा को पूरा करने की कोशिश करो और हो सके तो कुछ दान धर्म भी कराओ।

हकीम यह कहकर चला गया।

हकीम ने क्या कहा राम प्रसाद ने पूछा। तुम जल्दी अच्छे हो जाओगे। घबराने की कोई बात नहीं। झूठ बोल रहे हो। मैं कभी भी अच्छा नहीं हो सकता मुझे मालुम है मेरा अंतिम समय आ गया है। बस मरने से पहले एक वचन दो, मेरे बाद शंकर का ख्याल रखोगे उसकी ज़ायदाद की देखभाल करते रहोगे। जब तक कि वह संभल

मुझ पर आपने बड़ी मेहरबानी की जो जमानत पर छुड़ा लाये वरना जेल में दम तोड़ देता। कहा रामप्रसाद ने, मुझे मेरे कर्मों का फल मिल गया। अगर पहले ही तुम्हारी बातें मान लेता तो आज यह दिन न देखना पड़ता। इस अपमान के बाद जीना भी बेकार है। उसे अपनी करनी पर पश्चाताप हो रहा

न जाए। तुमसे ज्यादा, मुझे किसी और पर भरोसा नहीं है।

मैं, वचन देता हूं। तुम्हारी हर मनोकामना पूरी करूंगा- हरिप्रसाद ने कहा।

इतना सुनते ही रामप्रसाद के मुख पर मुस्कराहट आ गयी और वे मुस्कराते-मुस्कराते हमेशा के लिये इस संसार को छोड़कर चले गये। शंकर, पिता के शव पर गिरकर रो पड़ा। उधर कोने में खड़ा रामू भी रोने लगा। इस दृष्य को देखकर हरिप्रसाद भी अपने आंसू न रोक सका। फिर भी अपने को संभालते हुए उन्होंने शंकर को धीरज बंधाया।

रोने की आवाज सुनकर पड़ोसी भी आने लगे। सबकी मदद से शंकर ने पिता का अँतिम संस्कार किया।

शंकर पिता की मृत्यु के बाद हरिप्रसाद के घर रहने लगा। घर में रहते-रहते, कमला से भी उसका मेल-मिलाप बढ़ता रहा। वैसे कमला भी उसका ख्याल रखा करती क्योंकि उसे मालूम था कि अब उनके सिवाय शंकर का और कोई न था। वह शंकर की सहूलियत का पूरा ध्यान रखती तथा हर कर्मों को पूरा करने की कोशिश करती थी। शंकर अपने को अकेला न समझे इसलिये वह हंस-हंस कर बोलती और मन बहलाने के लिये नदी किनारे घुमाने जाती। इसी तरह समय बीतता रहा। वे एक दूसरे के काफी नजदीक आते गये।

हरिप्रसाद ने कमला व शंकर में आपसी आकर्षण देखा तो उनके मन में विचार आया। वे सोचने लगे

इतना सुनते ही रामप्रसाद के मुख पर मुस्कराहट आ गयी और वे मुस्कराते-मुस्कराते हमेशा के लिये इस संसार को छोड़कर चले गये। शंकर, पिता के शव पर गिरकर रो पड़ा। उधर कोने में खड़ा रामू भी रोने लगा। इस दृष्य को देखकर हरिप्रसाद भी अपने आंसू न रोक सका। फिर भी अपने को संभालते हुए उन्होंने शंकर को धीरज बंधाया।

कि शंकर पढ़ा-लिखा है। उसके बाप की काफी जायदाद भी है और आगे पीछे भी कोई नहीं है। क्यों न अपनी बेटी की शादी शंकर से कर दूं। दोनों मेरी आंखों के सामने ही रहेंगे। शंकर के पिता को दिया वचन भी पूरा हो जायेगा। और जिंदगी भी शांति से कट जायेगी।

एक दिन उन्होंने शंकर को बुलाकर कहा बेटा कई दिनों से एक बात सोच रहा हूं, मगर कहने में कुछ घबराहट हो रही है कहीं तुम बुरा न मान जाओ।

ऐसी क्या बात है चाचाजी जो आपको कहने में घबराहट महसूस हो रही है मैं आपके बेटी की की तरह हूं, जो भी बात है बिना संकोच कह डालिए। बुरा मानने की कोई गुंजाइश नहीं है।

बेटा मैं सोच रहा हूं अब तुम अकेले हो और इस घर में रहते हो कुछ-कुछ करोबार भी समझने लगे हो। क्यों न तुम्हारी शादी कर दूं।

शादी का नाम सुनते ही शंकर शर्मा ने लगा और कुछ न कह सका। उसके दिल में आ रहा था कि कह दूं मैं शादी तो करूंगा मगर और किसी से नहीं सिर्फ कमला से। क्योंकि उसमें बड़े छोटे का लिहाज था, इसलिये उसके होंठ खुलते खुलते रह गये। बिना कुछ कहे, सिर झुकाये वह बैठा रहा। (क्रमशः)

प्रसंग

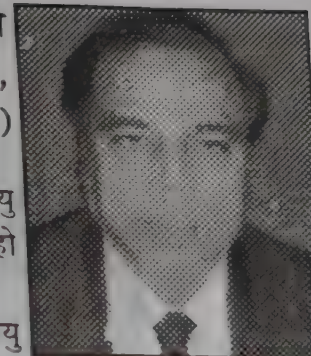
दृढ़ निश्चयी

बात 1892-93 की है, लाहौर कालिज में स्नातक में पढ़ने वाले एक गरीब विद्यार्थी को उसके एक सहपाठी ने कहा कि कितनी लज्जा की बात है कि ब्राहमण हो कर तुम संस्कृत के बजाय फारसी पढ़ते हो। विद्यार्थी को यह बात चुभ गई उसने संकल्प किया कि वह शीघ्रातिशीघ्र संस्कृत की मूलभूत जानकारी प्राप्त करेगा, उसने संस्कृत के अध्यापक के पास जाकर अपनी बात बताई, अध्यापक पहले हंसे, फिर बोले, संस्कृत न जानते हुए भी तुम स्नातक में संस्कृत की परीक्षा देने के लिए फार्म कैसे भर सकते हो?

वह निराश न हुआ और अपने पिता, सहपाठियों एवं कक्षा के तेज विद्यार्थियों के संपर्क में संस्कृत अध्ययन में जुट गया। 3 माह बाद पुनः उसी अध्यापक के पास जाकर संस्कृत की परीक्षा देने हेतु उनसे विनती करने लगा, अध्यापक के पूछने पर उसने सभी प्रश्नों के आसानी से उत्तर दे दिए। दृढ़ निश्चयी यह विद्यार्थी और कोई नहीं भारतीय सभ्यता संस्कृति के अमूल्य रत्न स्वामी रामतीर्थ थे जिन्होंने स्नातक की परीक्षा में पूरे विश्व विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

बुजुर्गों की बीमारियां

डॉ.सी.पी.देवानी
(एम.बी.बी.एस.एम.एस.(सर्जरी),
एफ.ए.एम.एस.(यूरोलॉजी)



पूरे विश्व में इन्सान की औसत आयु बढ़ गई है जब भारत स्वतंत्र हुआ तब औसत आयु 37 साल थी आज औसत आयु 64 साल है। जापान में औसत आयु 77 वर्ष है मृत्यु दर भी काफी कम हो गई। विज्ञान की प्रगति के कारण आज प्रत्येक व्यक्ति टेलीविजन अथवा अन्य साधनो द्वारा सामान्य ज्ञान से परिचित है। आज जन्म दर मृत्यु दर से अधिक हो गई है इसलिए जनसंख्या भी तेजी से बढ़ रही है।

धीरे-धीरे बुजुर्गों की संख्या भारत में बढ़ती जा रही है एवं बीमारियों में भी बढ़ोत्तरी आ गई है। इस उम्र में बीमारियों की जानकारी होना अति आवश्यक है। 40 वर्ष की आयु के बाद मेडिकल चेकअप अवश्य करायें।

स्त्री व पुरूष दोनों में संभावित बीमारियां

क्र.	बीमारी	अंग	शिकायत	लक्षण	जॉच	इलाज	नतीजा	खास बातें
1.	डायबिटीज	पैंक्रीयाज	ज्यादा प्यास, पेशाब लगना एवं घबराहट	मोटापा यदी कन्ट्रोल में न हो तो दूसरी बीमारियों के लक्षण	खून व पेशाब में शक्कर की जांच करना,दवाएं डॉक्टर अनुसार	खाने पीने की परहेज, कसरत,योगा एवं भ्रमण है	समय पर इलाज डायबिटीज ठीक हो जाती है	खून में ग्लूकोज बढ़ने से दिल, दिमाग,गुर्दे एवं अन्य अंगों में बीमारी हो सकती है।
2.	ब्लड प्रेशर बढ़ना	दिल एवं खून की नलियाँ	सर दर्द, गुस्सा, भारीपन एवं धड़कन	ब्लड प्रेशर 140/90 या उससे अधिक	लिपिड प्रेफाइल, इ.सी.जी.एवं ब्लड शुगर	मोटापा हो तो भोजन कम करें, सवेरे घूमना एवं ब्लड प्रेशर कम करने की दवा	परहेज,कसरते करने से या गोलियों से कन्ट्रोल	ब्लड प्रेशर कन्ट्रोल में रखने से दिल का दौरा, दिमाग की बीमारी, लकवा एवं गुर्दे की बीमारी की संभावना
3.	कारडियक ऐंजाइना	दिल	काम करने से या चलने से सीने में दर्द	बहारी लक्षण कोई नही	इ.सी.जी.	कारोनरी वासो डायलेटर गोली से आराम	गोलियों से एन्जाइना कन्ट्रोल एवं आराम करना	अगर दिल में खून की नलियों के सिकुड़ने से इन्जाइना होती है तो एन्जेप्लास्टी या बायपास सर्जरी
4.	दिल का दौरा या मायोकार्डयल इन्फार्करान	दिल एवं खून की नलियां	सीने में दर्द, सांस का फूलना,उल्टी,पसीना एवं बेहोशी	नब्ज का तेज चलना, पसीना एवं फेफड़ों में खराबी	इ.सी.जी.एवं खून की जांच	खून को पतला करने की दवाएं, ब्लड प्रेशर कन्ट्रोल, पेन किलर, एस्पीरिन इत्यादि	समय पर इलाज करने के कुछ समय बाद सामान्य जीवन	समय पर इलाज न करवाने से मृत्यु की संभावना
5.	लकवा या सेरिब्रल थ्राम्बोसिस	दिमाग	बदन के किसी भी भाग में लकवा, उल्टी, सरदर्द, बेहोशी	बदन का कुछ भाग निष्क्रिय	सी.टी.स्केन खून की जांच	खून न जमने पाये उसकी दवाएं व अच्छी देखभाल	अगर इलाज करने से खून की नली खुल जाती है तो पूरी तरह ठीक हो जाता है	उचित देखभाल से अच्छे नतीजे संभव
6.	सेरिब्रल हेमरेज अथवा दिमाग की नसें फटना	दिमाग	बेहोशी, घबराहट, सरदर्द एवं लकवा	आंखे घुमाना लकवा, उल्टी एवं बेहोशी	सी.टी.स्केन व ब्लड प्रेशर	खून जमाने की दवाई एवं ऑपरेशन	कभी कभी इलाज से अधूरा फायदा। ऑपरेशन की आवश्यकता	सेरिब्रल हेमरेज से बचने के लिए ब्लड प्रेशर को कन्ट्रोल में रखना सरदर्द की जांच कराना
7.	पार्किन्सोनिज्म	मस्तिष्क	पूरे बदन में कंपकपी अकड़न एवं उंगली मुड़ जाना	झुका हुआ बदन एवं अकड़ी हुयी मांसपेशियां	सी.टी.स्केन खून की जांच	मांस पेशियों में जकड़न कम करने की दवाएं	दवाओं से काफी फायदा रहता है	आजीवन बीमारी

8.	अलजमेहर डिजीज	दिमाग	याददाश्त खतम होना	मांस पेशी कमजोर होना	सी.टी.स्केन एवं एम.आर.आई.	कोई विशेष इलाज नहीं	शारीरिक सेवा से जिन्दगी लम्बी हो सकती है	लाइलाज
9.	मोतिया बिन्द	आंख	आँखों की रोशनी कम होना	तारे में लैंस सफेद नजर आना	कम्प्यूटर से लेंस का नं. मालूम पड़ जाता है	लैंस बदला जाता है	उचित लैंस पड़ने पर बगैर चश्मे के भी साफ दिखता है	ऑपरेशन नहीं करवाने से आँखों की अन्य बीमारियां संभव
10.	ग्लाकोमा	आँख	आंख की अंदर का दबाब बढ़ाना एवं दर्द होना	आंखों का प्रेशर बढ़ा हुआ	टोनोमेट्री व आफथेल्मोस्कोपी	आपरेशन	आपरेशन से आंख के अंदरूनी दबाव कम करने से आराम	आपरेशन नहीं कराने से आंखे काम करना बंद कर देती है
11.	रेटिनल डिटैचमेण्ट	आँख	दृष्टि कमजोर होना	रेटिनोस्कोपी में रेटिना छेद नजर आना	रेटिनोस्कोपी ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर	आपरेशन या लेजर से इलाज	डायबिटीज एवं ब्लड प्रेशर के मरीजों में अधिकतर	रेटिनल डिटैचमेण्ट का इलाज करवाने से आँखे पूरी बेकार हो जाती हैं
12.	दांत का गिरना एवं निकलना	दांत	खाने में तकलीफ एवं दर्द	दांत गायब	दांतों का एक्सरे	नकली दांत	योग्य डाक्टर से दांत लगवाने के पश्चात आराम	दांत की सफाई नहीं करने से, पान बीड़ी,सिगरेटस, तम्बाकू खाने से दांत अधिक गिरते है
13.	जीब एवं मुख का कैंसर	जीब एवं मुख	मूंह में छाला, सूजन एवं दर्द	कैंसर के स्थान पर छाला या गठान	बायोप्सी करना एवं एक्सरे	ऑपरेशन बिजली से सिकाई एवं कीमोथैरेपी स्थिति	बीमारी की शुरूआत में इलाज नहीं करने से गंभीर	बीड़ी,सिगरेट, तम्बाकू से कैंसर होता है
14.	फेफड़ों का कैंसर	फेफड़ा	खांसी में बलगम, खून, सांस फूलना एवं सीने में दर्द	फेफड़ों में अनाज का बदलाव एवं गर्दन में गठान	एक्स-रे व बलगम की जांच, इन्डोस्कोपी एवं बायोप्सी	समय पर बीमारी की जानकारी होने से आपरेशन अथवा रेडियोथैरेपी	समय पर बीमारी की जानकारी होने से ऑपरेशन	बीड़ी एवं सिगरेट नहीं पीनी चाहिए। बलगम में खून आने से चैकअप करवायें तुरंत
15.	भोजन की नली का कैंसर	इसोफेगस	भोजन के पेट में उतरने में विलंब, उल्टी एवं वजन में कमी	---	बेरियम स्वैलो, एक्सरे, इसोफेगस्कोपि एवं बायोप्सी	जल्दी बीमार पहचाने तो ऑपरेशन	जल्दी ऑपरेशन करने से मरीज ठीक हो जाता है	बीड़ी,सिगरेट,मदिरा,पान मसाला से परहेज करना चाहिये
16.	पेट की थैली का कैंसर तथा छाला	पेट	पेट में जलन दर्द, खून की उल्टी	पेट में गठान महसूस करना	बेरियम मील। एण्डोस्कापी	ऑपरेशन	अधिक समय तक तम्बाकू एवं शराब एवं नशीली दवाएं देने से बीमारी होती है	समय पर बीमारी की पहचान होने पर ऑपरेशन सफल होता है
17.	पित्त की थैली में पथरी	पित्त	40 साल की आयु के आस पास पेट में दर्द, बदहजमी, उल्टी एवं आंखों में पीलापन	पेट के दॉयी और दबाने से दर्द	पेट की सोनोग्राफी खून की जांच एवं एक्स-रे	ऑपरेशन	ऑपरेशन के बाद आराम	यह बीमारी स्त्रियों को 40 साल के आसपास होती है पुरूषों को कम होती है
18.	मोटापा	पूरा शरीर	बदन में ढीलापन	पेट एवं बदन में चर्बी जमना	लिपिड प्रोफाइल, इ.सी.जी. एवं ब्लड प्रेशर की जांच	ऑपरेशन से चर्बी निकालना	खान पान से परहेज, व्यायाम आदि करने से चर्बी कम हो सकती है	मोटापे से खतरनाक बीमारियाँ हो सकती हैं।
19.	ओस्टयों आर्थरटस	जोड़ों पर	घुटनों कंधों एवं रीढ़ की हड्डी में दर्द एवं चलने में परेशानी	कुबड़ापन, टांगों एवं घुटनों में सूजन एवं जोड़ों में कट कट की आवाज	एक्सरे.सी.टी.स्केन व एम.आर.आई.	ऑपरेशन व जोड़ बदलना	जब हड्डियां बड़ी होती है एवं घिस जाती है तो ऑपरेशन संभव है घुटने एवं पुट्ठे में स्टील के जोड संभव	डायबिटीज, मोटापा एवं शारीरिक शिथिलता बदन में हड्डियों को खराब करती है

20.	कोलिसेस फ्रेक्चर	कलाई की हड्डी	कलाई में दर्द सूजन एवं टेढापन	हाथ मोड़ने में कट-कट की आवाज	कलाई का एक्स रे	प्लास्टर या ऑपरेशन	6 सप्ताह में हड्डी जुड़ जाती है	बुढ़ापे में चलते समय बैलेंस कम हो जाता है, गिर जाना एवं हाथ के ऊपर प्रेशर लगने से फ्रेक्चर हो सकता है। सवेरे धूप में घूमने से विटामिन डी मिलती है एवं हड्डीयां मजबूत होती है
21.	फ्रेक्चर नेक फीमर	टांग की उपरी हिस्से की हड्डी फीमरनेक	टांग के एक तरफ दर्द अथवा सूजन	जिस तरफ फ्रेक्चर हो उस तरफ टांग छोटी दिखाती है एवं उठा नहीं सकते	एक्स-रे पेलविस	ऑपरेशन अगर संभव नहीं तो प्लास्टर या ट्रेक्शन	ऑपरेशन करके स्टील का स्क्रू डालने से लाभ व कभी कभी स्टील का लेड डालना	चिकने फर्श पर सँभलकर चलें

केवल पुरूषों की बीमारियां

क्र	बीमारी	अंग	शिकायत	लक्षण	जांच	इलाज	नतीजा	खास बातें
1.	प्रोस्टेट का बढ़ना	पेशाब की थैली के नीचे प्रोस्टेट गठान का बढ़ना	बार-बार पेशाब आना, पेशाब देर से आना, पेशाब पतली धार से आना, पेशाब में जलन एवं रूक-रूक कर आना, पेशाब का रूक जाना	पेशाब की भरी थैली, प्रोस्टेट की बड़ी हुई साइज	पेट का अल्ट्रासाउण्ड, एक्स रे, खून एवं पेशाब की जांच, इ.सी.जी. युरोफ्लोमेट्री सिस्टोस्कोपी आदि	दूरबीन पद्धतियों से ऑपरेशन	ऑपरेशन समय पर कराने से पेशाब ठीक से आने लगता है सबसे सफल इलेक्ट्रो वेपराइजेशन प्रोस्टेट	थोड़े समय तक दवाओं से इलाज संभव। अंत में ऑपरेशन आवश्यक टी.यू.आर.पी. लेजर एवं इलेक्ट्रो वेपराइजेशन
2.	प्रोस्टेट एवं पेशाब की थैली का कैंसर	प्रोस्टेट बढ़ने वाली शिकायत एवं पेशाब में खून	जांच में प्रोस्टेट सख्त एवं खुरदरी	अल्ट्रा साउण्ड, सिस्टोस्कोपी, प्रोस्टेट बायोप्सी एवं पि.एस.ए. व एक्स रे	ऑपरेशन टी.यू.आर.पी. एवं लेसर, इलेक्ट्रो वेपराइजेशन व दवाएं	प्रारंभ में ऑपरेशन सफल उसके बाद दवाएं एवं निरन्तर जांच आवश्यक	प्रोस्टेट के तीन से पांच प्रतिशत मरीजों में कैंसर संभव। विलंब करने से पूरे शरीर में कैंसर का फैलना	पेशाब की थैली के कैंसर की स्टेज पर आधारित ऑपरेशन। एक्स-रे किरण व कीमोथेरापि किस तरह का
3.	नामर्दगी	लिंग में तनाव न आना	लिंग में तनाव न आना	स्टेम्प टेस्ट, हारमोन व ब्लड शुगर	दवाएं एवं ऑपरेशन युरोलॉजिस्ट द्वारा	दवाओं से इलाज संभव	थोड़े से खर्च में इलाज संभव	कभी कभी सिलिकान राड डालते हैं।

महिलाओं की बीमारियां

क्र	बीमारी	अंग	शिकायत	लक्षण	जांच	इलाज	नतीजा	खास बातें
1.	फायब्राइड यूटेरस	बच्चेदानी	पेट के नीचे भाग में गठान, खून एवं सफेद पानी की शिकायत	बच्चेदानी बड़ी महसूस होती है	अल्ट्रा साउण्ड	ऑपरेशन बच्चेदानी का निकालना	ऑपरेशन के बाद आराम	ऑपरेशन को टालने से कैंसर की सभांवना
2.	डी.यू.बी	बच्चेदानी	महावारी में या बुढ़ापे में अधिक खून निकलना	बच्चेदानी का साइज बड़ी हो जाना	अल्ट्रा साउण्ड	दवाओं एवं डी एण्ड सी अथवा बच्चेदानी का निकालना	दवाओं तथा एण्ड सी से आराम	ऑपरेशन में विलंब करने से खून की कमी एवं कमजोरी
3.	मीनोपासल सिन्ड्रोम	ओवरीज	घबराहट, रात को पसीना, आना पेशाब में तकलीफ	कोई विशेष निशानी नहीं	हार्मोनल एग्सी	हार्मोनल ट्रीटमेन्ट	उचित इलाज से आराम	इस बीमारी से विभिन्न प्रकार की शिकायतें रहती है इसलिए इसे सिन्ड्रोम कहते है

4.	स्तन कैंसर	स्तन	स्तन में गठान	स्तन का साइज बढ़ना एवं गठान	मेमोग्राफी एवं अल्ट्रासाउण्ड, एफ.एन.एस.सी.	ऑपरेशन एवं एक्स- रे सिकाई व दवाई	समय पर इलाज करने से पूर्ण आराम	विलंब करने से बीमारी अन्य भागों में फैलने की संभावना

ऊपर लिखी बीमारीयों के सिवाय भी बहुत सी बीमारियां हो सकती हैं। 40 साल के उम्र के बाद, साल में एक बार मेडिकल चेकअप कराने से बीमारी का आरंभ में ही पता लग जाने से बीमारी बढ़ने के पहले खत्म करके खतरा टाला जा सकता है। उपरोक्त बीमारियों में से किसी के बारे में विस्तृत जानकारी किसी को चाहिये तो डॉ. सी.पी.देवानी से सम्पर्क करें।

डॉ. सी.पी.देवानी मध्यप्रदेश सिन्धू भवन ट्रस्ट के आजीवन ट्रस्टी है। उनका सक्खर सिन्ध में 1942 में जन्म हुआ। भारत में बी.एस.सी., एम.बी.बी.एस., व एम.एस किया। विदेशों में ईरान व यूरोप में काम किया। विएना विश्वविद्यालय से 1982 में यूरोलॉजी में फेलेशिप किया। 1986 से भोपाल में ई-7 अरेरा कॉलोनी में अपनी पत्नी श्रीमती किरण देवानी स्त्री रोग विशेषज्ञ के साथ चिकित्सालय चला रहे हैं। हास्पिटल एवं नर्सिंग होम एसोशियेशन के भोपाल व मध्यप्रदेश के अध्यक्ष रहे। साथ ही आल इंडिया नर्सिंग होम असोशियेशन के अध्यक्ष रहे। संत हिरदाराम नगर में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के संस्थापक अध्यक्ष रहे। भारत में करीब 10 साल पहले, पहली बार देवानी अस्पताल भोपाल में यूरोलॉजी कैम्प संत हिरदाराम जी की प्रेरणा से शुरू किये जा आज पूरे भारत में फैले हैं। अभी मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ यूरोलाजी असोशियेशन के उपाध्यक्ष हैं। इनके सामाजिक और वैज्ञानिक लेख सिन्धी हिन्दी व अंग्रेजी में छपते रहते हैं। इनके प्रोग्राम रेडियों व टेलिविजन से भी निरंतर आते रहते हैं।

अमृत बिन्दु

(महात्मा गांधी)

जो सत्य का सेवन नहीं करता, वह सत्य का बल, सत्य की ताकत कैसे दिखा सकेगा? इसलिये सत्य की तो पूरी-पूरी जरूरत रहेगी ही। बड़े से बड़ा नुकसान होने पर भी सत्य को नहीं छोड़ा जा सकता। सत्य के लिये कुछ छिपाने को होता ही नहीं। जान बचाने के लिये झूठ बोलना चाहिए या नहीं, ऐसा सवाल यहां मन में नहीं उठना चाहिए। जिसे झूठ का बचाव करना है। वहीं ऐसे बेकार सवाल उठाता है। जिसे सत्य की ही राह लेनी है, उसके सामने ऐसे धर्म संकट कभी आते ही नहीं। ऐसी मुश्किल हालत में आ पड़े तो भी सत्यवादी उसमें से उबर जाता है।

एक पत्र-सम्पादक के नाम

प्रिय धर्मप्रकाश तेजा

सिंधु महक के माध्यम से, सिंधी साहित्य एवं संस्कृति की महक जन-जन तक पहुंचाने का पुनीत कार्य प्रारंभ करने के लिये आप बधाई के पात्र है।

यह मासिका पत्रिका हर सिंधी परिवार के घर पहुंचे इसे ऐसी पठनीय सामग्री से समृद्ध करना होगा। पत्रिका की छपाई, मुख पृष्ठ आकर्षक हैं। इसे भविष्य में भी बनाये रखें।

अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ।

आपका शुभेच्छु
के. टी. दादलानी
मुख्य प्रबंधक-भारतीय स्टेट बैंक, ग्वालियर

जज़बात

अच्छा किया जो आपने
इस ओर आ गये
उस ओर के हालात तो
अच्छे नहीं दिखते॥
भीगी हुई सुबह यहां
रंगीन शाम है
उस ओर के दिन-रात तो
अच्छे नहीं दिखते।
मिलते हैं गले आप
मगर फासले के साथ
सच बोल दूं जज्बात तो
अच्छे नहीं दिखते॥
अपनी कहन है, कहते चलो
तुम 'मलंग' से
लिखे हुए नग़मात तो
अच्छे नहीं दिखते॥
वो आयेंगे, कह के गये
फिर भी न आए
उनके ये ख्यालात तो
अच्छे नहीं दिखते॥

-अमर पेन्टर 'मलंग' कटनी

इंतजार

कहानी

• खीमन यू. मूलाणी

जिस ब्लाक में हम रहते थे, उसके कोने वाले क्वार्टर में मूरजमल नामक एक वृद्ध भी रहते थे। उनकी आयु सत्तर वर्ष से अधिक थी। सभी उन्हें काका कहते थे। वह प्राय: बीमार रहते थे। इसलिये कोई काम धंधा नहीं करते थे। पूरा दिन घर में ही बैठे रहते थे। उनके पुत्र-पोते कमाकर लाते थे, जिससे घर की गाड़ी चलती थी। काका धोती और आधी बांहों वाली सिंधी कमीज पहनते थे। वे सर पर टोपी रखकर ऊपर से साफा बांधते थे। मैं जब भी सब्जी लेने के लिये अथवा दूसरे काम से, उनके घर के सामने से गुजरता था तो प्राय: मुस्कराकर अभिवादन करते हुए कहते थे- 'भाई साहब राम-राम।'



'राम-राम काका, राम-राम', मैं ऐसे कहता हुआ आगे निकल जाता था। काका अपनी बोरियत मिटाने के लिये मुझसे बातचीत करना चाहते थे। पर मैं व्यर्थ समय गवाना नहीं चाहता था। वास्तविकता तो यह भी थी कि मैं उनकी बातों से बोर हो जाता था। इसलिये कभी-कभी तो मैं रास्ता बदलकर निकल जाता था ताकि काका का सामना न हो सके।

एक दिन मैं काका के घर के सामने से निकल रहा था तो मुझे काका की आवाज सुनाई नहीं दी। एकाएक मेरा ध्यान उस और चला गया। काका प्रतिदिन की तरह बरामदे में टूटी-फूटी खाट पर हुक्का मुंह में लगाये बैठे थे। वे सामने दीवार को टकटकी लगाकर देख रहे थे। मुझे लगा काका किसी गहरी सोच में है। मैं उनकी तरफ गया थोड़ी दूर से ही मैंने कहा- काका, राम-राम। काका का मेरी तरफ ध्यान नहीं गया। मुझे आश्चर्य हुआ। मैं आगे बढ़कर उनके पास जाकर खड़ा हो गया। मैंने देखा कि काका की आंखों में आंसू थे। मैंने दूसरी बार कहा- काका राम-राम। काका के शरीर में उसके बाद भी कोई हलचल नहीं हुई। मेरे मन में शंका हुई कि कहीं काका इस दुनिया से तो नहीं चले गये? मैंने उनके कंधे पर हाथ रखकर जोर से कहा- काका-..... 'राम राम।'

मेरे इतना कहने पर काका की तंद्रा टूटी वे मेरी ओर देखने लगे। मैं मुस्कराने लगा। काका भी बड़ी मुश्किल से अपने चेहरे पर मुस्कराहट लाए और कंधे पर रखे गमछे से आंखों के आंसू पोंछते हुए बोले-बेटे, आओ बैठो। बहुत दिनों बाद आये हो।

मैं बिना कोई शब्द बोले, आज्ञाकारी बालक की तरह उनके सामने बैठ गया। मैं काका के आंसुओं के बारे में सोच रहा था। मैं आश्चर्य में था कि सदैव प्रसन्न रहने वाले काका आज इतने दुखी क्यों है? काका शांत थे। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने शांत माहौल को तोड़ते हुए पूछा 'काका, क्या हाल है?

काका ने अपने को संभालते हुए धीमे स्वर में कहा-'सब ठीक है बेटा।' मुझे उनके उत्तर से संतुष्टि नहीं हुई। मैंने एकदम दूसरा प्रश्न करना चाहा। पर काका..... 'काका ने मुझे प्रश्न पूछने नहीं दिया। कहने लगे- बस बेटे, कुछ पुरानी यादें दिल पर उतर आईं। यूं मन भर आया। मैंने दुनिया देखी है। बहुत कुछ पाया और गंवाया है। पर बेटे, गंवाने का दुख तो हर मनुष्य को होता ही है।

मैं काका की बात पूरी तरह समझ नहीं सका। मैं जानना चाह रहा था कि उनकी ऐसी कौन सी चीज गई है जिसका दुख उन्हें इतना सता रहा है। परन्तु मैं यह सब कुछ कह नहीं सका। केवल इतना कहा- काका, आपकी कौन सी चीज गुम हो गयी है?

काका ने कहा- बेटा मैंने एक बहुमूल्य चीज गंवाई है।

ऐसी कौन- सी चीज है काका? मैंने खफा होते हुए उतावले होकर कहा। काका ने ठंडी सांस लेते हुए कहा- बेटे, मैंने अपनी जन्मभूमि गंवाई है। जन्मभूमि जो स्वर्ग से भी महान होती है। मुझे हंसी आने लगी परन्तु मैंने हंसी को दबाते हुए कहा- काका यह 1971 चल रहा है। भारत के विभाजन को चौबीस वर्ष बीत गये हैं। आप अभी तक सिंध को याद कर रहे हैं।

सत्य कह रहे हो बेटे, परन्तु जहां आग लगती है वहीं पर तपन होती है। दूसरों को क्या पता। इतना कहकर काका मेरे चेहरे को ताकने लगे। फिर कहा- पता है, कल रात में मैंने सपना देखा है। ऐसा सुन्दर स्वप्न मैंने अपने पूरे जीवन में कभी नहीं देखा। क्या देखता हूं कि मैं हैदराबाद (सिंध) रेलवे स्टेशन पर जा उतरा हूं। स्टेशन देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। मैंने पागलों की तरह स्टेशन को ताकने लगा एक-एक आदमी को घूरने लगा। मुझे ऐसा लग रहा था मानों मैं पागल हो गयाहूं। अचानक मैंने देखा कि मेरे गांव का दिलावर खान मेरे सामने खड़ा है और मुझे टक-टकी लगाकर देख रहा है। उसे देखते ही मेरी आंखे चकरा गई। मैने उसे खींचकर अपनी बांहों में भर लिया, फिर तो वह बिलख पड़ा। जोर-जोर से रोने लगा। मैं भी अपने को रोक न सका। सुबक-सुबक कर रोने लगा।

लोग इक्टठे हो गये। हर कोई पूछ रहा था। क्या हुआ...? क्या हुआ? मैं क्या कहता? आखिर विवश होकर कहा- भाई बहुत वर्षों बाद मिले हैं.....।



इसलिये आंखें भर आई है।

लोग तो चले गये परन्तु दिलवार बातों में लग गया कहने लगा- यार, आप लोगों के जाने के बाद हम तो कठिनाईयों से घिर गये हैं।

आप लोग हमें अनाथ बनाकर चले गये। अब तो गैरों की जोर जबरदास्तियों ने हमारी कमर ही तोड़ दी है। हम लोगों से अपने ही देश में परायों जैसा व्यवहार किया जाता है। उन्होंने हमारा जीना हराम कर दिया है। देशी, परदेशी हुए, परदेशी, देशी। घुस आये हैं गैर, और निकल गए स्नेही। आगे कहने लगा- मूरजमल, आप लोगों को यहां से जाना ही नहीं था।

ऐसा कहकर काका क्षण भर के लिये रुका और फिर कहने लगा- बेटे सच पूछो तो दिलावर में वही पुराना प्यार और स्नेह देखकर मैं तो गदगद हो गया। इस प्रकार बातें करते-करते हम दोनों ने गांव जाने के लिये दो रेलवे टिकटें खरीदी और जाकर रेलगाड़ी में बैठ गये।

मैंने पूछा-काका, फिर क्या हुआ? काका ने मेरी और इस तरह देखा मानों मेरा चेहरा पढ़ रहे हों। क्षण भर बाद एक ठंडी सांस लेकर कहने लगे। बेटे फिर न जाने क्या हुआ। आभागी नींद खुल गयी। डायन नींद का स्वभाव ही यही है। इसी ने 'ससुई से पुनूं' को जुदा किया मुझसे मेरी जन्मभूमि का दीदार

मैंने कहा- काका कभी सपने भी सच हुए हैं? बड़ी बात यह है कि हमारे जैसे सिंधी तो यहां जन्में और पले हैं वे यदि सिंध लौट चलेंगे तो क्या हमें अपना यह वतन याद नहीं आयेगा? और सिंध में जो हमारे जैसे नये लोग पैदा हुआ होंगे उनके दिल में

आप लोगों के लिये क्या इज्जत होगी?

काका को मेरी बात अच्छी नहीं लगी। कहने लगे- बेटे छोड़ो इन बातों को। बताओ, देश के क्या हाल-चाल हैं?

काका ने बात को बदलने के विचार से मेरी ओर नया प्रश्न फेंका।

सब ठीक है काका, देश चल ही रहा है। मैंने कहा।

काका सोच में पड़ गये। फिर क्या समझते हो? क्या अब हम लोग सिंध लौट सकेंगे।

नहीं काका, मुझे तो नहीं लगता। फिर भी भगवान जाने। मैंने काका का दिल दुखाना नहीं चाहा।

नहीं बेटे ; ऐसा न कहो। समय बड़ा बलवान है। भगवान् दयालु है। वह चाहे. तो क्या नहीं कर सकता। मेरी आत्मा तो कह रही है, लौटेंगे जरुर। यह कहते हुए काका का चेहरा खिल उठा।

मैंने कहा- काका, इस बात की संभावना बहुत कम है।

काका मेरी बात को सुनकर विचारों में डूब गये। फिर सर उठाकर कहने लगे। सच कहते हो बेटे, मगर मेरा दिल नहीं मानता। मेरा दिल कह रहा है कि हम सिंधी एक दिन अवश्य अपनी जन्मभूमि में चलकर रहेंगे।

मैंने कहा- काका यह सब भावुकता की बातें है। सच पूछो तो आप लोगों को सिंध छोड़ना ही नहीं चाहिए था।

हां बेटे परन्तु मैंने जन्मभूमि अपनी इच्छा से थोड़े ही छोड़ी थी। हालात ही कुछ ऐसे हो गये थे। काका ने अपनी मजबूरी बताई।

मैंने कहा- हालात तो जरूर ठीक होते जल्दबाजी करने की क्या जरुरत थी?

बेटे, मैने सिंध सदैव के लिये थोड़े ही छोड़ी थी। तुम्हें पता है? मैंने वर्ष 1946 ई. में अपने गांव में महल जैसा नया घर बनवाया था। सभी लोग रोक रहे थे। कहते थे बेकार खर्च कर रहे हो। अब हमें भारत जाना पड़ेगा। मैंने किसी की नहीं सुनी। सभी को

बेटे, तुम लोग भले ही कैसी भी बातें करो, पर मुझे विश्वास है कि मैं मरूंगा तो अपने पैतृक घर में। यदि नहीं तो मैं वसीयत करूंगा कि मेरे फूल सिंधु नदी में प्रवाहित किये जाएं। तब तक मैं अपनी जन्मभूमि से बिछुड़ने का दर्द दिल में दबाकर उसके दीदार के लिये इंतजार करता रहूंगा। मैं चुपचाप काका के चेहरे को घूर रहा था। उनके दिल के दर्द में अपने को डूबता महसूस कर रहा था। मेरे मुख से एक भी शब्द नहीं निकल रहा था।

कहा पागल हुए हो। कभी- किसी ने घर बार भी छोड़ा है? हम सदियों से यहां रह रहे हैं सो कैसे अपनी जन्मभूमि छोड़ेंगे? उस वक्त भी सभी मुझ पर हंसते थे, जैसे आज तुम हंस रहे हो।

यह कहते हुए काका की आंखों में फिर आंसू भर आये। उसने फिर कहना शुरु किया- अपना जैसा भरा-पूरा घर वैसा का वैसा ही छोड़ आया हूं। ताला लगाकर चाबियां अपने मित्र मुखिया गुल मोहम्मद को सौंपकर कहा था - हम तीर्थाटन करने हिन्दुस्तान जा रहे हैं। शीघ्र ही लौटेंगे। तब तक ये चाबियां संभालकर रखना।

फिर वापिस क्यों नहीं गये? मैने पूछा।

मैं तो जाना चाहता था, परन्तु रिश्तेदारों और घरवालों ने जाने नहीं दिया। कहने लगे- हालात अभी ठीक नहीं है। वहां जाकर क्या करोगे। बस इस प्रकार मजबूर हो गया। काका ने उत्तर दिया।

मैंने कहा- काका अब इन बातों को दिल से निकाल दो।

काका ने एक लंबी सांस ली। फिर मेरे चेहरे को ताकते हुए कहा- बेटे तुम तो मुझे लाख समझाओ परन्तु मेरा दिल भी माने ना। उसे याद ही नहीं जाती। बार-बार शाह अब्दुल लतीफ का यह पद कानों में गूंजता है- 'सजन और स्वदेश बेगैरत ही भूलते, उन पर अफसोस जिनने देश भुलाया।'

मैंने काका के अंतर मन में समाई वेदना को समझ कर उन्हें ढाढ़स बंधाने के विचार से कहा- काका, सच कहते हो, लगी लो लानत है।

बेटे, तुम लोग भले ही कैसी भी बातें करो, पर मुझे विश्वास है कि मैं मरूंगा तो अपने पैतृक घर में। यदि नहीं तो मैं वसीयत करूंगा कि मेरे फूल सिंधु नदी में प्रवाहित किये जाएं। तब तक मैं अपनी जन्मभूमि से बिछुड़ने का दर्द दिल में दबाकर उसके दीदार के लिये इंतजार करता रहूंगा। मैं चुपचाप काका के चेहरे को घूर रहा था। उनके दिल के दर्द में अपने को डूबता महसूस कर रहा था। मेरे मुख से एक भी शब्द नहीं निकल रहा था।

-न्यू ए-14 /134 , बैरागढ़, भोपाल

कहानी

भगवान

• बंसी खूबचंदानी, ''मुबई''
• अनुवाद-डी. पी. तेजा

उसने चप्पल एक कोने में उतारकर, सामने रखी हुई दुर्गा माता की मूर्ति को नमस्कार किया। दुर्गा माता के मंदिर के पास में फूल और अगरबत्तियां बेचने का एक दुकान थी। उसने जेब से पर्स निकालकर दो रुपये का नोट निकाला और दुकान से फूल लिये। फूल लेकर वह फिर दुर्गा माता की मूर्ति के आगे गया और कुछ फूल रखकर, जेब में से एक सिक्का निकालकर उसने मूर्ति के आगे रखी हुई पेटी में डाला। आंखे बंद करके गर्दन नीचे करके दुर्गा माता को प्रार्थना करने लगा। माता सुमति दे, सही राह दिखा मेरे परिवार में पुत्र, पत्नि,बहिन, रिश्ते नातेदारों दोस्तों और अपनों पर दया की बर्खा करें। अच्छी बुद्धि दें और अच्छी सेहत दें। उसने फिर आंखे खोलकर एक बार फिर दुर्गा माता को नमस्कार किया और फूलों का पैकेट हाथ में लेकर राधा कृष्ण की मूर्तियों की ओर बड़ा।

ऐसे देवी देवताओं को नमस्कार करना खुद के और अपने प्यारों के लिये प्रार्थना करना उसने अपनी मां से सीखा था। उसकी मां भी अपने घर के छोटे मंदिर में, देवी देवताओं की छोटी मूर्तियों के आगे फूल चढ़ाकर आंखें बंद कर, सिर नीचे झुकाकर प्रार्थना करती थी।

बचपन में उसे मां की वह आदतें अच्छी नहीं लगती थी। बचपन से ही वह जोशीले स्वभाव का था, और पढ़ने की आदत, किसी किताब में उसने पढ़ा था कि भगवान और उसके देवता इंसान के मन की पैदाइश है। समाज को ठगने के लिये पुजारियों की साजिश है। वह मां को कहता था, तुम तो भोली हो। पूजा पाठ के सिवाय खाना भी नहीं खाती हो। महीने में दो चार वृत भी रखती हो। हर समय बैठकर भगवान का नाम पुकारती रहती हो और ऊपर से मुझे भी कह रही हो कि मैं भी हर वक्त भगवान पर भरोसा रखूं। तुम्हें इतना समझाता हूं कि भगवान एक धोखा है पर तुम समझती कहां हो?

जब उसकी मां का अंतिम समय आया उस समय भी उसके मुख पर भगवान का नाम था। वह भगवान का शुक्रिया अदा मानती रही जो कि उसने उसके बच्चों की जिंदगी सुखी गुजारी थी। उसकी बहिन भी उस समय अपने तीन साल के बेटे के साथ मां की सेवा के लिये हाजिर थी।

ऐसे मौकों पर उसकी मां उसके सिर पर हाथ रखकर कहती थी बेटा, मैंने तो तुम्हारी तरह पढ़ी लिखी नहीं हूं जो ये बड़ी बातें समझ सकूं। मैं तो अपनी मां और बाप के विश्वास पर विश्वास किया है। मां कहती थी, बिटिया दुनिया झूठ है। दुख-सुख में यह भगवान का नाम ही तुम्हें साथ देगा और तुम्हारे कार्य रास करेगा। मैंने भी अपनी मां की उस बात को पकड़ लिया है।

अगर भगवान का सहारा न लेती तो मेरी कैसी हालत हो जाती? तुम्हारे पिताजी तो मुझे और दो अबोध बच्चों को छोड़कर चल बसे। अब तो बस भगवान के आसरे पर ही चल रहे हैं। शायद बड़े होकर यह बात समझ सको।

फिर उसकी मां रो देती थी। वह न चाहते हुए भी चुप हो जाता था। पर मन ही मन जरूर कहता था कि वे अगर जी रहे हैं तो अपनी मेहनत और जफाकशी के कारण, उसकी मां घर में सिलाई का कार्य कर उसे और उसकी छोटी बहिन को पाल रही थी, उसमें भगवान कहां से टपक पड़े।

ऐसे उसकी मां का भगवान में विश्वास और उसका अविश्वास साथ-साथ चलते रहे और वक्त भी अपनी रफ्तार से गुजरता रहा। वह छोटे में से बड़ा हुआ और उसकी मां उसकी शादी करवाकर दो वर्षों के अंदर ही वह चल बसी। उसका बेटा भी आकर एक वर्ष का हुआ। उसकी छोटी बहिन का विवाह पूर्व में ही हो चुका था और वह अपने पति एवं परिवार के साथ कानपुर में सुखी थी।

जब उसकी मां का अंतिम समय आया उस समय भी उसके मुख पर भगवान का नाम था। वह भगवान का शुक्रिया अदा मानती रही जो कि उसने उसके बच्चों की जिंदगी सुखी गुजारी थी। उसकी बहिन भी उस समय अपने तीन साल के बेटे के साथ मां की सेवा के लिये हाजिर थी। मरते समय उसकी मां ने दोनों छोटे बच्चों के सिर पर हाथ रखकर आर्शीवाद दिया था और उन्हें भगवान का रूप माना और भगवान का नाम लेते अपने-अपने भगवान के पास जा पहुंची।

उसने अपनी मां का क्रिया कर्म

विधि अनुसार, जैसे उनके बड़ो ने कहा वैसे ही किया। उसकी बहिन ने 12 दिन तक जपु साहब का पाठ किया उसकी बहिन ने भी अपनी मां के विश्वास पर विश्वास रखकर भगवान मे विश्वास रखा था। वह भी अपनी मां की तरह पूजा पाठ करती थी।

पता नहीं क्यों उन दिनों में उसका भगवान पर से अविश्वास डोलने लगा। उसे जपु साहब का पाठ सकून देने लगा। उन दिनों में उसके रिश्ते-नातेदारों, ब्राह्मणों, पड़ोसियों ने भी भगवान को अधिक से अधिक याद किया। जो भी उससे उस समय में मिला उसने उसकी मां की मृत्यु को भगवान की मर्जी बोलकर उसे उसकी रजा पर राजी बने रहने की सलाह दी। वह उन दिनों में सोचने लगा कि यह सारी दुनिया क्या पागल है जो भगवान में विश्वास रखकर बैठी है।

पर वह मौत का ज्ञान बस थोड़े दिन ही चला। बचपन में पढ़ा हुआ किताबी ज्ञान फिर आकर अपनी जगह पर बैठा। उसकी मां के मरने के बाद उसके घर में बने छोटे मंदिर में शायद ही कोई पूजा पाठ होता हो। उसकी पत्नि कभी कभी बेदिल से एक अगरबत्ती ले जाकर जला आती थी। वक्त अपनी रफ्तार से चलता रहा।

एक दिन उसके बेटे को सख्त बुखार हो गया। तब वह चार वर्षों का था। बुखार उतर ही नहीं रहा था। आठ दिन हो गये थे। होशियार से होशियार डाक्टर का इलाज करवाया गया पर दवाईयों से फर्क नहीं पड़ा। उसने अपनी मां का फोटो फ्रेम करवाकर छोटे मंदिर के पास टांग दिया था। वह उन दिनों में कितनी ही बार मां के फोटो के पास जाकर खड़ा हुआ और उसे प्रार्थना करता रहा कि अपने पोते को आर्शीवाद करे जैसे वह जल्दी ठीक हो जावे। एक दिन उसे लगा कि उसकी मां उसे कह रही है कि बेटा घबराते क्यों हो, भगवान में विश्वास रखो, सब ठीक हो जायेगा। उस समय वह बेख्याली में छोटे मंदिर के आगे जाकर खड़ा हुआ और सभी देवी देवताओं को अपने बेटे को ठीक करने के लिये प्रार्थना करने लगा। उसकी पत्नि भी उसके पास आकर खड़ी हुई और उसके साथ प्रार्थना करने लगी। प्रार्थना करके उसकी पत्नि ने सभी देवी देवताओं की मूर्तियों को कपड़े से साफ किया और छोटे से मंदिर की अच्छी तरह सफाई की। अगरबत्तियां जलाकर फिर उसने प्रार्थना की। थोड़े दिनों में उनका बेटा ठीक हो गया। वह सोचने लगा क्या यह भगवान का प्रताप है या डाक्टरों की दवाईयों का?

वह कभी-कभी सोचता है कि उसका भगवान में अविश्वास का क्या हुआ? उसे प्रार्थना इतनी भाती क्यों है? क्या उसके स्वयं के मन में सही में भगवान है जिसे ताकत देने के लिये वह प्रार्थना करता है?

जब भी प्रार्थना करता था तब उसके मन को असीम शांति मिलती थी। काफी समय पूर्व उसकी मां के जीवित रहते समय जब वह अपने एक दोस्त से भगवान के होने और न होने पर बहस कर रहा था। तभी उसके दोस्त ने उससे कहा यार, तुम भगवान को मानो या ना मानो पर एक बात को पक्का जानो कि तुम्हारे अंदर में ही एक भगवान है इंसान जब भगवान को प्रार्थना करता है, तब सही में वह अपने अंदर वाले भगवान को मजबूत करता है। जब प्रार्थना करोगे तो तुम्हारा मन और तुम्हारा इरादा मजबूत होगा। तुम्हारी करनी में और अधिक मजबूती आयेगी। तुम कभी प्रार्थना करके तो देखो। तब उसने अपनी दोस्त की बात को हंसकर टाल दिया था। पर जब वह अपने बेटे के ठीक होने के लिये भगवान को प्रार्थना करने लगा था तब उसे महसूस हुआ था कि प्रार्थना करने में एक अनोखी शक्ति एक सुख भरी शांति का अहसास था जो कि उसने पूर्व में कभी भी महसूस नहीं किया था। उसके बेटे के ठीक होने के बाद वह नियम से घर के छोटे मंदिर के पास खड़ा होकर भगवान को प्रार्थना करता था और स्टेशन पर उतरकर कभी-कभी मंदिर में भी जाता था, जैसे अभी आया था, खास करके जब-जब उसकी जिंदगी में कोई मुश्किल घड़ी आती थी। तब घर वाले मंदिर में भगवान को प्रार्थना करता था।

वह कभी-कभी सोचता है कि उसका भगवान में अविश्वास का क्या हुआ? उसे प्रार्थना इतनी भाती क्यों है? क्या उसके स्वयं के मन में सही में भगवान है जिसे ताकत देने के लिये वह प्रार्थना करता है? वह उन सवालों का सही-सही जवाब तो नहीं ढूंढ पाया है पर भगवान और प्रार्थना से उसका लगाव अभी तक चलता आ रहा है।

गुरु अंगद देव

संवत 1561 की बात है।

जिला फिरोजपुर के एक गांव 'मत्ते की सराय' में फेरुमल नाम के एक खत्री रहते थे। उनकी किराने की दुकान थी। उनकी पत्नी दयाकुंवरि की कोख से वैशाख बदी प्रतिपदा को एक शिशु ने जन्म लिया। माता-पिता ने उसका नाम रखा लहणा। और यही लहणा अंगद देव के नाम से गुरु नानकदेव के बाद उनकी गद्दी पर बैठे। यह सिक्खों के दूसरे गुरु थे।

बालक लहणा बहुत ही सुन्दर थे। जो भी देखता था, वह देखता ही रह जाता था। जब वह बड़े हुए तो उनका स्वभाव भी उनके रूप की तरह सुन्दर सिद्ध हुआ। वह बहुत ही उदार और मिलनसार थे।

अभी वह छोटे से ही थे कि फेरुमल पर विपत्ति के बादल घुमड़ने लगे। वह गांव एक मुसलमान जागीरदार की जागीर में था। वह जागीरदार कट्टर मुसलमान होने के साथ-साथ बहुत ही क्रूर और अन्यायी भी था। जब भी उसे पता चलता कि उसकी जागीर के किसी गांव में रहने वाले हिन्दू के पास धन या कोई अच्छी कीमती चीज है, वह जबरदस्ती उससे छीन लेता था।

फेरुमल की दुकान तो छोटी सी थी, फिर भी उनका परिवार गांव में संपन्न परिवार माना जाता था। किसी ने जाकर जागीरदार से कह दिया कि फेरुमल के पास बहुत धन इक्टठा हो गया है। यह सुनते ही जागीरदार ने फेरुमल की धन-सम्पत्ति छीनने की योजना बना डाली।

लेकिन किसी तरह फेरुमल को जागीरदार की योजना का पता चल गया। वह उसी रात के अंधेरे में अपने परिवार और सारे धन को लेकर अपनी बहिन के घर चले गए। उनकी बहिन अमृतसर जिले के खडूर गांव में रहती थी। वहीं फेरुमल ने किराने की दुकान खोल ली और अपना कारोबार करने लगे।

फेरुमल दुर्गा माता के भक्त थे। वह जब भी चिन्तपूर्णी और ज्वाला देवी के दर्शन करने जाते थे, बालक लहणा को भी अपने साथ ले जाते थे।

इस प्रकार बचपन से ही लहणा के मन में दुर्गा मां के प्रति श्रद्धा भक्ति जाग गई थी। बड़े होकर वह भी अपने पिता की तरह हर वर्ष मां भगवती के दर्शन करने के लिये जाने लगे।

उन दिनों छोटी उम्र में ही विवाह हो जाते थे। इसी परम्परा के अनुसार संवत 157 6 में पन्द्रह सोलह वर्ष की आयु में ही लहणा का विवाह कर दिया गया।

खडूर में ही देवीचंद्र खत्री रहते थे। अच्छा खाता-पीता परिवार था। उनकी पुत्री खीवी बहुत ही सुधड़ और सुशील थी। लहणा का विवाह संवत 1576 में खीवी के साथ हो गया।

विवाह के बाद भी लहणा पूर्ववत अपने धार्मिक कार्यों और मां भगवती की अर्चना आराधना में लगे रहे। उनकी धार्मिक प्रवृत्ति में कोई अंतर नहीं आया। वह हर वर्ष अपने संगी-साथियों के साथ चिन्तपूर्णी और ज्वाला देवी की यात्रा पर जाते रहे।

विवाह के लगभग पांच संवत 1581 में लहणा की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम दासू रखा गया। उसके बाद बीबी अमरो बैदा हुई। इनके बाद दातू और बीबी अणोखी ने जन्म लिया।

बचपन से ही लहणा की प्रवृत्ति धार्मिक थी। पिता की मृत्यु के बाद वह कारोबार में लग तो गये थे। लेकिन उनका मन अशांत रहता था। मां भगवती के दर्शनों और पूजा आराधना के बाद भी उनके मन को सच्ची शांति नहीं मिल पाती थी। उनका मन किसी ऐसे गुरु की तलाश में भटकता रहता था, जो उन्हें वास्तविक शांति का मार्ग सुझा सके।

अपने सदव्यवहार और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण उन्हें खडूर निवासियों से आशा से अधिक स्नेह और सम्मान मिला था। लोग उन्हें चौधरी की उपाधि से संबोधित करने लगे थे। घर में किसी चीज की कमी नहीं थी, फिर भी उनका मन हर समय बेचैन बना रहता था।

अचानक एक दिन मुंह अंधेरे वह सोचकर उठे ही थे कि उनके कानों में संगीतमय सुरों में गुरु नानकदेव जी की वाणी पड़ी। गुरुजी की वाणी , उनका पड़ोसी जोधा गा रहा था। जोधा गुरु नानक का शिष्य था। वह मुंह अंधेरे ही बिस्तर छोड़ देता था और फिर नहा धोकर गुरु वाणी का पाठ किया करता था। गुरु वाणी के शब्द चौधरी लहणा के दिल की गहराइयों में उतरते चले गये। उसने जोधा के घर जाकर उससे

अचानक एक दिन मुंह अंधेरे वह सोचकर उठे ही थे कि उनके कानों में संगीतमय सुरों में गुरु नानकदेव जी की वाणी पड़ी। गुरुजी की वाणी , उनका पड़ोसी जोधा गा रहा था। जोधा गुरु नानक का शिष्य था। वह मुंह अंधेरे ही बिस्तर छोड़ देता था और फिर नहा धोकर गुरु वाणी का पाठ किया करता था। गुरु वाणी के शब्द चौधरी लहणा के दिल की गहराइयों में उतरते चले गये। उसने जोधा के घर जाकर उससे पूछा , ''यह तुम क्या गा रहे हो?''

''गुरुवाणी'' जोधा ने उत्तर दिया, गुरु नानक अक्सर शब्द द्वारा उपदेश देते हैं। मैं वहीं शब्द गा रहा हूं।

पूछा, ''यह तुम क्या गा रहे हो?''

''गुरुवाणी'' जोधा ने उत्तर दिया, गुरु नानक अक्सर शब्द द्वारा उपदेश देते हैं। मैं वहीं शब्द गा रहा हूं।

शब्द उसके और अर्थ ने चौधरी लहणा के अंतर में एक अपूर्व शांति भर दी। वह गुरु नानक के बारे में सोचने लगा। जिनका उपदेश इतना प्रभावशाली है, वह स्वयं कितने महान होंगे। उसका हृदय गुरु नानक के दर्शनों के लिये व्यग्र हो उठा। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वह गुरु नानक के दर्शन करने अवश्य जायेंगे। न जाने क्यों उनके मन में विश्वास की एक नई ज्योति जाग्रत हो उठी। उनके अशांत हृदय ने कहा, निःसंदेह गुरु नानक तुम्हारे अंतर मन की सारी बेचैनी और अशांति दूर कर देंगे।

बस उसी दिन से वह गुरु नानक के दर्शन के अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ दिनों बाद ही नवरात्रि आ गयी। हर वर्ष की तरह चौधरी लहणा और उनके साथी चिन्तपूर्णी और ज्वालादेवी की यात्रा की तैयारी करने लगे।

यह संवत 1589 की बात है। चौधरी लहणा की उम्र केवल 28-29 वर्ष ही थी। वह दो पुत्रों और दो पुत्रियों के पिता बन चुके थे। कारोबार और परिवार की समस्त जिम्मेदारियां उन्हीं के कंधों पर थीं। लेकिन विधि का विधान है- जो लोग समाज और जन-कल्याण के लिये इस धरती पर जन्म लेते हैं संसार के माया मोह के बंधन उनके बढ़ते हुए कदमों को जंजीर में नहीं बांध पाते हैं।

गुरु नानक उस समय उपदेश दे रहे थे। चौधरी लहणा भी एक ओर जा बैठे और बड़ी तन्मयता से सुनने लगे। गुरु नानकदेव के मुख से निकले हुए हर शब्द को सुनकर उन्हें ऐसा लग रहा था, वैसे उनके मन की अशांति इस तरह मिटती चली जा रही है, जैसे सुबह के सूर्य की हर किरण के साथ रात्रि का अंधकार दूर होता चला जाता है।

चौधरी लहणा अपने संगी साथियों के साथ देवी के दर्शनों के लिये खडूर से चल पड़े। वे लोग करतारपुर से गुजर रहे थे। कि एक स्थान पर लगी भीड़ को देखकर ठहर गये। पूछने पर पता चला, यह गुरु नानक के शिष्य हैं, जो अपने गुरु का उपदेश सुनने के लिये आये हुए हैं।

गुरु नानक उस समय उपदेश दे रहे थे। चौधरी लहणा भी एक ओर जा बैठे और बड़ी तन्मयता से सुनने लगे। गुरु नानकदेव के मुख से निकले हुए हर शब्द को सुनकर उन्हें ऐसा लग रहा था, जैसे उनके मन की अशांति इस तरह मिटती चली जा रही है, जैसे सुबह के सूर्य की हर किरण के साथ रात्रि का अंधकार दूर होता चला जाता है।

जब प्रवचन समाप्त हुआ तो चौधरी लहणा को ऐसा लगा जैसे उनके मन में अशांति कभी थी ही नहीं। वह अपने मन और तन को बहुत ही हलका महसूस कर रहे थे।

उन्होंने अपने संगी-साथियों से कहा कि वे देवी के दर्शन करने चले जाएं। वह यहीं रहेंगे। फिर जब वे लोग वापस लौटेंगे, वह उनके साथ गांव चले चलेंगे।

उनके संगी-साथी देवी दर्शन के लिये चले गये।

चौधरी लहणा ने गुरु नानक के चरण पकड़कर कहा, गुरुजी आज वर्षों भटकने के बाद आपके रूप में मुझे सच्चे गुरु मिले हैं। अब मैं आपकों छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। इन चरणों को छोड़कर मैं कभी कहीं नहीं जाऊंगा।

तुम यहीं रहो भाई लहणा, गुरु नानक नेउनके सिर पर स्नेह भरा हाथ फेरते हुए कहा, आज से लंगर की व्यवस्था तुम ही किया करोगे।

चौधरी लहणा उसी समय से भाई लहणा बन जाए। गुरु नानक के हाथों का स्पर्श पाते ही जैसे उनका काया पलट हो गया था।

जब गांव वाले संगी साथी देवी का दर्शन करके करतारपुर पहुंचे और उन्होंने भाई लहणा से घर चलने के लिये कहा तो उन्होंने साफ इंकार कर दिया।

निराश होकर उनके संगी-साथी खडूर लौट गए

भाई लहण की ईश्वर भक्ति को गुरू नानकदेव ने भांप लिया था। उन्हें भाई लहणा में केवल भक्ति ही नहीं सेवा और त्याग की भावना भी दिखाई दी। भाई लहणा ने अपनी सेवा, भावना और कर्तव्य निष्ठा से गुरू नानक को इतना प्रभावित कर लिया कि कुछ ही दिनों में वह उनके परमप्रिय शिष्य बन गए। वह भाई लहणा को बहुत चाहने लगे थे। उन्होंने मन-ही-मन अपनी गद्दी भाई लहणा को देने का निश्चय कर लिया था।

लेकिन उनकी पत्नी चाहती थीं कि वह अपने बड़े बेटे श्रीचंद को गद्दी दें। श्री चंद को भी यही आशा थी कि पिता के बाद वह गुरू गद्दी पर बैठेंगे। गुरू नानक अपनी पत्नी और पुत्रो की भावनाओं से अच्छी तरह परिचित थे। वह इनकार करके और भाई लहणा को गद्दी देने की घोषणा करके एक नई कलह को जन्म देना नही चाहते थे। इसलिए, अन्होंने सोचा कि वे भाई लहणा के कार्यो द्वारा ही अपनी पत्नी, पुत्रों और शिष्यों को यह बता देंगे कि गुरू गद्दी के योग्य भाई लहणा के अतिरिक्त और कोई नही है।

सर्दी की ठिठुरती हुई रात थी। इतनी कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी कि बिस्तर से निकल पाना कठिन था। भाई लहणा उसी कमरे के पास वाली एक कोठरी में सोया करते थे, जिस कमरे में गुरू नानक सोते थे। गुरू नानक के कमरे से लगा हुआ एक दूसरा कमरा था, जिसमें उनके दोनों पुत्र श्रीचंद और लक्ष्मीचंद सोया करते थे।

जब आधी रात बीत गई तो अचानक गुरू नानकदेव ने अपने दोनों पुत्रों को बुलाया और उनसे कहा, मेरे कपड़े बहुत मैले हो गए हैं। इन्हें नदी पर ले जाओ धोकर सुखा दो, मैं इन्हें

सुबह पहनूंगा।

पिता की सह बात सुनकर दोनों पुत्र हैरान रह गए। इतने कड़ाके की सर्दी में गर्म बिस्तर छोड़कर खुली बर्फीली हवा में निकलना और नदी तक जाना। और फिर नदी में उतर कर ठंडे पानी में कपड़े धोना, अपनी मौत को दावत देना था।

उन दोनों ने कहा, पिताजी, हमें नींद आ रही है। हम आपके कपड़े सुबह धो देंगे ।

गुरू नानकदेव प्रत्युत्तर में कुछ कहते , उससे पहले ही दोनों पुत्र अपने कमरे में चले गए और बिस्तर में जा सोये।

गुरू नानकदेव ने भाई लहणा को बुलाया।

आज्ञा दीजिए, गुरूजी भाई लहणा ने दोनों हाथ जोड़कर कहा। भाई लहणा, मेरे कपड़े बहुत मैले हो गए हैं। तुम इन्हें नदी पर ले जाओं और धोकर सुखा दो। मैं सुबह इन्हीं कपड़ों को पहनना चाहता हुं। जो आज्ञा, गुरूजी भाई लहणा ने कहा और कपड़े उठाकर नदी पर चले गए। उन्होंने खूब मल-मल कर कपड़े धोए और लौट कर सुखा दिए। सुबह स्नान करके गुरू नानक ने वही कपड़े पहन लिए।

जब दिन अच्छी तरह निकल आया तो श्रीचंद और लक्ष्मीचंद ने आकर कहा, पिताजी, कपड़े दे दीजिए, नदी पर धो लाएं।

गुरू नानक ने पहने हुए कपड़े दिखाते हुए कहा, नही कोई जरूरत नहीं, भाई लहणा ने रात को कपड़े धो कर सुखा दिए थे। ये कपड़े वही तो हैं।

गुरूनानक के आसपास बैठे हुए अन्य शिष्य हैरान रह गए। रात की कड़ाके की सर्दी का उन्हें पता था। ऐसी भयानक सर्दी में नदी के किनारे जाकर कपड़े धोने की कल्पना मात्र से उनके बदन का लहू ठंडा पड़ने लगा। भाई लहणा की सेवा भावना पर सभी दंग रह गए। श्रीचंद और लक्ष्मीचंद के चेहरे उतर गए। वह बिना कुछ कहे-सुने वहां से चल गए।

करतारपुर में गुरू नानक की जमीन थी। खेती-बाडी होती थी। गाय-भैंसें थी। गुरूजी ने अपने पशुओं की देख-भाल का काम भाई लहणा को सौंप दिया। और भी कई शिष्य थे, जो खेती-बाड़ी और पशुओं की देख - भाल करते थे।

एक बार कई दिन तक वर्षा होती रही। जब वर्षा बंद हुई तो चारों ओर कीचड़ हो गई। उस कीचड़ में कीचड़ से भरी घास लाना कोई आसान काम न था। पशुओं का चारा समाप्त हो गया था। फिर भी कोई शिष्य चारा लाने के लिए उस कीचड़ में जाने को तैयार नहीं था। क्योकि कीचड़ से भरा चारा सिर पर ढोने पर कीचड़ से लथपथ हो जाना निश्चित था।

जब भाई लहणा ने देखा कि कोई भी चारा लाने नही जा रहा, खुद ही चारा लाने चले गए। जब चारा लेकर लौटे तो उनके केवल कपड़े ही नही, सारा शरीर कीचड़ से लथपथ था। उन्हें इस बात का कोई दु:ख नही था। न चिन्ता थी। क्योंकि सेवा को उन्होंने अपना कर्म बना लिया था।

गुरू नानक के पास सैकड़ों की संख्या में उनके शिष्य रोजाना आते रहते थे। गुरूजी के उपदेश सुनते-सुनते दोपहर हो जाती थी सब लोग लंगर में भोजन करते थे।

एक बार नमक खत्म हो गया। जब भाई लहणा को पता चला तो वह खडूर चले गए और नमक की बोरी अपने सिर पर लादकर ले आए । उन्होने इस काम को करने में बिनकुल अपमान महसूस नही किया। जिस गांव के लोग चौधरी कहकर उन्हें सम्मानित करते थे, उसी गांव से नमक की बोरी सिर पर लादकर लाने में उन्हे रत्ती भर भी झिझक महसूस नही हुई।

एक दिन लंगर खत्म हो जाने के बाद गुरू नानक के कुछ शिष्य वहां पहुंचे। वे लोग बहुत दूर से चलकर आये थे। भूखे थे। उधर लंगर समाप्त हो चुका था।

गुरू नानक ने अपने दोनों पुत्रों को बुलाया। सामने खड़े कीकर के एक पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, तूम दोनों उस पेड़ पर चढ़ जाओ और इसकी डालियों को जोर-जोर से हिलाओ। कुछ लोग बहुत दूर से चलकर आए हैं। भूखे हैं बेचारे। इन्हें भोजन कराना हमारा धर्म है। जब तुम कीकर की डालियों को हिलाओगे, तरह-तरह की मिठाइयां टपकेंगी। उन्हें इन लोगों को खिला देना ।

गुरू नानक ने अपने दोनों पुत्रों को बुलाया। सामने खड़े कीकर के एक पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, तूम दोनों उस पेड़ पर चढ़ जाओ और इसकी डालियों को जोर-जोर से हिलाओ। कुछ लोग बहुत दर से चलकर आए हैं। भूखे हैं बेचारे। इन्हें भोजन कराना हमारा धर्म है।

पिता की बात सुनकर दोनो पुत्र आश्चर्य से उनका मुंह देखते रह गए। पेड़ से और वह भी कीकर के पेड़ से मिठाइयां, भला कैसे टपक सकती हैं। पिताजी अकारण ही उनका [illegible] नाक उड़वाना चाहते हैं। -दोनो पुत्रों ने सोचा और चुपके से [illegible] गए।

गुरू नानक ने अपने अन्य शिष्यों से भी यही कहा। लेकिन कोई भी तैयार नहीं हुआ। सब लोग यही सोच रहे थे कि गुरूजी उन्हें बेवकूफ बनाना चाहते हैं।

लेकिन भाई लहणा को गुरूजी पर अगाध श्रद्धा थी, अडिग विश्वास था। भाई लहणा उठे और कीकर के पेड़ पर जा चढ़े। और फिर उन्होंने पेड की डालियां हिलानी शूरू कर दी। दूसरे ही पल वहां मौजूद लोगों की आंखे आश्चर्य से फटी रह गई। कांटों से भरे कीकर के पेड़ से तरह-तरह की स्वादिष्ट मिठाइयां टपक रही थीं। उन्होने पेड़ से उतर कर मिठाइयां इकट्ठी की और आये हुए शिष्यों को खिला दीं।

भाई लहणा के मन में गुरूजी के किसी भी शब्द के प्रति अविश्वास का नामों-निशान तक नहीं था। वह उनकी वाणी को प्रथम वाक्य समझते थे।

● एक दिन गुरूजी के कमरे में एक चूहा मर गया। उसकी बदबू सारे कमरें में फैल गई। गुरूजी ने अपने दोनों पुत्रों और शिष्यों को बुलाकर कहा, इस मरे चूहे को उठाकर कहीं दूर फेंक आओ।

मरे हुए चूहे में से इतनी बदबू आ रही थी कि कमरे में खड़े रह पाना कठिन हो रहा था उसे उठाने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ।

गुरूजी ने पशुओं की देख भाल में लगे भाई लहणा को बुलाया।

आज्ञा गुरूजी भाई लहणा ने दोनों हाथ जोड़कर पूछा।

भाई लहणा इस मरे हुए चुहे को उठाकर आबादी से दूर फेंक आओ, गुरू नानक ने आदेश दिया।

जैसी आज्ञा भाई लहणा ने कहा और चूहे की दुम पकड़ कर उसे उठा लिया और दूर जंगल में जाकर छोड़ आए। गुरू की आज्ञा के सामने उन्होंने मरे चूहे से आती हुई बदबू की और कोई ध्यान नहीं दिया ।

● एक दिन गुरू नानक ने जानबूझ कर अपना कांसे का कटोरा कीचड़ से भरे एक गड्ढे में फेंक दिया। और फिर अपने पुत्रों तथा शिष्यों को एक-एक कर आदेश दिया कि वे गड्ढे में घुस कर कटोरा निकाल लाएं। गड्ढे में घुटनों से भी ऊपर तक की कीचड़ भरी हुई थी। सब लोग कोई न कोई बहाना बनाकर खिसक गए। क्योंकि कोई भी कीचड़ से भरे गड्ढे में घुसकर अपने कपड़ों और अपने शरीर को कीचड़ से लथपथ नहीं करना चाहता था।

अन्त में गुरू नानक ने भाई लहणा को आदेश दिया कि वह उस कटोरे को निकाल लाये।

भाई लहणा तत्काल गड्ढे में उतर गए और कटोरा निकाल लाए। उन्हें इस बात की रत्तीभर भी चिन्ता नहीं हुई कि कीचड़ उनके शरीर से लिपट जाएगी और उनके कपड़े कीचड़ से भर जायेंगे। उनके लिए तो गुरू का आदेश ही सर्वोपरि था।

● गुरू नानक समाधि लगाए अपनी गद्दी पर बैठे थे। सामने अनेक शिष्य बैठे उनकी समाधि के भंग होने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अचानक गुरू नानक ने आंखें खोलीं। एक नजर सामने बैठे शिष्यों पर डाली और फिर पास ही अपना डंडा उठा और पागलों की तरह शिष्यों पर टूट पड़े। जो भी सामने आया, उसी पर डंडे बरसाने लगे।

उनकी रौद्र मूर्ति और पागलों जैसी हरकत देखकर उनके दोनों बेटे और शिष्य सिर पर पांव रखकर भाग गये लेकिन भाई लहणा वहीं खड़े रहे। और गुरू नानक के डंडों की मार बड़े शान्त भाव से सहन करते रहे।

● गुरू नानक भाई लहणा को गुरू गद्दी सौंपने का निश्चय उसी दिन कर चुके थे, जिस दिन वह कड़कती सर्दी में नदी से उनके कपड़े धोकर लाए थे और उसके बाद से गुरू नानक के कपड़ों को धोने की जिम्मेदारी भी गुरू के बताए हुए अन्य कामों के साथ ले ली थी।

गुरू नानक ने उनकी अनेक परीक्षाएं ले डाली थी फिर भी उन्होंने सबसे अधिक भीषण परीक्षा लेने का निश्चय कर लिया। वह कुछ देर तक पागलों जैसी हरकतें करते रहे और फिर उठकर जंगल की और चल दिए।

उनकी पागलों जैसी हालत देखकर बहुत से कुत्ते उनके पीछे लग गए। लेकिन गुरू नानक अपने डंडे से उन्हें धमकाते हुए जंगल की ओर बढ़ते रहे।

यह देखकर उनके कुछ शिष्य और दोनों पुत्र भी उनके पीछे-पीछे चल दिए। उन शिष्यों में भाई लहणा भी शामिल थे।

चलते-चलते गुरू नानक श्मशान पहुंचकर और धरती पर कफन से ढके एक मुर्दे के पास पहुंचकर रूक गए।

वह बड़े ध्यान से उस मुर्दे को देख ही रहे थे कि उनके दोनों पुत्र और शिष्य भी उनके पास पहुंच गए।

तुम लोग बहुत दूर से मेरे पीछे-पीछे आ रहे हो। दोपहर का वक्त है, भोजन का समय हो चुका हैं। तुम लोगों को भूख भी लगी होगी। तुम्हें आज बहुत ही स्वादिष्ट चीज खिलाता हूँ।

यह कहकर उन्होंने मुर्दे की और उंगली उठाई और अपने पुत्रों तथा शिष्यों की और देखते हुए बोले, इसे खाओ।

गुरू नानक की बात सुनकर सब लोग सन्नाटे में रह गए,कितना विचित्र और भयानक था गुरू का आदेश। गुरू नानकदेव के दोनों पुत्रों और शिष्यों ने घृणा से अपने मुंह फेर लिए और वहां से खिसकने लगे।

लेकिन भाई लहणा आगे बढ़े और उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर पूछा, गुरूजी इस मुर्दे को किस और से खाना शुरू करूं? सिर की और से या पैरों की और से?

गुरू नानकदेव ने आज्ञा दी पैरों की ओर से खाना शुरू करो।

जो आज्ञा! भाई लहणा ने कहा और मुर्दे के पैरों के पास जा बैठे। उनके मन में न घृणा थी, न कोई परेशानी थी।

उन्होंने हाथ बढ़ाकर मुर्दे के ऊपर से कफन हटा दिया।

दूसरे ही पल सब लोग आश्चर्यचकित रह गए । कफन के नीचे कोई मुर्दा नहीं था। वह सफेद चादर धरती पर इस तरह पड़ी थी जैसे उससे किसी लाश को ढक दिया गया हो।

गुरू नानक के चेहरे पर अनुराग भरी मुस्कुराहट नाच उठी। आंखें स्नेह से चमक उठीं। उन पर छाया हुआ पागलपन समाप्त हो गया। वह सामान्य स्थिति में आ गए।

गुरू नानक ने आगे बढ़कर भाई लहणा को अपनी बांहो में भरकर अपने सीने से लगा लिया और स्नेह भरे स्वर में बोले, ''पुरखे आज से तुम्हारा नाम भाई लहणा नहीं, अंगद देव हैं।'' ''मैंने तुम्हें अपने अंग से लगा लिया है।'' अब तुम मेरे ही प्रतिरूप हो।

इस घटना के कुछ दिनों बाद ही गुरू नानकदेव ने महसूस किया कि अब अकाल पुरूष का बुलावा आ गया है। उन्हें बहुत शीघ्र इस संसार से जाना होगा।

उन्होंने अपने तमाम शिष्यों को निमंत्रण भेज दिए कि वे 17 आषाढ़ संवत् 1596 को करतारपुर में जरूर पहुंचे।

उनका आदेश पाते ही उनके शिष्य करतारपुर की ओर चल दिए। अन्त में वह शुभ दिन आ गया।

● गुरू नानकदेव का दरबार उस दिन विशेष रूप से सजाया गया था। लेकिन यह कोई नहीं जानता था कि इस धूमधाम का कारण क्या है।

जब दरबार खचाखच भर गया तो गुरू नानकदेव ने भाई अंगद देव का हाथ पकड़ कर उन्हें अपनी गद्दी पर बैठा दिया और पांच पैसे तथा एक नारियल भेंट चढ़ाकर उन्हें गुरूपद का भार ग्रहण करने का आदेश दिया।

फिर उन्होंने संगत को सम्बोधित करते हुए कहा, आज से भाई अंगद देव आप सबके गुरू हैं। आज से आप इन्हीं के आदेशों का पालन करेंगे। इनकी कर्तव्यपरायणता आप लोगों ने देखी हैं। इनकी उस कर्तव्यपरायणता, और सेवा की भावना को देखते हुए ही मैंने अपना भार इन्हें सौंपा है।

संगत ने गुरू अंगद देव की जय- जयकार से धरती आकाश गुंजा दिए। लेकिन उनके पुत्रों को अपने पिता का निर्णय पसन्द नहीं आया। उनके बड़े पुत्र श्रीचंद ने उसी समय घर छोड़ दिया और उदासीन सम्प्रदाय की नींव डाली।

● गुरू नानकदेव ने गुरू अंगद देव से कहा कि वह खडूर वापस चले जायें और वहीं रहकर उनके विचारों और सिद्धान्तों का प्रचार करें।

गुरू नानकदेव का आदेश पाकर गुरू अंगद देव खडूर वापस आ गए। खडूर में गुरू अंगद देव की बुआ रहती थी, उनका नाम माई मिराई था। अपने गुरू का आदेश पाकर, गुरू अंगद देव खडूर आ तो गए लेकिन अपने घर के बजाए अपनी बुआ के मकान में रहने लगे। वह सारे दिन एक कोठरी में रहते और अकाल पुरूष का नाम स्मरण करते रहते। तीन महीने बाद, जब उन्हें गुरू नानकदेव के स्वर्गारोहण का समाचार मिला तो वह उस कोठरी से निकलकर बाहर आ गए।

गुरू नानकदेव के शिष्यों ने उनसे अनुरोध किया कि अब वह उनका मार्गदर्शन करें। गुरू अंगद देव ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया और बाकायदा दरबार लगाकर आगन्तुक व्यक्तियों को उपदेश देने लगे।

गुरू अंगद देव के हृदय में आरम्भ से ही सेवा, विनम्रता ओर उदारता कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके अन्दर से निकलने वाले शब्द इतने प्रभावशाली होते थे कि जो भी सुनता था उनका अनुयायी बन जाता था।

उन्होंने सबसे पहला और महान कार्य यह किया कि गुरू नानकदेव के शब्दों की लिपिवद्ध कराकर उन्हें संग्रहीत किया। इस प्रकार वे शब्द हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो गए। इन्हीं शब्दों को बाद में गुरूग्रन्थ साहब में समाहित कर लिया गया।

गुरू अंगद देव की वाणी में ओज था। उनके विचारों में प्रभाव और शक्ति थी। गुरू नानकदेव की तरह वह भी अपने शिष्यों को शब्द के माध्यम से ही उपदेश देते थे। उनके रचे हुए 63 शब्द गुरू ग्रन्थ साहब में शामिल हैं।

गुरू अंगद देव की वाणी में विचित्र प्रभाव था। वह सीधे-सादे शब्दों में अपने अनुयायियों को ईश्वर भक्ति का उपदेश देते थे। यही नहीं,वह अपने अनुयायियों को यह भी बताया करते थे कि उन्हें प्रभु की पूजा-आराधना करते हुए अपना सांसारिक जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिए।

वह कहा करते थे- मनुष्य जो दूसरों को देता है, वहीं उसे प्राप्त होता है। उसे अपने कर्मो के द्वारा ही स्वर्ग या नरक में स्थान मिलता है।

गुरू अंगद देव की दृष्टि में कर्म ही महत्त्वपूर्ण था। अपने विचारों के कारण, वह बहुत जल्द लोक-प्रिय हो गए। दूर-दूर से लोग उनके उपदेश सुनने खडूर पहुंचने लगे। गुरू नानक की भांति उन्होंने भी हिन्दू समाज में फैली कुरीतियों और धर्म के नाम पर फैले हुए पाखंड का विरोध किया। उन्होंने अपने अनुयायियों को इन पाखंडों से दूर रह कर सीधा-सादा, स्नेह और भाई-चारे से भरा जीवन बिताने का उपदेश दिया।

गुरू अंगद देव की प्रभावशाली वाणी और ओजस्वी रूप ने लोगों को हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियां और धार्मिक पाखंडों से मुक्त होने की प्रेरणा दी। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दू धर्म में फैली बुराइयां बड़ी तेजी से समाप्त होती चली गई।

गुरू अंगद देव ने दो महान कार्य किए। एक तो उन्होंने लंगर की नियमित परम्परा स्थापित की। सभी वर्णो और जातियों के लोग लंगर में साथ-साथ बैठकर भोजन किया करते थे। लंगर की इस परम्परा ने ऊंच-नीच और जाति पंति के भेद को मिटाकर सभी मनुष्यों को एक सूत्र में बांधने का महान कार्य किया।

वह कहा करते थे- जब तक मनुष्य का शरीर स्वस्थ नहीं होगा, उसके मन में स्वस्थ यानी सुन्दर विचार पैदा ही नहीं हो सकेगे। दुर्बल होने पर, न तो वह समाज की कोई सेवा कर सकेगा और न दीन-दु:खियों की सहायता। इसलिए,उन्होंने गांव-गांव में अखाड़े की स्थापना की और अपने अनुयायियों से आग्रह किया कि वे जिस प्रकार नियमित रूप से भगवान की आराधना करते हैं, उसी प्रकार नियमित रूप से व्यायाम भी किया करें। सिक्खों में चलकर युद्ध-कला और वीरता की जो भावना पैदा हुई, वह इन अखाड़ों की ही देन थी।

● गुरू अंगद देव की बढ़ती हुई ख्याति को देखकर,खडूर में ही रहने वाला एक साधु उसने ईर्ष्या करने लगा। क्योंकि गुरू अंगद देव के कारण लोगों ने उसके पास आना-जाना कम कर दिया था, जिसके कारण उस पाखंडी का धन्धा मन्दा हो गया था। वह रात-दिन यही सोचता रहता था कि गुरू अंगद देव को खडूर से कैसे निकाला जाए।

एक वर्ष वर्षा बिलकुल नहीं हुई। चारों और जबरदस्त सूखा पड़ गया। खेतों में फसल नहीं हुई। पेड़ों के पत्ते और घासें सूख गई । पशुओं के लिए चारा नहीं रहा।

कुछ लोगों ने जाकर उस साधु से दर्षा न होने का कारण पूछा। उस साधु का नाम मलूके था।

मलूके ने आंखें मूंदी और कुछ देर खामोश बैठा रहा। फिर अपनी लाल -लाल आंखे नचाते हुए बोला, इस गांव में धर्म का लोप हो गया है। सारे गांव वाले अधर्मी बन गए हैं।

वह कैसे?

एक गृहस्थ आदमी की पूजा करना अधर्म नहीं हैं, तो और क्या हैं? साधु ने कहा।

गांव वाले कुछ देर खामोश बैठे रहे फिर उन्होंने पूछा, महाराज, इस संकट से उबरने को कोई उपाय बताइए।

जब तक अंगद देव इस गांव में हैं, वर्षा नहीं होगी। उसे गांव से निकाल दो। जब वह गांव से चला जायेगा, वर्षा होने लगेगी।

किसी तरह यह बात गुरू अंगद देव के कानों तक पहुंच गई। उन्होंने कहा- यदि मेरे यहां रहने पर गांव वालों पर कोई संकट आता है तो मुझे लोगों की भलाई के लिए गांव छोड़ देना चाहिए।

• और एक रात वह चुपके से खडूर छोड़कर तुड़ नामक गांव में चले गए। कुछ दिन ही वह तुड़ मे रह पाए थे कि छपरी गांव के कुछ लोग आये और गुरू अंगद देव को अपने गांव में ले गए। गुरूजी ने कुछ दिन छपरी गांव में निवास किया और फिर भरोवाल चले गए।

गुरू अंगद देव खडूर छोड़कर चले गए, लेकिन वर्षा नहीं हुई। जब कई महीने बीत गए तो गांव वाले उस साधु के पास पहुंचे और उससे पूछा कि गुरू अंगद देव खडूर छोड़कर चले गए, फिर भी अभी तक वर्षा क्यों नहीं हुई?

साधु ने अपनी सफलता पर एक जोरदार ठहाका लगाया। और उसके ठहाके ने उसकी पोल खोल दी। लोग समझ गए कि इसने जलकर गुरू अंगद देव को गांव से निकालने की यह साजिश की थी।

गांव वालों को उसकी धूर्तता पर क्रोध आ गया और उन्होंने उसे पीट-पीटकर अधमरा कर दिया और भरोवाल चले गए।

उन्होंने गुरू अंगद देव दुर्व्यवहार के लिए क्षमता याचना की। गुरू अंगद देव का हृदय बहुत ही उदार था। उनके मन में किसी के लिए कोई बुरी भावना नहीं थी। वह गांव वालों के साथ खडूर लौट आए।

• गुरू नानकदेव के जमाने में बाबर ने भारत पर आक्रमण करके दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया था और फिर उसकी सेनाएं बिहार तक के प्रदेश को जीतती चली गई थीं।

बाबर की मृत्यु के ..द उसका पुत्र हुमायूं दिल्ली के सिंहासन पर बैठा, लेकिन वह शेरशाह सूरी की सेना का सामना न कर पाया और दिल्ली छोड़कर काबुल की ओर चल दिया।

रास्ते में उसे पता चला कि पास के ही खडूर गांव में सिक्खों के गुरू अंगद देव रहते हैं। वह गुरूनानकदेव के सम्बन्ध में अपने पिता बाबर से बहुत कुछ सुन चुका था। और गुरू अंगद देव की ख्याति भी उसके कानों तक पहुंच चुकी थी। उसने अपने साथियों से कहा कि वे खडूर की और अपने घोड़ों का रूख मोड़ दें। वह गुरू अंगद देव से मिलकर आगे बढ़ेगा।

हुमायूं की बची-खुची सेना जिसमें गिने चुने सैनिक ही रह गए थे, खडूर की ओर चल पड़े।

जिस समय हुमायूं खडूर पहुंचा, गुरू अंगद देव समाधि में थे।

हुमायूं उस कोठरी में चला गया, जहां गुरू अंगद दे[illegible] समाधि लगाए बैठे थे। हुमायूं काफी देर तक चुपचाप ख[illegible] रहा। उसे विश्वास था कि जब गुरू अंगद देव को पता चले[illegible] कि दिल्ली का मुगल हुमायूं उनसे मिलने आया है तो व[illegible] अपनी समाधि भंग कर देंगे। लेकिन गुरू अंगद देव ने अप[illegible] समाधि भंग नहीं की।

काफी देर हो गई। हुमायूं क्रुद्ध हो उठा। यह उसका एक मुगल शहंशाह का अपमान था। सिक्खों के गुरू अंग[illegible] देव ने उसका पुरजोर स्वागत करना तो दूर- आंख उठाक[illegible] उसकी और देखा तक नहीं था।

उसने क्रोध से दांत पीसते हुए अपनी तलवार म्यान मे[illegible] निकाल ली।

तभी गुरू अंगद देव ने मुस्कुराते हुए आंखें खोल दीं और बहुत ही मधुर स्वर में बोले,समचुम तुम बहुत बहादुर हो बादशाह। तुम्हारी यह तलवार उस समय कहां चली गई थी, जब तुम शेरशाह सूरी के साथ युद्ध कर रहे थे। आज उसी तलवार को तुम एक फकीर पर उठा रहे हो। क्या अपनी पराजय की झुंझलाहट एक फकीर पर निकालना चाहते हो।

गुरू अंगद देव की बात सुनकर हुमायूं शर्मिन्दा हो गया। उसने अपनी तलवार म्यान में रख ली। शर्म से उसका सिर झुक गया था। कुछ देर वह किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा रहा और फिर गुरू अंगद देव के चरणों में गिर कर बोला, मुझे माफ कर दीजिए गुरूजी। मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई है।

गुरू अंगद देव ने हुमायूं को उठाया और उसी शान्त,संयत और मधुर स्वर में बोले, मैं तुम्हें क्षमा करता हूं बादशाह मैं जानता हूं कि तुम मेरे पास क्यों आए हो। जाओ तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी, तुम्हें अपना खोया राज्य फिर मिल जायेगा। लेकिन भविष्य में ऐसी गलत कभी मत करना। जो बादशाह संकट के समय भी अपना संयम नहीं खोता, विवेक नहीं खोता, उसे पराजय का मुंह कभी नहीं देखना पड़ता।

हुमायूं ने सिर झुकाकर गुरू अंगद देव को प्रणाम किया और अपने साथियों के साथ वहां से चल पड़ा।

गुरू अंगद देव के आशीर्वाद से कुछ समय बाद उसने सेना इकट्ठी करके दिल्ली पर आक्रमण किया और शेरशाह सूरी के पुत्र सलीमशाह सूरी को पराजित करके अपना राज्य पुन:प्राप्त कर लिया।

गुरू अंगद देव खडूर से बाहर कहीं नहीं गए। कभी-कभी वह गोयन्दवाल जरूर जाते रहते थे जहां,भाई अमर दास रहते थे।

सिंधू महक परिवार के सम्माननीय सदस्यों को जन्मदिवस की हार्दिक बधाई

श्री घनश्याम दास शेवानी
जन्म दिन- 1 अप्रैल
LIG-53, टीलाजमालपुरा, भोपाल

श्री जय आहूजा
जन्म दिन- 2 अप्रैल
रायल शूज, न्यू मार्केट, भोपाल



श्री जगदीश कुमार बसंतानी
जन्म दिन- 2 अप्रैल
शांति नगर, बैरसिया रोड, भोपाल



श्री ठाकुरदास आर. जेठवानी
जन्म दिन- 4 अप्रैल
ओम डिपार्टमेंटल स्टोर, जरीपटका, नागपुर



श्री उधाराम के. होतचंदानी
जन्म दिन- 5 अप्रैल
100, वनट्री हिल्स कॉलोनी बैरागढ़

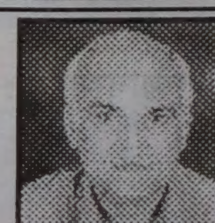
श्री प्रदीप कुमार बजाज
जन्म दिन- 8 अप्रैल
नवीन ट्रेडिंग क. कृष्णा प्लाजा काम्प. बैरागढ़



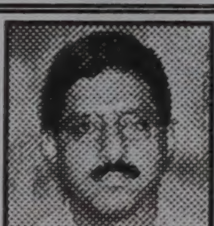
श्रीमती सती खिलनानी "सखी"
जन्म दिन- 13 अप्रैल
के. जी. 1/57, विकासपुरी नई दिल्ली



श्रीमती किरण वाधवानी
जन्म दिन- 14 अप्रैल
न्यू बी-16/68, बैरागढ़



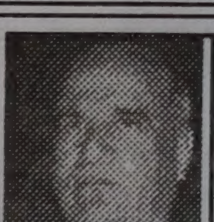
श्री मंघाराम टेकवानी
जन्म दिन- 15 अप्रैल
शक्ति क्लॉथ स्टोर, दुर्गा चौक, मंडीदीप



श्री किशोर ओचानी
जन्म दिन- 16 अप्रैल
जया जनरल स्टोर, राजस्थान भवन मार्केट, कटनी

श्री प्रकाश आसवानी
जन्म दिन- 17 अप्रैल
प्रकाश प्लाईवुड, आरा मशीन के पास, बैरागढ़

श्री रमेशलाल दुल्हानी
जन्म दिन- 19 अप्रैल
गणेश जनरल स्टोर, आशीर्वाद मार्केट, कटनी



श्री वासदेव मोतियानी
जन्म दिन- 19 अप्रैल
निर्मल नर्सरी कम्पाउंड, बैरागढ़

श्री प्रमोद गिदवानी
जन्म दिन- 20 अप्रैल, बैट्री हाउस, देहली
इंटरप्राइजेज, तेलीपुरा सीताबर्डी, नागपूर

श्री संजय मनवानी
जन्म दिन- 26 अप्रैल, मेडी मार्केटिंग,
मेडीकल स्ट्रीट, घोड़ा नक्कास, भोपाल

श्री रवि ग्वालानी
जन्म दिन- 26 अप्रैल
गंगा हार्डवेयर, मलिक मार्केट, भोपाल

सिंधू महक

(प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका)

कार्यालय : न्यू बी-4, द लॉयन सिटी परिसर, संत लीलाशाह मार्ग, बैरागढ़ भोपाल- 462030
फोन: 0755-5244892, 5244892, मोबाईल : 9826313045
निवास : एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, बैरागढ़, भोपाल-462030

कृपया अपना फोटो यहाँ पर चिपकायें।

सदस्यता हेतु आवेदन

वार्षिक शुल्क	आजीवन शुल्क
100 रू.	1100 रू.

प्रति,

महाप्रबंधक (प्रसार)
सिंधू महक

विषयः- सदस्यता प्रदान करने बावत्।

महोदय,

मैं **सिंधू महक** मासिक पत्रिका का नियमित सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। जिसके लिए आवश्यक धनराशि रू .... का भुगतान नगद / डिमान्ड ड्राफ्ट/ मनी आर्डर चैक क्र............................ के द्वारा भेजा जा रहा है।

मेरा पता निम्नानुसार हैः-

1. नाम ....
2. जन्म दिनांक ....
3. डाक का पूरा पता ....
   ग्राम .... जिला .... प्रदेश .... पिन कोड ....
4. फोन नं. .... मोबाइल नं. .... फैक्स नं. ....
5. ड्राफ्ट/ मनी आर्डर / चैक क्र. .... दि. .... धनराशि ....

नोट :- 1. ड्राफ्ट / मनी आर्डर / चैक सिंधू महक के नाम से भेजें। 2. फार्म हिन्दी में ही स्वच्छ अक्षरों में भरें।

सिंधू महक
कार्या.: न्यू बी-4, द लॉयन सिटी परिसर, संत लीलाशाह मार्ग, बैरागढ़
पिनकोड-462030
फोन : 5244892
मोबा. : 9826313045
नि.: एफ-5 श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, बैरागढ़

श्री .... को सिंधू महक का वार्षिक सदस्य बनाकर रूपये .... प्राप्त किये सधन्यवाद।

प्राप्तकर्ता का नाम ....
पद ....
दिनांक .... स्थान ....

हस्ताक्षर


ताजगी, स्फूर्ति का नया अहसास
DAVE'S
REAL™
Gold
TEA
Really Your Best Choice
Packed by :
DJ
DAVE JYOTI TEA ESTATE
Catagridse Market Bhopal (M.P.) Ph. : 0755-5254688


REAL
AGMARK
Lal Mirch Powder
EXPORT QUALITY
REAL
SAUNTH POWDER
REAL
SAMBAR MASALA
REAL
CHAT MASALA
With best compliments from
★ जलजीरा पाउडर
★ चना मसाला
★ चाट मसाला
★ काश्मीरी मसाला
★ गरम मसाला
★ साम्भर मसाला
★ पावभाजी मसाला
★ सौंठ पाउडर
★ ब्लैक पीपर
★ रायता मसाला
★ हल्दी ★ मिर्च
★ धनिया
फोन-2738405
3133473
S.B. TRADERS
57, Mangalwara Road
Bhopal (M.P.)
Tel. : 0755-5254798,
9827093728
Sharad Kukreja
अनिल कुमार एण्ड ब्रदर्स
हनुमानगंज, भोपाल (म.प्र.) फोन-2738405